वर्ष-25 फाल्गुन-चैत्र मार्च 2020 अंक-3 मासिक प्रकाशन
आर.एन.आई.नं. 0048570/29/30/982
प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं. एस.डी.08/2018-2020
मूल्य 10/- रुपये

मासिक

आगमोद्धारक

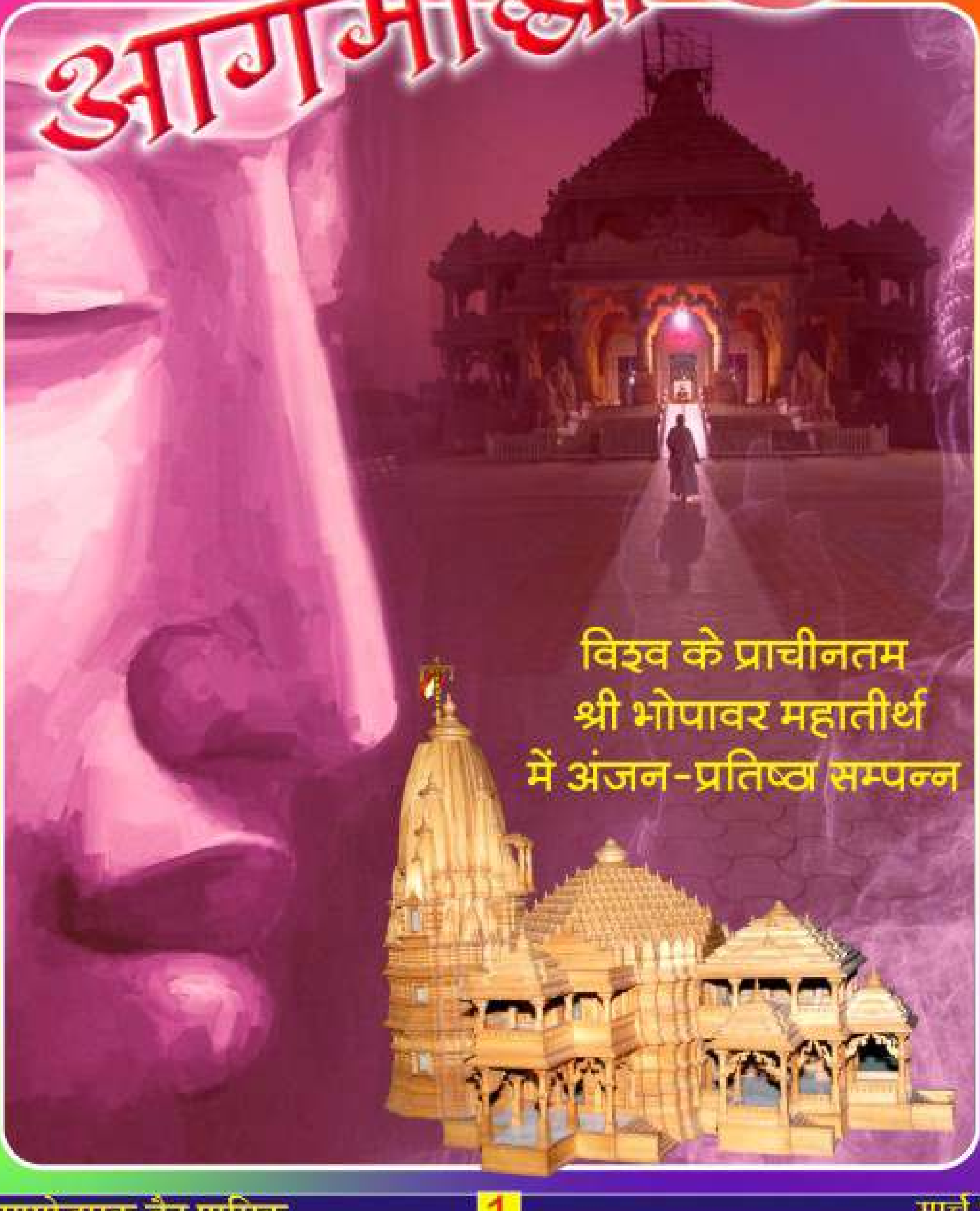

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

✻ गुरु ही कर्म और गुरु ही मर्म है, बिना गुरु के कुछ भी नहीं है। तभी तो हृदय में गुरु ही गुरु बसे हैं, गुरु ही वन्दना और गुरु ही मनन हैं। गुरु ही चिंतन और गुरु ही वंदन है, गुरु ही चंदन और गुरु ही नंदन है। तभी तो सब करते गुरु का अभिनंदन है....

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

मा गलियस्सेव कसं, वयणमिच्छे पुणो पुणो।
कसं व दट्ठुमाइण्णे, पावगं परिवज्जए॥

जैसे दुष्टघोड़ा बार-बार चाबुक की अपेक्षा रखता है, वैसे विनीत शिष्य बार-बार अनुशासन की अपेक्षा न रखे, गुरु को बार-बार कहने का अवसर न दे। जिस प्रकार विनीत घोड़ा चाबुक को देखकर ही उन्मार्ग को छोड़ देता है, उसी प्रकार विनयवान शिष्य गुरुजनों की दृष्टिको देखकर पाप का, पापमय पथ का, दूषित मार्ग का त्याग कर देता है। **-उत्तरा. सूत्र, 1.12**

पाथेय

वर दो हे प्रभु कि मैं हो सकूं एक अग्नि शिखा के समान, जो प्रकाश देती है और उष्मा से भरपूर है। हो सकूं एक शीतल झरने के समान, जो विश्व की तृष्णा करता है शान्त, और एक वृक्ष की भांति दे सकूं सुरक्षा की छांव। ओह मनुष्य कितने व्यथित और अज्ञान है। उन्हें आवश्यकता है एक महत् सहायकता की। स्वामी तुमने मेरा विश्वास एवं निर्भरता अब, हो रहे है दिन पर दिन अधिक दृढ़ एवं पुष्ट। मेरे हृदय में तुम्हारे प्रेम का प्रकाश हो रहा है अधिक उज्जवल एवं भरपूर और अब मैं तुम्हारे और अपने व्यक्तित्व के बीच, कहूं सम्पूर्ण पृथ्वी के बीच नहीं खींच सकती कोई विभेद की रेखा प्रभु, तुम्हारा प्रेम अनन्त है, अनुपम है तुम्हारा सत्य, और तुम्हारा शक्तिशाली प्रेम ही करेगा इस विश्व की रक्षा।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-25 फाल्गुन-चैत्र मार्च 2020 अंक-3

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- गुरु-शिष्य ने विराट सर्जन का इतिहास रचा (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन यात्रा करें ! वन्दन करें ! स्तुति करें !	5-6
4- लोक भावना: भव भ्रमण का विवेक- आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तम सूरीश्वरजी म.	7
5- श्री शत्रुंजय गिरिराज के 108 नाम	8-9
6- आध्यात्मिक पहाड़े- श्रीमती प्रभा जैन, परमात्म पूजा जैन आगमों में	10
7- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा.,	11-12
8- मैं सुभूम -श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.	13-14
9- बिटिया रानी...!, पू.आ.श्री जितरत्नसागरसूरीजी ''राजहंस''	15-16
10-पू.आ.दे.श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा एक जीवन परिचय	17
11-मेवाड़ उद्धारक दानवीर भामाशाह : कुछ तथ्य-डॉ. दिलीप धींग	18
12-गुरु के जन्म से हुआ मेरा जन्म सार्थक- डॉ. सुभाष जैन	19
13-चौदह पूर्व का सार महामंत्र नमस्कार	20
14-जैन कथा साहित्य में भगवान श्री शांतिनाथ दादा का चरित्र-आ.श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म., श्रावक के 21 गुण, राजगृही की आन बान व शान	21-23
15-संकल्प-सुमेरु आचार्यश्री-डॉ. सुभाष जैन	24
16-पूर्वजन्म की यात्रा का सत्य..... मुनि श्री किशनलाल, पूर्णत्व का सौदर्य पहले खुद सुधरे फिर.... (लघु कथा)- एस.सी.कटारिया	25-26
17-आगमोद्धारक भविष्य फल- मार्च-2020- अनु दीपक जैन	27
18-वर्गपहेली- 300 - जयंतीलाल जैन	28
19-ज्ञान गंगोत्री- 300- पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म.,	29
20-शासन-समाचार	30-41
21-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है।	42

संपादकीय

गुरु-शिष्य ने विराट सर्जन का इतिहास रचा

इस दुनिया में जब भी कोई इसान जन्म लेता है तो संसार में असली पहचान के लिये उसका नामांकरण किया जाता है फिर जिंदगीभर वह उसी नाम से जाना जाता है, पहचाना जाता है लेकिन इस देश दुनिया में कुछ विरले ही लोग हुए है जो अपनी पहचान का चोला फूंक कर खुद ही अपनी पहचान इस संसार में बनाते हैं। ऐसा करना सबके बस की बात नहीं है, मैं यहां एक ऐसे संत के संतत्व की बात कर रहा हूं जिससे परमात्मा श्रीप्रभुवीर का श्रमणत्व बचपन में स्वीकार कर अपनी पहचान स्वयं बनाई और लोगों की जीवन दशा और दिशा बदलने में अपना संपूर्ण जीवन जिनशासन को समर्पित कर दिया। मैं राजगढ़ में जन्में उस बालक की बात नहीं कर रहा हूं जिसने मणि - लाल के यहां जन्म लिया था, मैं उस नवरत्न की बात कर रहा हूं जिसने इस धरा पर नवरत्न बनकर हजारों-हजार लोगों को जीने की राह दिखलाई। हाँ ! मैं पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा की बात कर रहा हूं।

पूज्यश्री इंसान से संत और संत से सबके आराध्य कब बन गये यह पूज्यश्री को भी पता नहीं चला होगा, पूज्यश्री ने सहजता, सरलता और साधना को अपना जीवन मंत्र बनाकर आत्म कल्याण के साथ धर्म और जन कल्याण की अमृत गंगा बहाई। पूज्यश्री का संपूर्ण जीवन भगवान श्री महावीर स्वामीजी के **''जीयो और जीने दो''** के सिद्धांत पर आधारित रहा है। पूज्यश्री लोगों को यही समझते थे कि - **छोटी सी जिंदगी में तकरार किस लिये ? रहते हो दिलों में तो दीवार किसलिये।** अपने तर्कों और तथ्यों तथा वाणी के ब ल पर लोगों के दिलों पर राज करनेवाले इस नवरत्न संत से सबको अपनी साधना, आराधना, तप, जप के द्वारा लोगों के हृदय में स्थान बनाया था। इसे सच्चे संत पैरोकर को क्यों फिर समाज सर माथे पर नहीं बिठाऊंगा, आज पूज्यश्री जाने के बाद वे अब और अधिक लोगों के हृदय में जीवित हो उठे है, लोगों की दिवानगी देखते ही बनती है। **जन्म लेने से कोई पुरुष महान नहीं बनता है। जन्म लेने के बाद ही व्यक्ति अपने कार्यो से महापुरुष का दर्जा प्राप्त करता है।**

वात्सल्य रत्नाकर पूज्यपाद गुरुदेवश्री के जीवनकाल में हजारों लोग सम्पर्क में आये, आश्चर्य है कि किसी से भी निकटता होने के बाद गुरुदेव किसी का नाम नहीं भूलते थे चाहे वह व्यक्ति 10-15 वर्ष बाद क्यों नहीं मिले ? हजारों हजार लोगों को अपना धर्मलाभ प्रदान करनेवाले गुरुदेवश्री के जीवनकाल में अनेक श्रेष्विर्य, धनाढ्य, आराधक श्रावक-श्राविका ने निकटता प्राप्त की। एक बार गुरुदेव के पास आने के बाद न तो गुरुदेव ने उनको छोड़ा और न ही गुरुभक्तों ने गुरुदेव को छोड़ा, हमेशा-हमेशा के लिये वे गुरु चरणों के दास बन गये, **बून्द बनकर आये और सागर बनकर गुरुदेव में समाहित हो गये। फूल बनकर आये और उपवन बनकर जिनशासन के बाग में खिल गये। गुरुदेव के एक ऐसे ही अविस्मरणीय गुरुभक्त- गुरु आराधक श्री रमणभाई ''मोंटेक्स'' है जो गुरुदेव का अपने पर अनंत-अनंत उपकार मानते है। आज नहीं गुरुदेव के जीवित रहने समय भी आप पूज्यपाद गुरुदेव के सपनों को साकार करने की प्रतिबद्धता दर्शाते हुए ऐसी गुरु भक्ति प्रकट कर रहे है, जैसे वे सब काम गुरुदेव के सामने ही कर रहे है।**

जब श्री भोपावर महातीर्थ में दादा श्री शांतिनाथ परमात्मा की प्रतिमा को भारत के सबसे विशाल और सुन्दर ब्रह्म जिनप्रसाद में प्रतिष्ठित किया गया इसके तुरन्त बाद गुरुदेव ने श्री रमणभाई को जिस आत्मीय भाव से गले लगाया था वह तो गुरुदेव और श्री रमणभाई ही जानते है कि उसका पुण्य प्रभाव क्या हुआ और आगे भी क्या हो रहा है। **परम गुरुभक्त श्री रमणभाई का गुरुदेव के जीवन में और गुरुदेव का श्री रमणभाई के जीवन सानिध्य बिलकुल वैसा ही है जिस पर परमात्मा महावीर स्वामीजी के जीवन में श्रेणिक राजा का था। एक अटूट धार्मिक और गुरु शिष्य के मिलन ने जिन शासन को श्री भोपावर महातीर्थ के नव निर्माण के रुप में विश्व की अनमोल विरासत प्रदान कर दी है।**

पूर्ण समर्पित जीवन अर्पित जिनशासन संरक्षण हित का भाव रखनेवाले श्री रमणभाई एक विशिष्ट सुश्रावक के रुप में जिनशासन को भेंट मिली है। ऐसे श्रावकों से ही परमात्मा का शासन गतिमान है। पूज्यपादश्री से श्री रमणभाई का प्रथम मिलन सन् 2001 में धार-अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव में हुआ उसके साथ अनेक महोत्सव, दीक्षा, मांगलिक कार्यक्रमों में आपका आगमन और गुरुदेव के परम भक्त के रुप में मालवा में ही नहीं पूरे भारत में आपकी पहचान होने लगी थी, श्री भोपावर महातीर्थ के जीर्णोद्धार के लिये भूमि

पूजन, शिलान्यास शिला स्थापना आदि अनेक कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति और गुरु आज्ञा को तहत्ति के साथ स्वीकार करने की आपकी हृदय की विशालता को प्रत्यक्ष रुप से मुझे भी देखने का दुलर्भ अवसर एक नहीं अनेक बार मिला है।

योग्य शिष्य गुरु को अमरता प्रदान कर देते है और गुरु शिष्य की जीवनधारा बदलकर रख देते हैं, श्री महावीर स्वामीजी को गुरु गौतम स्वामीजी अर्जुन को द्रोर्णाचार्य जैसे गुरु प्राप्त होने पर ही संसार की गाथा बदल गई, ऐसे अनेक प्रसंग है। शास्त्रों में तीन ऋणों का उल्लेख आता है जिससे मनुष्य का मुक्त होने का निर्देश दिया गया है। 1- पितृऋण 2-देवऋण और 3- गुरुऋण। इन तीन ऋणों से मुक्ति के उपाय भी शास्त्रों में बतलाये गये है। पितृऋण से मुक्ति के लिये पुत्र या संतान की उत्पत्ति और देवऋण के लिये धर्मनिष्ठा, सत्यानिष्ठजीवन और गुरु ऋण से मुक्ति होने के लिये सुशिष्य बनकर गुरु आज्ञा को शिरोधार्य कर पूर्ण करना। ऐसा करने पर गुरु अपनी आत्मा को अपने शिष्य की आत्मा में प्रतिष्ठित कर देते है,श्री रमणभाई इन तीनों ऋणों से मुक्त हो चुके है। आपको आज्ञाकारी संतान राजीव के रुप में मिली है तो देवऋण आपने विशाल गगनचुंबी ब्रह्म प्रसाद जिनालय भोपावर को साथ श्री जीरावला आदि अनेक जिनमंदिर के निर्माण और प्रभु प्रतिमा के निर्माण से चुका दिया, गुरु की आज्ञा का पालन का परिणाम भी हम सब जानते है और देख रहे है। योग्य शिष्य के रुप में गुरुदेव के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता का भाव श्री रमणभाई में है। गुरु के प्रति अखाण्ड और निष्कम्प श्रद्धा-अडिग विश्वास लक्ष्य के प्रति एकाग्रता-धर्मनिष्ठा, अनुशासन और आज्ञाकारिता के और उदारता के गुण श्री रमणभाई के जीवन हमें दिखाई देते है।

ध्यान मूलं गुरोमूर्ति, पूजामूंल गुरुर्पदं।
मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरुकृपा॥

यह मालवा का सौभाग्य है कि गुरुदेव के सपनों को सार्थक करनेवाला गुरुभक्त श्री रमणभाई के रुप में गुरुदेव को मिला यह हमारा भी सौभाग्य है कि पूज्यपाद गुरुदेवश्रीजी के श्रीचरणों में उनके कृपा क्षेत्र में रहने का स्थान हमें मिला। पूज्यश्री की अहैतु की कृपा से हमें आत्म कल्याण का मार्ग जानने का दुर्लभ अवसर मिला है। गुरुदेवश्री का अमृत आर्शीवाद हम सब पर बरसता रहे, यही मंगल कामना!

- डॉ. सुभाष जैन

यात्रा करें ! वन्दन करें ! स्तुति करें !

पहले सौधर्म देवलोक में
बत्तीस लाख जैन मंदिर है।
दूसरे ईशान देवलोक में
अट्ठाइस लाख जैन मंदिर है।
तीसरे सनत्कुमार देवलोक में
बारह लाख जैन मंदिर है।
चौथे माहेन्द्र देवलोक में
आठ लाख जैन मंदिर है।
पांचवें ब्रह्मदेवलोक में
चार लाख जैन मंदिर है।
छट्ठे लांतक देवलोक में
पचास हजार जैन मंदिर है।
सातवें महाशुक्र देवलोक में
चालीस हजार जैन मंदिर है।
आठवें सहस्रार देवलोक में
छः हजार जैन मंदिर है।
नवें आनत देवलोक में
----- जैन मंदिर है।
दशवें प्राणत देवलोक में
चार सौ जैन मंदिर है।
इग्यारवें आरण देवलोक में
---- जैन मंदिर है।
बारहवें अच्युत देवलोक में
तीन सौ जैन मंदिर है।
नौ ग्रेवेयक देवलोक में
तीन सौ अट्ठारह जैन मंदिर है।
पांच अनुत्तर देवलोक में
अति भव्य पांच जैन मंदिर है।

कुल मिलाकर वैमानिक देवलोक में चौराशी लाख सत्ताणवें हजार तेइस जैन मंदिर है। जिन्दा रहने के लिए जितनी हवा (सांस) की आवश्यकता है। उतनी ही जैन धर्म में मंदिर व मूर्ति पूजा की आवश्यकता है।

जैनी जैनी एक है। दर्शन पूजा नेक है।

लोक भावना : भव भ्रमण का विवेक

✻ आ.श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

धर्म आदि की साधना-आराधना लोक में ही होती है। लोक क्या है ? हम जिस संसार में रहते है, साधारण भाषा में उसे ही लोक, दुनिया, संसार कहा जाता है। किन्तु तात्विक दृष्टि से लोक की व्याख्या बहुत गंभीर और व्यापक है। जैन शास्त्रों में लोक के चार भेद मिलते हैं-

1-द्रव्य लोकः-अर्थात् जिसमें, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल (समय), पुद्गला स्तिकाय और जीवास्तिकाय, ये छह द्रव्य विद्यमान रहते हैं, वह षड् द्रव्यात्मक लोक कहलाता है। इसका अर्थ है जितने भी जीव अजीव आदि तत्व है, उन सबका समूह लोक है या इन सबका आश्रय-स्थल लोक है।

धर्मास्तिकाय, जीव और पुद्गल की गति में सहायक है, जैसे मछली के तैरने में जल। अधर्मास्तिकाय जीव और पुद्गल को ठहरने में सहायता देते हैं, जैसे चलते पथिक को वृक्ष की छाया। आकाश सभी पदार्थो को ठहरने का स्थान देता है, दिन-रात के रुप में वर्तते समयचक्र को 'काल' कहते हैं। मेज, कुर्सी, घड़ा आदि सभी जड़ पदार्थ पुद्गल हैं। जीव चैतन्य रुप हैं। इन षट् द्रव्यों का समूह लोक कहा जाता है।

2- क्षेत्र लोकः- इसके माध्यम से लोक की भौगोलिक स्थिति बताई गई है। इस असीम अनन्त अंतरिक्ष (आकाश) में जहां जीव-अजीव आदि षड् द्रव्य रहते हैं, वह चौदह राज प्रमाण क्षेत्र लोक कहा गया है। जैसा कि एक प्रसिद्ध दोहे में कहा है-

चौदह राज उतुंग नभ लोक पुरुष संठान।
तामे जीव अनादि तें भटकत है बिन ज्ञान॥

यह लोक चौदह राज प्रमाण विस्तृत है। सम्पूर्ण लोक के बीच में एक लाख योजन ऊँचा मेरु पर्वत है। इसी पर्वत को लोक का मध्य केन्द्र मानकर इसके तीन विभाग किये गये हैं। सबसे नीचे अधोलोक है।

मेरु पर्वत के नीचे लगभग सात राज प्रमाण क्षेत्र अधोलोक है। अधोलोक में सात नरक भूमियां है। इनमें प्राणी अपने द्वारा किये हुए हिंसा आदि क्रूर कठोर कर्मो के फल भोगता है। नारकी जीवों की असह्य दारुण वेदना का वर्णन सुनकर आत्मा में कंपकंपी छूटने लगती है और विचार आता है, ऐसे क्रूर-कठोर पाप कर्मो से सदा ही बचते रहना चाहिये।

प्रथम नरक भूमि के ऊपर थाली के आकार में 1,800 योजन ऊँचा तथा 1 राजु से थोड़ा कम चौड़ा मध्यवर्ती भाग मध्यलोक है।

इसे तिर्यक लोक भी कहा जाता है। इस मध्यलोक में मुख्य रुप से मनुष्य और तिर्यंच जाति के जीव रहते हैं। मेरु पर्वत के नीचे के अधोवर्ती भाग में भवनपति, व्यन्तर जाति के देव भी भवनों में रहते हैं तथा मेरु पर्वत के समभूतल से 790 योजन ऊपर और 900 योजन तक के क्षेत्र में सूर्य, चन्द्र ग्रह नक्षत्र आदि ज्योतिषी देव परिभ्रमण करते रहते हैं।

मेरु पर्वत से असंख्य-असंख्य योजन ऊपर जाने पर ऊर्ध्वलोक आता है। इस ऊर्ध्वलोक में वैमानिक जाति के देव रहते हैं। इनके 12 कल्पविमान फिर नवग्रैवेयक विमान तथा इसके ऊपर पाँच अनुत्तर विमान हैं। इस प्रकार कुल 26 देव लोक हैं। इन देवलोकों मे रहने वाले देवगण अपने पूर्वकृत शुभ कर्मो के फलस्वरुप अत्यन्त सुख-आनन्द आदि का अनुभव करते हैं।

पाँच अनुत्तर विमान से ऊपर पैंतालीस लाख योजन विस्तृत सिद्धशिला है। उस पर सिद्ध क्षेत्र में समस्त कर्मो से मुक्त, परम निर्मल, परम विशुद्ध शरीर मुक्त शुद्ध ज्योतिर्मय सिद्ध आत्माओं का निवास है। सिद्धआत्मा शाश्वत है। यहाँ आने के बाद जीव पुनः जन्म-मरण नहीं करता।

3- काल लोकः- काल लोक की दृष्टि से यह लोक शाश्वत है, अनादि है।

4- भाव लोकः- भाव लोक की दृष्टि से लोक में राग, द्वेष, कषाय आदि भावों के कारण ही जीव सतत परिभ्रमण करता रहता है।

लोक के बाहर अनन्त शून्य आकाश है, जिसे अलोकाकाश कहा जाता है।

लोक भावना में लोक स्वरुप का चिंतन इसलिए किया जाता है कि इस विशाल लोक में यह आत्मा अनन्त-अनन्त जन्म-मरण कर चुका है। कभी नरक में, कभी निगोद और कभी स्वर्ग की उच्चतम भूमिका तक चला गया है। लेकिन जब तक आत्म-स्वरुप की पहचान नहीं हुई तब तक भ्रमण ही करता रहा। इस अनन्त लोक यात्रा का अन्त नहीं आया।

लोक भावना एक प्रकार से अनादिकालीन लोकयात्रा का अन्त खोजने की एक कुंजी हैं। लोक-स्वरुप को समझकर भव-भ्रमण से मुक्ति के लिये प्रयत्न करने की प्रेरणा है।

श्री शत्रुंजय गिरिराज के 108 नाम

गतांक से आगे...!

संघ यात्रा जेणे करी, कीधा जेणे उद्धार।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, छेदी जे गति चार ॥16॥

इस तीर्थ की जिसने संघ यात्रा की है, जिसने इस तीर्थ पर जीर्ण मंदिरों का उद्धार किया है, उसने इस कार्य से अपनी चार गति (तिर्यंच, नारकी, देवता, मनुष्य) में भटकने रुपी संसार का छेदन किया है, ऐसे इस तीर्थेश्वर को हे भव्य जनों ! नमस्कार करो ॥16॥

पुष्टि शुद्ध संवेग रस, जेह ने ध्याने थाय।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, मिथ्यामति सवि जाय ॥17॥

आत्मा में स्थित ऐसा वैराग्य राग जिसके ध्यान से प्रकट होता है और आत्मा की मिथ्यात्व बुद्धि विपरीत बुद्धि जिसके प्रभाव से नष्ट हो जाती है, ऐसे इस गिरिराज को श्रद्धा से नमस्कार करो ॥17॥

सुरतरु सुरमणी सुरगवी, सुरघट सम जस ध्यान।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, प्रगटे शुद्ध स्वभाव ॥18॥

जिसका ध्यान कल्पवृक्ष, चिंतामणिरत्न, कामधेनु और कामकुंभ से भी अधिक मनोरथ पूर्ण करने वाला है तथा जिसके ध्यान से आत्मा का शुद्ध स्वभाव प्रकट होता है, ऐसे इस गिरिराज को श्रद्धापूर्वक नमन करें ॥18॥

सुरलोके सुरसुंदरी, मळी मळी थोके थोक।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, गावे जेहना श्लोक ॥19॥

देवलोक में सुरसुंदरियों के कई समूह एकत्रित होकर जिसके गुणगान गाते हैं, उस तीर्थेश्वर को श्रद्धापूर्वक नमस्कार करो ॥19॥

योगीसर जस दर्शने, ध्याने समाधि लीन।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, हुवा अनुभव रसलीन ॥20॥

परम पावन गिरिराज के दर्शन करने मात्र से योगी भी समाधि में तल्लीन हो जाते हैं और आत्मानुभव रस में स्थिर हो जाते हैं। ऐसे इस तीर्थराज को श्रद्धापूर्वक नमस्कार करें ॥20॥

मानुं गगने सूर्य शशी, दीये प्रदक्षिणा नित्त।
ते तीर्थकर प्रणमीए, महिमा देखण चित्त ॥21॥

कवि कल्पना करता है कि सूर्य और चंद्र आकाश में नित्य भ्रमण करते हैं, इससे यह क्यों न माना जाये कि वे इस महिमाशाली गिरि को देखाने के मन से भ्रमण करते हैं, ऐसे इस तीर्थेश्वर को हे सौभाग्यशालियों ! आप भी सदैव प्रणाम करो ॥21॥

सुर असुर नर किन्नर, रहे छे जेहनी पास।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पामे लील विलास ॥22॥

देवता, दानव, मनुष्य और किन्नर (गीतप्रीय वैसे) इस तीर्थ के सानिध्य में रहते है, क्योंकि वे मन से यह मानते है कि इसके सानिध्य से हम लील विलास को प्राप्त कर सकते हैं, ऐसे इस पावन तीर्थ को हे जीव तू नमस्कार कर ॥22॥

मंगलकारी जेहनी, मृत्तिका हारी भेट।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, कुमति कदाग्रह भेट ॥ 23॥

जो मृतिका-मिट्टी परम पावन और मंगलकारी है। इस कारण वह देव को भी भेंट देती है। क्योंकि जिसके प्रभाव से पापबुद्धि और कदाग्रह का नाश होता है। ऐसे इस तीर्थराज को हे सौभाग्यशालियों ! आप भी श्रद्धापूर्वक नमस्कार करो ॥23॥

कुमति कौशिक जेहने, देखी झांखा थाय।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, सवि तस महिमा गाय ॥ 24॥

जिसे देखकर दुष्टबुद्धिवाले जड़बुद्धि वाले होते हैं वे भी नम हो जाते हैं और इसकी महिमा गाते है, ऐसे तीर्थराज को हे पुण्यात्माओं ! तुम प्रणाम करो ॥ 24॥

सूरज कुंडना नीरथी, आधि व्याधि पलाय।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जस महिमा न कहाय ॥25॥

इस गिरिराज पर स्थित जो सूरजकुंड है, उसके जल से आधी-उपाधि, व्याधि-काया संबंधी कष्ट भी नष्ट हो जाते हैं। ऐसा जिसका वर्णन न किया जा सके ऐसा प्रभाव है, ऐसे तीर्थ को हे भव्य जनों ! तुम अंतरमन से प्रणाम करो ॥25॥

सुंदर टूक सुहामणी, मेरुसम प्रासाद।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, दूर टले विखवाद ॥26॥

इस गिरिराज पर मनोहर टूक सुशोभित है और उसके ऊंचे शिखरवाले मंदिर मेरु के सद्रश है तथा गिरि के ध्यान द्वारा क्लेश, कलह भी दूर हो जाते हैं। तो ऐसे प्रभावशाली तीर्थेश्वर को हे भव्य जनों ! तुम नमस्कार करो ॥26॥

द्रव्य भाव वैरी घणा, जिहां आव्ये होय शांत।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जाये भवनी भ्रांत ॥27॥

मनुष्यों के बाह्य वैरी हो या आंतरिक वैरी हो, परन्तु यहां आने से इस तीर्थ के प्रभाव से शांति मिलती है और भवभ्रमण की अशांति दूर हो जाती है, इसलिये पुण्यात्माओं ! इस तीर्थ को सदैव प्रणाम करो ॥27॥

जग हितकारी जिनवरा, आव्या अेणे ठाम ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जस महिमा उद्दाम ॥28॥

जगत के जीवों का हित करने वाले जिनेश्वर भी इस तीर्थभूमि की पवित्राता के कारण इस पर पधारे थे, ऐसी इसकी श्रेष्ठ महिमा है, ऐसे इस तीर्थेश्वर को हे भव्यात्माओं ! तुम भी पूर्ण श्रद्धा से नमस्कार करो ॥28॥

नदी शेत्रुंजय स्नानथी, मिथ्या मळ धोवाय ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, सविजनने सुखदाय ॥29॥

जिसे स्पर्श करती हुई शत्रुंजय नदी का पानी इतना पवित्र है कि वह भाविकों के मिथ्यात्व मेल को धो देती है, और जिसका पानी सभी जीवों को सुख देनेवाला है । ऐसे इस तीर्थराज को हे भव्य जनों ! तुम नमस्कार करो ॥29॥

आठ कर्म जे सिद्धगिरे, न दीये तीव्र विपाक ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जिहां नवि आवे काक ॥30॥

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अंतराय ये जो आठ कर्म है वे इस गिरि पर तीव्र फल नहीं देते क्योंकि यह इस गिरि का प्रभाव है, इस गिरिराज को नमस्कार करो ॥30 ॥

सिद्धशिला तपनीमय, रत्न स्फटिक खाण ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पाम्या केवलज्ञान ॥31॥

श्री सिद्धाचल तप्त स्वर्ण के सद्दश दैदीप्यमान है और उसमें स्फटिक रत्न की खान है । तो चलो इस तीर्थेश्वर को प्रणाम करें ॥31॥

सोवन रुपा रत्नंनी, औषधि जात अनेक ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, न रहे पातक अेक ॥32॥

स्वर्णसिद्धि करने हेतुं, रुपा की सिद्धि करने हेतु, औषधियां व अनेक प्रकार के रत्न इस गिरिराज पर है । ऐसे गिरिराज की आराधना करने से एक भी पाप शेष नहीं रहता । तो ऐसे तीर्थेश्वर को हे सौभाग्यवानों ! तुम नमस्कार करो ॥32॥

संयमधारी संयमे, पावन होय जिण क्षेत्र ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, देवा निर्मळ नेत्र ॥33॥

संयम का पालन करनेवाले संयमीजन इस गिरि-क्षेत्र में पावन होते हैं, वे पाप मुक्त हो जाते हैं तथा यह तीर्थ निर्मल चक्षु प्रदान करने वाला है । इसलिये इस तीर्थाधिराज को नित्य सदैव नमस्कार करें ॥33॥

श्रावक जिहां शुभ द्रव्यथी, ओच्छव पूजा स्नात्र ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पोषे पात्र सुपात्र ॥34॥

श्रावक इस गिरिराज पर न्याय संपन्न ऐसे द्रव्य जो उत्सव, पूजा स्नात्र वगैरह करते हैं, सुपात्र को और सामान्य पात्र को घोषित करते है, जिससे उनकी आत्मा को लाभ होता है । इसलिये हम भी गिरिराज को श्रद्धापूर्वक नमस्कार करते हैं ॥34॥

स्वामिवात्सल्य पुण्य जिहां, अनंतगुण कहेवाय ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, सोवन फूल वधाय ॥35॥

जिस गिरिराज पर साधर्मिक भक्ति करने से अनंत पुण्य मिलता है, ऐसे इस तीर्थाधिराज की स्वर्णपुष्पों से पूजा करनी चाहिये । ऐसे तीर्थेश्वर को श्रद्धा से प्रणाम करें ॥35॥

सुंदर यात्रा जेहनी, देखी हरखे चित्त ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, त्रिभुवन मांहे विदित्त ॥36॥

तीन लोक में प्रसिद्ध ही है कि जिसकी यात्रा अति सुंदर है । क्योंकि उसे देखकर आत्मा अत्यन्त हर्षित होती है । ऐसे इस तीर्थेश्वर को हे सौभाग्यशालियों ! तुम श्रद्धापूर्वक नमस्कार करो ॥36॥

पालीताणुं पुर भलुं, सरोवर सुंदर पाळ ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जाये सकल जंजाळ ॥37॥

इस गिरिराज के समीप में, पूर्व में एक सुंदर सरोवर था, (जो वर्तमान में विलुप्त हो गया है) उस सरोवर के समीप पादलिप्तपुर सुंदर पालीताणा नगर स्थित है । ऐसे इस गिरिराज के सानिध्य से सांसारिक बंधन नष्ट हो जाते हैं ।

मनमोहन पागे चढ़े, पग पग कर्म खपाय ।
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए,गुण गुणी भाव लखाय ॥38॥

इस गिरिराज पर चढ़ने के मार्ग भिन्न हैं । (परंतु वर्तमान में भक्तविशेषतया पालीताणा की ओर से गिरिराजपर चढ़ते हैं) गिरिराज पर चढ़ते हुए परिणाम की धारा बढ़ती है । अर्थात् पद पद पर कर्म का नाश होता है, इसलिए गुण और गुणी भाव का एकत्व हो जाता है । ऐसे प्रभावशाली तीर्थेश्वर को प्रणाम करो ॥38॥ **(आगे और भी है...!)**

✻ कदम-कदम पर पाप है, दृष्टि में जहर है, और मौत सिर पर सवार है, यह सोचकर आज का दिन आरंभ कर।

आध्यात्मिक पहाड़े

✻ श्रीमती प्रभा-कल्याणमल जैन, देवास

जिनशासन के आगमों में अंकों का विशेष महत्व रहा हुआ है। आगम अनुयोग-द्रव्यानुयोग, कथानुयोग, चरणानुयोग और गणितानुयोग पर आधारित है। हम आध्यात्मिक ज्ञान गणित के अंकों से भी प्राप्त कर सकते है।

दो का पहाड़ाः-

2 राग-द्वेष दो
4 मोक्ष के साधन चार
6 लेक्ष्या छः
8 कर्म आठ
10 मुण्डन दस
12 निर्जरा के भेद बारह
14 गुणस्थान चौदह
16 सतियां सोलह
18 पाप अठारह
20 विहरमानजी बीस

तीन का पहाड़ाः-

3 मनोरथ तीन
6 काया छः
9 तत्व नौ
12 अरिहंत के गुण बारह
15 कर्मादान पन्द्रह
18 अब्रह्मचर्य के प्रकार अट्ठारह
21 श्राविका के गुण इक्कीस
24 तीर्थंकर चौबीस
27 साधु के गुण सत्ताईस
30 महामोहनीय कर्म बंधन स्थान तीस।

चार का पहाड़ाः-

4 ध्यान चार
8 सिद्ध भगवान के गुण आठ
12 भिक्षु पडिमा बारह
16 सूयगडांग के अध्ययन सोलह
20 असमाधिस्थान बीस
24 देवता के प्रकार चौबीस
28 प्रायश्चित देने के प्रकार अट्ठाईस
32 शील की उपमा बत्तीस
36 उत्तराध्ययन के अध्ययन छत्तीस
40 परम कल्याण के बोल चालीस

पांच का पहाड़ाः-

5 महाव्रत पांच
10 यति धर्म दस
15 परमाधामी देव पन्द्रह
20 अविनय के प्रकार बीस
25 पांच महाव्रत की भावना पच्चीस
30 महावीर स्वामी की गृह अवस्था तीस वर्ष
35 वाणी के गुण पेंतीस
40 मेरुपर्वत की चूलिका योजन चालीस
45 मंदिरमार्गीय आगम पैंतालीस
50 मुहपत्ती के बोल पचास

परमात्म पूजा जैन आगमों में

✻ श्री ठाणांग सूत्र के चतुर्थ ठाणा में नन्दीश्वरद्वीप के 52 जिन मंदिरों का अधिकार है।

✻ श्री समवायांग सूत्र के सत्तरहवें समवाय में जंघाचरण विद्याचरण मुनियों के यात्रा वर्णन का उल्लेख है।

✻ भगवती सूत्र शतक 3 उद्देश्य 1 के चमरेन्द्र के अधिकार में जिन प्रतिमा का शरणा कहा है।

✻ श्री उपासकदशांग सूत्र में आनन्द श्रावक के अधिकार में जिन मूर्ति का उल्लेख हैं।

✻ रायपसेणी सूत्र में सूर्याभदेव ने जिन प्रतिमा की पूजा की। उसका वर्णन है।

✻ द्रोपदी जिन प्रतिमा की पूजा करती थी। उसका ज्ञाता धर्म सूत्र में विशद वर्णन है।

✻ विजयदेव ने जिन प्रतिमा की पूजा की, इसका जीवाभिगम सूत्र में विशद वर्णन है।

✻ शत्रुंजय तीर्थ पर कई आत्माएं मोक्ष में गई। इसका अंतकृत् सूत्र में वर्णन है।

✻ अष्टापद तीर्थ पर ऋषभदेवजी के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने 24 तीर्थंकरों का मंदिर बनाया है। वहां जिन प्रतिमा के आगे रावण ने वीणा बजाकर भक्ति करके तीर्थंकर गोत्र बांधा है।

पाप की सजा भारी...! *प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

पशु-पक्षीयों में आपसी झगड़ाः-

कलह वृत्ति के मूल जीवों के मन में बहुत गहरे जा चुके हैं और यहां तक की इस जन्म के कलह के संस्कार जनम-जनम में साथ भी आते हैं। आखिर यह भी मोह कर्म के कषायों की प्रवृत्ति है। अग्नि का कार्य जैसे सब जलाकर भस्म कर देना.... धूंआं बनाकर उड़ा देना। वैसे ही कषाय मूल कारण है और कलह उसका कार्य है। जैसे घर की सिगड़ी में, भट्टी में पड़े-पड़े जलते हुए अंगारे पास खड़े हुए को गरमी देता है, वैसे ही कषाय भी पास में रहे हुए को कलह कराता है। प्रायः कषाय का उपयोग लोग कलह में विशेष करते हैं उसमें भी क्रोध-मान में तो समझीए झगड़ा अक्सर होता है। यह स्वभाव यहां से अन्य गति में जाते समय भी साथ आता है और मानो जीव तिर्यच को पशु-पक्षी की गति में जाता है तो वहां भी आता है। द्वेषी तो बाहरी लोगों से लड़ेगा-झगड़ेगा। लेकिन कलहशील मनुष्य तो अपने सगे-संबंधी-स्नेही मित्र आप्तजन आदि सभी से लड़ेगा-झगड़ेगा कलहशील के लिए कोई भी व्यक्ति, कोई भी संबंधी वर्ज्य नहीं है। अब यही स्वभाव, ये ही संस्कार, यदि पशु-पक्षी के जन्म में साथ आ गए तो वहां बहुत ज्यादा कलह है। आप जानते हैं कि कबुतर शांति का दूत है। बात सही है। परन्तु कभी आप ने गौर से देखा होगा कि कबुतर भी आपस में इतना झगड़ते है कि एक-दूसरे को चांच से घायल कर देते हैं। बड़ी लम्बी पाल हो या छत हो फिर भी अकेला बैठना चाहता है। दूसरे कबूतर को नहीं बैठने देना चाहता है। यहां तक कि चिड़िया भी आपस में बहुत लड़ती-झगड़ती है वैसे ही जंगल में पशु भी लड़ते है। सांढ लड़ते है। गाएं भी लड़ती है। भेड़-बकरियां भी लड़ती है। घोड़े-गधे को भी लड़ते-झगड़ते देखा है और वनराज सिंह-शेर-चित्ता आदि भी लड़ते हैं। परस्पर भी लड़ते हैं और दूसरों से भी लड़ते-झगड़ते हैं।

चारों गति में कलह हैः-

संसार में चार गति है। देव, मनुष्य-नरक-तिर्यच की चारों गति संसार में गिनी जाती है। देवगति भी संसार चक्र में ही आती है। सर्वत्र कलह है अतः संसार है और सभी संसार में है अतः सर्वत्र कलह है ! तिर्यच गति में जैसे देखा जहां मत्स्यगलागल न्याय है ! बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। बलवान पशु शेर-सिंहादि कमजोर पशु हिरन, गाय, भेंस को मारकर खा जाते हैं। वैसे ही पक्षियों में भी है। बड़े-बड़े बाज आदि पक्षी छोटे-छोटे पक्षियों को मारकर खा जाते है। आपने देखा होगा कि एक स्त्री एक रोटी का टूकड़ा हाथ में लेकर खड़ी रहती है और तू.... तू.... तु....तु.... चिल्लाती है। अचानक 4-6 कुत्ते भागते हुए आते हैं। अब रोटी तो एक है और कुत्ते 4-6 है। क्या होगा ? झगड़ा होगा यह बात निश्चित है कि नहीं ? और जो बलवान होगा वह भौं-भौं करके रोटी लेकर भग जाएगा और ऐसा भी होता है कि कुत्ते लड़ते ही रहते है और बन्दर उनकी रोटी खा कर भग जाता है।

वस्तुएं कम है और उनके भोक्ता लोग ज्यादा है। अतः संसार सदा ही संघर्षमय रहेगा। पुरुषों क्या होता है ? कॉलेज में 2-4 युवक एक युवती के पीछे पागल होते हैं। युवती भी सभी को हाथ में रखती है, अपने रुप सौंदर्य के पीछे सभी को मोहित करके नचाती है। सब से परिचय संपर्क कर लेती है। होता ऐसा है कि दोनों-तीनों युवक उस युवती से शादी करने को लालायित हो जाते है। अब यह तो निश्चित ही है कि शादी तो एक से ही होगी परन्तु फिर भी नाटक तो चलता ही है। अन्त में युवती कुछ माया कपट करेगी। बहाने बनाएगी। छल-प्रपंच की जाल रचेगी और एक से शादी करेगी और दूसरे के सामने झूठ भी बोलेगी। दूसरे को लटकाएगी-फसाएगी। विश्वासघात करेगी। इसका परिणाम क्या होगा कि दूसरा युवक भी क्रोध के आवेश में आकर पहले युवक को मारने का प्रयत्न करेगा वे दोनों लड़ेंगे और युवती किसी तीसरे के साथ ही भाग जाएगी। बस कुत्ते रोटी के लिए लड़े, और पुरुष स्त्री के पीछे लड़े। क्या फरक पड़ा ? वस्तु का ही फरक पड़ा। परन्तु संघर्ष का स्वरुप तो वहीं रहा। इसी तरह कलह का संघर्ष चलता रहता है। यहां तक कि यह कलह चक्र जन्म-जन्मान्तर में भी दुःखदायी बनता है।

स्वर्ग की देवगति के देवताओं में भी एक-दूसरे की अप्सरा के निमित्त संघर्ष होता है। लड़ते-झगड़ते है। एक-दूसरों की अप्सराएं उठा भी जाते हैं। अपहरण भी होता है और फिर लड़ाई-झगड़ेचलते हैं। उसी तरह सत्ता, संपत्ति और सुंदरी के पीछे तो संघर्ष अनादि-अनन्तकाल से चला आ रहा है। भूत-प्रेत-पिशांच व्यंतर-आदि में तो जिन्दगी ही संघर्ष की है। वैसे ही नरकगति के नारकी जीवों की भी यही हालत है। वहां तो और भी खराब दशा है। क्योंकि एक तो नारकीयों की लेश्याएं खराब होती है। कषाय की मात्राएं अधिक होती है। अध्यवसाय खराब-अशुभ ज्यादा होते हैं। सभी नपुंसक होते हैं। इसलिये

संघर्ष लड़ना-झगड़ना तो वहां जन्म जात स्वभाव ही बन गया है ! जहां अंधेरा ही अंधेरा छाया हुआ है ऐसी नरक में तो चलते हुए परस्पर टकराते ही लड़ने-झगड़ने लग जाते हैं । देर ही नहीं लगती। सतत संघर्षमय जीवन ही बन गया है।

6 लेश्याओं का स्वरुपः-

लेश्या का अर्थ है विचारों की तरतमता । मनुष्य विचारशील प्राणी है। सभी विचार करते हैं। लेकिन सभी की विचारधारा में चढ़ाव-उतार रहता है। विचारों में भी शुभ-अशुभ का भेद रहता है । विचारों में भी तीव्र-मंद का भेद रहता है और क्रोध-मान-माया-लोभादि कषायों की अवस्था में भी जब विचार धारा चलती ही रहती है तब भी तीव्र-तीव्रतर, मन्द-मन्दतम आदि की तरतमता का भेद रहता है। यद्यपि हम विचारों को जान नहीं सकते किसी के विचारों को पहचान नहीं सकते। फिर भी शास्त्रकार महर्षिओं ने रंग के उदाहरण से लेश्या का 6 प्रकार की बताई गई है।

6 लेश्याः-

अशुभ- कृष्ण-1, नील-2, कापोत-3

शुभ- पीत-4, पद्म-5, शुक्ल-6

6 लेश्या में 3 अशुभ है और तीन कुछ अशुभ की अपेक्षा दूसरी-तीन शुभ है। यहां छहों नाम के रंग के रखे गये है। 6 मित्र है सभी को कड़ी भूख लगी है। वे छहों मिलकर गांव के बाहर बगीचे में आए। वहां जामुन का एक वृक्ष देखा। सभी का जी ललचाया। खाने दौड़े । पहले नंबर के मित्र ने तो आते ही कह दिया कि कुल्हाड़ी से सारा वृक्ष ही उखाड़कर-तोड़कर नीचे गिरा दो। सारा वृक्ष ही काट डालो फिर बैठे-बैठे खाते रहेंगे। यह पहले नंबर की कृष्णा लेश्या है। जामुन खने के लिये सारा वृक्ष ही काटना चाहता है। दूसरे ने कहा-अरे भाई ! इसकी मुख्य शाखाएं काट दो दूसरे नंबर की यह नील लेश्या है। जो पहले जितनी काली नहीं है। कालिमा वह कम हो गई और नील बन गई। तीसरे ने कहा- इसकी छोटी-छोटी टहनियां ही तोड़ लो। मूल तने से या शाखाओं से काट कर क्या फायदा है। यह तीसरी कापोत लेश्या का मनुष्य है। कापोत का अर्थ है कबुतर। उसके जैसा रंग है। चौथी से शुभ लेश्या की शुरुआत है। चौथे ने कहा- कुछ भी काटने की जरुरत नहीं है। सिर्फ गुच्छे ही तोड़लो। यह पीत लेश्या है। पीले रंग की। पांचवें ने कहा गुच्छे में भी जितने पके-पके जामुन है उतने ही तोड़ो। कच्चे को हम क्या करेंगे? वे 1-2 दिन में पक जायेंगे। यह पद्म लेश्या है। अर्थात् सफेदी की ओर आगे बढ़ रहा है। परन्तु अभी यहां पांचवीं पद्म लेश्या तक आया है। पद्म का अर्थ है कमल। कमल के-जैसा कुछ हल्का पीला रंग है। अन्त में छट्ठे मित्र ने कहा तुम सब मुर्ख हो इतनी जामुन खाने की ही इच्छा है तो आओ इतने जामुन तो नीचे बीखरे हुए पड़े है। खालो। जामुन से कहा पेट भरने वाला है ? तोड़ने और काटने की बात ही क्यों करते हो ? क्या आवश्यकता है तोड़ने और काटने की ? वह तो जमीन पर बिखरे हुए जामुन को उठाकर खाने लगा। इस दृष्टांत में बताये गये छह पुरुषों की विचारधारा पर आपने ध्यान दिया होगा, हेतु सब का एक ही है। फिर भी विचारधारा भिन्न-भिन्न है। इसे ही लेश्या कहते है। जैसे माता घर में एक पुत्र पर, भी नौकर पर क्रोध करती है सोचिए दोनों पर किये गये क्रोध में कितना फरक पड़ा ? कितना अन्तर है। यह जो तीव्र मन्द, तीव्रतर-मन्दतर की तरतमता है यही लेश्या है। प्रत्येक जीव इन प्रकार की लेश्यावाला है। कब कौन सी लेश्या रहती है यह उसके विचारों पर, वृत्ति पर आधारित है । क्लेश-कषाय-कलह में भी इन्हें लेश्याओं पर आधार रहता है। यदि लेश्याएं खराब है तो यह निश्चित समझीए कि झगड़ा उग्र रुप लेगा । लम्बा चलेगा और यदि लेश्या ग्रुप शुभ है तो कलह शान्त होगा। ठंडा होगा, थोड़ी देर में समाप्त हो जायेगा।

युद्ध का वातावरण है। ''देखो उसे मारो'' का कानून कृष्ण लेश्या का अन्धा कानून है। इसमें कोई विचार करना ही नहीं है। बिना विचारे ही किसी को देखते ही बंदूक चलानी है। इसमें सभी को मारने की विचारधारा अत्यन्त खराब है। दूसरी नील लेश्या में पहले की अपेक्षा विचार कुछ नरम किये है-बच्चों को छोड़ दो, मत मारो। तीसरी कापोत लेश्या वाला कहेगा भाई। स्त्रीयों को भी छोड़ दो। स्त्रीयां अबध्य होती है। चौथी पीत लेश्यावाला कहेगा कि शरणार्थी को मत मारो। और पांचवी पद्म लेश्यावाला कहेगा कि निर्दोषों को छोड़ दो और जो सामना करता है उसी से सिर्फ लड़ो। इतने में सबसे ज्यादा शुद्ध छट्ठी शुक्ल लेश्या वाला यह कहता है कि भाई किसी को मत मारो। प्रेम से बैठकर समझौता कर लो। आप देखेंगे कि छहों लेश्याओं में पहली से दूसरी-दूसरी से आगे तीसरी इस तरह आगे क्रमशः शुद्ध-शुद्धतर होती जाती है । जबकि छट्ठी से पांचवीं ज्यादा अशुद्ध है। पांचवीं से चौथी ज्यादा अशुद्ध है। इस तरह क्रमशः पहली तो सबसे ज्यादा खराब है। यही 6 लेश्याएं कलह आदि सर्वत्र सर्व क्षेत्र में विचारधारा की शुद्धि-अशुद्धि में काम करती है। जैसी लेश्या वैसा कलह होगा ! ये लेश्या इनके साथ 4 कषाय-क्रोध-मान-माया और लोभ और दो मुख्य राग-द्वेष तथा आर्त-रौद्र ध्यान की अशुभता के कारण कलह में न्यूनाधिक्कता,तीव्र-मन्दता रहती है। **(आगे और भी है...!)**

मैं सुभूम

मैं अपनी बात करुं उसके पहले मेरे बुजुर्गों की बात करता हूं। वह बात करुंगा तो ही आपको मेरी बात समझ में आयेगी। मेरे पिताजी का नाम कृतवीर्य और दादा का नाम अनंतवीर्य। जमदग्नि ऋषि का नाम तो आपने सुना ही होगा ? वे जमदग्नि मेरे दादा के साढू भाई थे।

आप कहेंगे : ऋषि और साढू भाई ? वह कैसे ? आओ.... मैं आपको इतिहास बताता हूं।

जमदग्नि ऋषि तप कर रहे थे। उनकी दाढ़ी में पक्षियों ने घोसले बांधे थे। दो देव को उनकी परीक्षा करने का मन हुआ। दोनों चिड़िया का रुप लेकर दाढ़ी के घोसले में आये। ऋषि सुन सके उस तरह दोनों वार्तालाप करने लगे।

पहली चिड़िया : मेरी हिमालय जाने की इच्छा हो रही है।

दूसरी चिड़िया : क्यों ?

ऐसे ही बस फिरने की इच्छा हुई हैं। तू अनुमति दे।

नहीं जाने दूंगी।

क्यों ?

तू वहां से वापस लौटकर न आए तो ?

तो मुझे गाय की हत्या करने का पाप लगे।

नहीं। ऐसे अनुमति नहीं दूंगी। इस जमदग्नि ऋषि के पाप के सोगंद ले तो रजा दूंगी।

अपना नाम सुनकर ऋषि चौक उठे। क्रोध से कांप उठे। दोनों को पकड़े और कहा- मुझमें तुम्हें कौन सा पाप दिखा ? ऐसी घोर साधना करता हूं फिर भी मुझ में तुम को पाप दिखाई दे रहे है ? सूर्य में अंधकार हो तो मुझमें पाप हो सकते हैं।

चिड़िया बोली- ऋषिजी ! माफ करना। आपके शास्त्रानुसार ही आप पापी हैं। आपके शास्त्रों में लिखा है- 'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति' पुत्रहीन मनुष्य की सद्गति नहीं होती है। बोलो, आपको कोई पुत्र हैं ? शादी की है ? सिर्फ तप करने से क्या होगा ?

ऋषि सोचने लगे। चिड़िया की बात तो सही है। मुझे पुत्र प्राप्ति के लिये शादी करनी ही चाहिये। वे तो चल पड़े सीधे नेमिकोष्टक नगर के राजा जितशत्रु के पास। राजा को साफ-साफ कह दिया- ''मुझे शादी करनी है, इसलिये आपकी कन्या चाहिये।''

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

ऋषि की बात सुनकर राजा चौक उठे परन्तु मना भी कैसे कर सकते थे ? कहीं शाप दे दे तो ?

मेरी सौ कन्याएं हैं, जो कन्या आपको पसंद करें वह आपकी। मेरी उसमें सम्मति समझें।

राजा के इस कथन से ऋषि तो घुस गये सीधे अन्तःपुर में। सौ कन्याएं दाढ़ीवाले बाबा को देखकर स्तब्ध हो गई। अन्तःपुर में सन्नाटा छा गया। उस सन्नाटे को दूर करते हुए ऋषि ने कहा-मुझे शादी करनी हैं। बोलो तुममें से मेरी पत्नी कौन बनेगी ?

ओ दाढ़ीवाले बाबाजी ! ऐसी बात कहते तुझे शर्म नहीं आती ? भीख मांगकर तू पेट भरता है, कपड़े का भी ठिकाना नहीं, रहने का ठिकाना नहीं, तेरे शरीर का भी ठिकाना नहीं है और हम तेरी पत्नी बनें ? चला जा झटपट यहां से। नहीं तो मार खायेगा। सभी कन्याएं एक साथ बोल उठी।

ऋषि को तो इसमें अपना जोरदार अपमान लगा। उसके क्रोध का आवेश तीव्र हुआ। सभी को शाप दे दिया और दूसरी ही सेकण्ड में सभी कन्याएं कुरुप हो गई। आपने 'कन्याकुब्ज' का नाम सुना होगा ? वह नाम इस प्रसंग से प्रचलित हुआ। उस समय से 'नेमिकोष्टक' 'कन्याकुब्ज' के नाम से पहचाना जाने लगा। कन्याएं जहां पर कुबड़ी बनी वह कन्याकुब्ज।

ऋषि अन्तःपुर से बाहर निकल रहे थे। आंगण में रेणुका नाम की छोटी बाला धूल में खेल रही थी। हाथ में रहा हुआ बीजोरा ऋषि ने उस बालिका को बताया और कहा- यह तुझे पसंद है ? उसने जैसे ही हाथ लंबाया वैसे ही ऋषि उसका हाथ पकड़कर (पाणिग्रहण करके) चलता बना। जितशत्रु राजा ने भी गाय इत्यादि देकर ऋषि को विदाई दी।

रेणुका जब युवान बनी, ऋतुस्नाता बनी, तब ऋषि ने कहा- मैं तेरे लिए ब्राह्मचरु सिद्ध करके लाऊंगा। उसका भक्षण करने से तुझे उत्तम ब्राह्मण पुत्र पैदा होगा।

रेणुका सोचने लगी : मैं तो ऐसे बाबा जमदग्नि के पाले पड़कर जंगली हरिणी जैसी बनी, लेकिन मुझे मेरे पुत्र को तो ऐसा बाबा नहीं बनना है। वह बोली- मेरी बहन के लिये भी एक क्षात्र चरु सिद्ध करना। वह हस्तिनापुर के राजा अनंतवीर्य की पत्नी है जिससे उसे उत्तम क्षत्रिय पुत्र पैदा हो।

ऋषि ने दोनों चरु सिद्ध करके रेणुका को दिये, लेकिन रेणुका ने क्षात्र चरु का भक्षण किया और ब्राह्म चरु बहन के

लिये भेजा। समय जाते दोनों को पुत्र हुए। रेणुका के पुत्र का नाम राम और अनंतवीर्य के पुत्र का नाम कृतवीर्य। ये कृतवीर्य वे ही मेरे पिताजी।

एक विद्याधर से पार्शवी विद्या (अग्नि झरती तीक्ष्ण कुल्हाड़ी की विद्या) मिलने से रेणुका का राम.... जगत में परशुराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ...!

एक बार रेणुका अपनी बहन के वहां हस्तिनापुर गई। कुछ समय वहां पर रहने से अनंतवीर्य के साथ उसे प्रेम हुआ। प्रेम आगे बढ़ने से अनंतवीर्य से रेणुका को पुत्र भी हुआ। जमदग्नि ऋषि कुछ समय के बाद पुत्र सहित रेणुका को आश्रम में आये। स्त्री में अंध बने हुए को कुलटा स्त्री भी महासती लगती हैं। वह इसका नाम ! परन्तु परशुराम कोई पकड़ा रह सकता ? व्यभिचारिणी माता को देखकर वह एकदम गर्म हो गया। परशु से उसकी गर्दन उड़ा दी।

अनंतवीर्य को इस बात का पता चला और वह आश्रम में आया। आश्रम में तोड़-फोड़ करके गायों को लेकर चला गया। परशुराम को ये समाचार मिले। वह क्रोध से कांपने लगा। परशुराम यानि साक्षात क्रोध ! हाथ में परशु लेकर चला। रास्ते में ही अनंतवीर्य को पकड़ लिया और परशु से परलोक में भेज दिया। इससे मेरे पिता कृतवीर्य क्रोधित हुए। मेरे पिता को मारने वाले के पिता को न मारुं तो मेरा नाम 'कृतवीर्य' नहीं। उन्होंने आश्रम में जाकर ध्यानस्थ जमदिग्न ऋषि को मार डाला।

कैसी है वैर की परम्परा ! परन्तु सच्ची परंपरा तो अब देखने को मिलेगी। पिता की हत्या से परशुराम क्रोधित हुआ। वैसे भी वह सिरफिरा तो था ही। उसमें दूसरे ऐसे निमित्त मिलते गये। आग को लकड़ियां मिलती जाती रहे फिर क्या हालत होगी ?

परशुराम ने हस्तिनापुर आकर परशु से मेरे पिता की गर्दन काट डाली और राज्य का मालिक वह बन बैठा। यह दुनिया ऐसी ही है। यहां बलवानों के दो भाग है, मारे उसकी तलवार है, लाठी है उसकी भैंस है।

मैं उस समय मां के गर्भ में ही था ! मंत्रियों की सलाह से मेरी माता जमदिग्न के उस आश्रय में रहने आयी। क्योंकि परशुराम अब क्रोध से भरा हुआ था। उसे क्षत्रियों पर इतना गुस्सा आया कि पूरी पृथ्वी को निःक्षत्रिय (क्षत्रियहीन) बनाने का भयंकर निर्णय किया था।

मेरी माँ की देखभाल आश्रम में अच्छी तरह से हो रही थी। तापसों की ममता भी अच्छी थी। मैं गर्भ में पल रहा था। मेरी माँ को इतना तो पता चल गया था कि मुझे कोई विशिष्ट बालक अवतरेगा। क्योंकि मेरी विशिष्टा के सूचक 14 स्वप्न उसने देखे थे।

आश्रम में ही मेरा जन्म हुआ। माँ की अपार ममता और तापसों के अपार प्रेम के बीच मेरी शुश्रूषा होने लगी।

एक बार परशुराम वहां से निकल रहा था। उसकी परशु से आग की चिनगारी झरने लगी। उसके दिव्य परशु से जहां जहां क्षत्रिय हो वहां वहां चिनगारी निकलती थी। वह आश्रम में आकर चिल्ला उठा- ओ तापसो ! सच बोलो। यहां कौन क्षत्रिय छिपा हुआ हैं ? मेरी परशु से निकलती चिनगारी यहां पर क्षत्रिय होने की साबिती देती है। मुझ से सुरक्षित रहने के लिए तापस बोल उठे- क्षत्रिय ? यहां क्षत्रिय कहां से हो सकते हैं ?

सच कहना। मेरे जैसा कोई खतरनाक मनुष्य नहीं है। आप सभी जानते ही है कि मैं पृथ्वी को क्षत्रियरहित बनाने निकला हूं। तीन बार तो मैं समग्र पृथ्वी को निःक्षत्रिय बना चुका हूं।

आपकी बात सत्य हैं। परन्तु यहां पर कोई क्षत्रिय नहीं है। हाँ.... हम स्वयं ही क्षत्रिय हैं तो सही। हमें मारना हो तो मार डालो।

परशुराम को विश्वास हो गया कि यहां पर तापस सिवाय कोई क्षत्रिय नहीं है। वह वहां से चला गया। मैं सही सलामत बच गया। मेरे पुण्य से प्रेरित बने हुए तापसों ने मुझे बचा लिया।

मैं यौवन अवस्था में आया। तब मेघनाद नामक विद्याधर ने पद्मश्री नामक अपनी पुत्री की शादी ज्योतिषीयों के कहने से मेरे साथ की। इस तरफ परशुराम हमेशा चिंतित रहता- मुझे कौन मारनेवाला होगा ? मैं किसके हाथ मरुंगा ? दूसरों को मारनेवाले हमेशा शंकाशील और भयभीत ही रहते हैं। जो दूसरों को भय और तकलीफ देता है उसे भय और तकलीफ केअलावा क्या मिल सकता है ?

परशुराम इतना नृशंस आदमी था कि मृत क्षत्रियों की दाढ़ें इकट्ठी करता था। मेरी मृत्यु किससे होगी ? परशुराम ने ज्योतिषीयों को जब ऐसे पूछा तब उन्होंने कहा- हे परशुराम ! क्षत्रियों की दाढ़ें से भरे हुए थाल पर जिसकी दृष्टि पड़ते ही दाढ़ें खीर बन जाएगी, वह मुझे मारनेवाला होगा। **(आगे और भी है...!)**

बिटिया रानी...!

प्यारी प्यारी बिटिया...!

अभी मैं मनुस्मृति ग्रंथ का अध्ययन कर रहा था। उसमें विनय के चार फल बताये थे।

अभिवादनशीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्त, आयुर्विद्या यशोबलम्॥2-2॥

जिनका स्वभाव नम्र है, जो हमेशा अपनों से बड़ों का विनय करते है। उनका आयुष्य-ज्ञान-यश और बल में वृद्धि होती है।

बेटा...!

जब आंधी-तूफान आता है ना तब एक विलक्षण घटना बनती है। बड़े-बड़े मजबूत पेड़ धराशयी हो जाते है तथा छोटे-छोटे पौधे बच जाते हैं। जानती हो ऐसा क्यों होता है?

> ***आप हमसे जितना चाहा, दूर होकर देख लो।***
> ***मेरे दिल के करीब और करीब होते जायेंगे।।***

ऐसा इसलिए होता है कि विशाल वृक्ष अक्कड़ रहते हैं इसलिए उखाड़ जाते हैं और छोटे-छोटे पौधे झुक जाते हैं, नम जाते है इसलिए बच जाते हैं।

मेरी प्यारी-प्यारी बेटी...!

मैं आज तुझे एक बहुत ही अच्छी Secret बात कहना चाहता हूं।

अक्कड़ता से मनुष्य जो चाहता है ना वह तो सिर्फ नम्रता से ही मिल सकता है।

कैसी अच्छी है अपनी परम्परा।

रोज प्रातःकाल निद्रात्याग कर घर के बड़े बुजुर्गो को चरणस्पर्श करके उनके आर्शीवाद लेना हमारी आदर्श परम्परा है। प्रणाम करना हमारा स्वभाव है। हम प्रणाम इसलिये न ही करते कि उनका यह अधिकार है बल्कि हम प्रणाम इसलिए करते हैं कि यह हमारे संस्कार है। परम्परा है।

जानते हो प्रणाम याने क्या?

प्रणाम याने समर्पण की अभिव्यक्ति। पांच सेकण्ड के लिए झुककर हम प्रणाम करते है, मगर फिर पांच घंटे घर में हमने जिन्हें प्रणाम किया उनसे जिभाजोड़ी की। लड़ाकू झगड़ा किया? क्या यह प्रणाम है?

✽ पू.आ.श्री जितरत्नसागर सूरीजी म. ''राजहंस''

चरणस्पर्श को कहता है आप मेरे लिये हमेशा ही सम्माननीय हो।

चरणस्पर्श तो कहता है आपका हर वचन मेरे लिये अनमोल है। आदरणीय है। सिर पर चढ़ाने जैसा है।

चरणस्पर्श तो कहता है आप मुझसे ज्यादा ज्ञानी हो, महान हो।

बेटा...!

भिन्न-भिन्न मन्तव्य हो वहां पर सुख-शांति पाने के लिए एक ही शर्त है कि किसी एक के मन्तव्य को मान-सम्मान दिया जाय।

अब प्रश्न यह आएगा कि वह एक व्यक्ति कौन?

किसके मंतव्य को मान-सम्मान देगा?

औचित्य-सत्य और नीति की दृष्टि से विचार करेगी तो उत्तर खूब ही सरल है।

फर्क मात्र इतना है कि संसार की दृष्टि मात्र वर्तमान के तात्कालिक लाभों और स्वार्थ को देखता है और अपनी संस्कृति उसी कला को औचित्य और कृतज्ञता की लागनियों से उसे प्राकृतिक और जीवंत बनाती है।

बेटा...!

मुंबई की एक सोसायटी है, पुष्पापर्क। उसमें एक परिवार रहता है। माता-पिता है। उनके 40 और 42 वर्ष के दो पुत्र हैं। दो पुत्रवधु है, पोते-पोती भी है। भरापुरा परिवार है। इस परिवार की एक विशेषता है।

घर में माता-पिता से ऊपर उच्च स्थान पर कोई नहीं बैठता है इतनी ही नहीं Epval-Level में भी नहीं बैठते है। पिताजी जब घर आते है तो सभी खड़े हो जाते हैं। पिताजी सोफे पर बैठते है तब सभी उनके चरणों में नीचे बैठ जाते हैं। चाहे वे पुत्र हो पुत्रवधु हो चाहे पौत्र-पौत्री या पौत्रवधु क्यों न हो।

यह उस घर के संस्कार है। यह उनका विनय है। यह उनका बहुमान भाव है। यदि उस घर में ऐसा विनय है, विवेक है तो फिर विवाद को स्थान ही कहां हैं?

My dear...!

एक मां जब उसके बेटे को अपनी छाती से लगाती है तो उसमें क्या आवश्यक होता है?

एक प्रेमी अपनी प्रेमिका को स्नेह से भेटता है उसमें क्या आवश्यक होता है ?

याद रखना बेटा...!

लागणी को आवश्यकता का गणित नहीं होता है। निश्चित व्यक्ति के प्रति आपकी लागनी भी निश्चित होती है और उस लागनी की अभिव्यक्ति भी निश्चित होता है।

माता-पिता ने अपने पर जो उपकार किये इस कारण अपने हृदय में जो कृतज्ञता की संवेदनाओं को जन्म लिया उसी की ये सभी सहज अभिव्यक्तियां है।

एक अंजान व्यक्ति के साथ कि जिसका अपने ऊपर कोई उपकार या अहसान नहीं है उस व्यक्ति के साथ हम जो व्यवहार करते है, ठीक वैसा ही व्यवहार हम अपने पेरेन्टस के साथ करें तो उसका अर्थ तो यही हुआ ना कि हमारे लिए दोनों समान हुए है।

It Means,

अपने पर मानो अपने माता-पिता का कोई उपकार ही नहीं है। क्या बताऊं बेटा...! इसे गुरु-शिष्य के संबंध में निन्हव कहा जाता है जो गुरु के वचनों का अपलाप करता है वह।

किसी व्यक्ति ने एक लाख रुपये उधार लिये। जब वह मांगे तब वह अंजान बन जाय और लाख रुपये लिये थे उसका ही इन्कार कर दे। उसके जैसी यह घटना है।

संस्कार तो यही बोलते है कि अपने उपकारी माता-पिता के साथ के प्रत्येक व्यवहार में उपकारों की समानता, कृतज्ञता, सहजता से उभर कर आए पुष्पार्क के उन दोनों भाईयों के नीचे बैठने में Loss क्या होगा ? उन्हें तो आनंद ही होगा ना ? कृतज्ञता की अभिव्यक्ति का और उनके माता-पिता को आनंद होगा उनके पुत्रों के विनय का।

उनके संपूर्ण घर में आनंद के वाइब्रेशन्स स्प्रेड हो जाते हैं। सम्पूर्ण वातावरण बदल जाता है। सभी प्रफुल्लित रहते है वातावरण खुशनुमा रहता है एवं घर का प्रत्येक सदस्य सुप्रसन्न रहेगा।

गुरुवर मालव भूषण पूज्यपाद आचार्यदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज सागरजी इस तरह जिंदगी में मुझे आपका साथ चाहिये। जैसे बच्चे को मेले की भीड़ में एक हाथ चाहिये।

जब घरों में संस्कार होते है। विनय-विवेक होता है, वातावरण प्रफुल्लित और सुप्रसन्न होता है तो ऐसे वातावरण में धरती पर स्वर्ग उतर आता है। फिर उस घर में कभी भी किसी को रोग नहीं होता है। क्योंकि नो टेंशन की जिंदगी में रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ने लगती है।

मन की शक्तियां भी वृद्धि पाती है। कभी किसी को कोई रोग आ भी गया तो असमाधि नहीं होगी। समाधि से सहनशीलता आ जाएगी। अपनी संस्कृति में इसे आर्शीवाद कहते हैं- दुआ कहते हैं।

इससे विपरित,

कृतज्ञता की संवेदना न हो, नम्रता-विनय-विवेक न हो उद्धत्त या अक्कड़ता हो तो माता-पिता के हृदय में हमेशा अजंपा ही रहेगा। उनकी वेदना के बादल सम्पूर्ण घर-परिवार को घेर लेंगे। अपनी परम्परा में इसे अभिशाप कहते है। हाय-होय कहते हैं।

बेटा...!

यह हाय बहुत खराब होती है।

सन्त तुलसीदासजी ने कहा-

तुलसी हाय गरीब की, कब हु न खाली जाय
मूआ ढोर के चाम से, लोहा भसम हो जाय॥

हो सकता है कि एक दिन सायन्टिफिक एकस्प्लेशनन्स दे देंगे परन्तु हमें इतना समय राह क्यों देखनी ?

एक तरफ आनंद है।

दूसरी तरफ अजंपा है।

ऐसा तो अपना अनुभव स्वयं कह रहा है ना ?

- तुम्हारे प्यारे डेडी

(आगे और भी है...!)

स्नेह और वात्सल्य देकर
सिखाया जीने का राज,
रहो सब मुक डोर में
जिनका थाये अभिनव जहाज,
उस दिव्य आत्मा पर
हम सब करते है नाज,
पुण्यतिथि पर श्रद्धासुमन
अर्पित करते है हम आज....

पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा

एक जीवन परिचय

बचपन से ही अपने पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री देवेन्द्रसागरसूरीजी महाराज का साथ ग्रहण कर लिया था। 14 वर्ष की बालवय में आपने संयम ग्रहण कर लिया तब से लगातार आपकी अमृत निश्रा में जिनशासन के अनेक प्रभावी महोत्सव का आयोजन हो रहा है। पूज्यश्री की निश्रा में 17 उपधान तप प्रतिष्ठा, 45 अंजनशलाका, 8 अनेक दीक्षा प्रसंग का आयोजन हो गया है। बड़ी दीक्षा- आचार्य पद प्रदान-उपाश्रय उद्घाटन, गोड़ी पार्श्वनाथ जिनालय-पूना का जीर्णोद्धार, अनेक गांव-शहरों के मंदिरजी का जीर्णोद्धार, मेहसाणा जिला गुजरात में अनेक जीर्णोद्धार शताब्दी महोत्सव के आयोजन हुए है। बलोल गडस में अंजन-प्रतिष्ठा कर गांव उद्धार कर दिया। शिरपुर में शताब्दी महोत्सव, प्रतिष्ठा वर्षीतपाराधना आदि कार्यक्रम करवाये।

कतार गांव सूरत में जैन संघ की स्थापना पूज्यश्री की निश्रा में 36 वर्ष पूर्व हुई। उस समय वहां 40 परिवार ही थे, संघ स्थापना के बाद यहां अनेक छोटे-बड़े अनुष्ठान का आयोजन हुआ। चार्तुमास, उपधान हुए, अनेक स्थानों पर पूज्यश्री के हस्ते 16 वर्ष से वर्षीतपाराधना चल रही है। कत्तार गांव में भी प्रतिवर्ष वर्षीतप की आराधना चल रही है।

जन्म	:-	विक्रम संवत् 1998, चैत्रवद-11, शनिवार
दिनांक	:-	14/4/1942
स्थान	:-	वाव (बनासकांठा)
नाम	:-	सेवंतीभाई
पिता	:-	भूदरभाई
माता	:-	मणी बहन
दीक्षा	:-	संवत् 2012, वैशाख सुद-3, रविवार दिनांक 13/4/1956
स्थान	:-	पालीताना
मुनिनाम	:-	नरदेवसागरजी
बड़ी दीक्षा	:-	विक्रम संवत्-2013, कार्तिक वद-1, शनिवार, दिनांक 24/11/1956
स्थान	:-	साबरमती-अहमदाबाद
गणी पद	:-	विक्रम संवत् 2036, कार्तिक सुद-5, शुक्रवार, दिनांक 26/10/1979
पंन्यास पद	:-	विक्रम संवत् 2039, कार्तिक सुद-3, रविवार,दिनांक 15/5/1983
स्थान	:-	श्री शंखेश्वर तीर्थ-गुजरात
उपाध्याय पद	:-	विक्रम संवत्- 2047, वैशाख सुद-10, गुरुवार, दिनांक 23/4/1991
स्थान	:-	गुरुवार पेठ, पूना
आचार्य पदवी	:-	विक्रम संवत् 2049, वैशाख सुद-6, बुधवार, दिनांक 18/4/1993
स्थान	:-	पालीताना वाव धर्मशाला
विहार क्षेत्र	:-	महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात, म.प्र., बिहार, बंगाल, उड़ीसा, राजस्थान आदि क्षेत्रों में

मेवाड़ उद्धारक दानवीर भामाशाह : कुछ तथ्य

❋ डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई

❋ माता-कर्पूर देवी, पिता-भारमल्ल कावड़िया (जैन), गुरु-देपागरसूरि, भाई-ताराचन्द, श्वसुर- शोभा नाहटा (जैन), पत्नी-धनलक्ष्मी, पुत्र- जीवाशाह, पुत्री- जागीशाबाई, पौत्र- अक्षयराज।

❋ जन्म : आषाढ़ शुक्ल 10, वि.सं. 1604, (28 जून, 1547), चित्तौड़गढ़ (राज.)

❋ भामाशाह महाराणा प्रताप से उम्र में 7 वर्ष छोटे थे। दोनों अभिन्न मित्र थे।

❋ भामाशाह का पूरा कुटुम्ब देशप्रेमी और देशसेवी था। उनके पिता भारमल्ल रणथम्भोर के किलेदार रहे, तब तक रणथम्भोर पर मुगलों का आधिपत्य नहीं हुआ। राणा उदयसिंह ने भारमल्ल को 1553 ई. में एक लाख के पट्टे की जागीरी दी। भामाशाह के पिता भारमल्ल चित्तौड़गढ़ की रक्षार्थ लड़ाई में शहीद हो गये थे।

❋ भामाशाह के परिवार ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी राष्ट्रसेवा का व्रत निभाया। भामाशाह के बाद उनके पुत्र जीवाशाह तथा पौत्र अक्षयराज ने भी मेवाड़ के प्रधानमंत्री के रुप में निष्ठापूर्वक देशसेवा की।

❋ भामाशाह-परिवार विपुल सम्पदा का स्वामी था। तत्कालीन परम्परा के अनुसार उन्हें विवाह के उपलक्ष्य में भी 18 करोड़ की धनराशि प्राप्त हुई।

❋ इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार भामाशाह ने प्रताप को इतना निजी/पैतृक धन समर्पित किया जिससे 25 हजार सैनिकों/व्यक्तियों का 12 वर्षों तक बिना ब्याज निर्वाह हो सके।

❋ इतिहासविद् रामवल्लभ सोमानी ने लिखा-''अगर यथासमय धन की सहायता भामाशाह परिवार नहीं देता तो संभवतः प्रताप मेवाड़ छोड़कर चले जाते। यहां का इतिहास कुछ और ही होता। भामाशाह की सेवाओं में मेवाड़ की ही रक्षा नहीं हुई, अपितु समस्त हिन्दू जाति का महान उपकार हुआ।''

❋ जैन धर्म के प्रति भामाशाह और उनके पूरे परिवार की अटूट आस्था थी। लाखों लोगों को उन्होंने न्याय-नीति और अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। वे उदार धार्मिक सहिष्णु थे।

❋ भामाशाह ने कई बार ओसवाल न्यात को भोज दिया और बावनियाँ (52 गाँव) जिमाई। कई बार ब्राह्मण एवं अन्य समुदायों को चौरासियाँ जिमाई।

❋ भामाशाह ने अकबर के वैभवशाली जीवन के प्रलोभन को ठुकरा कर परम देशभक्ति और वफादारी का परिचय दिया।

❋ भामाशाह दानवीर के साथ युद्धवीर भी थे। भामाशाह तथा उनके भाई ताराचन्द हल्दीघाटी युद्ध में सेनापति के रुप में लड़े थे जिस मोर्चे पर वे थे, वहां से मुगल सेना छः कोस तक भागती रही। इतिहास में 'मेराथान' के नाम से प्रसिद्ध दिवेर युद्ध-विजय में भामाशाह की प्रमुख भूमिका रही।

❋ भामाशाह व ताराचन्द साहित्यप्रेमी भी थे। वे विद्वानों कवियों तथा कलाकारों को खूब प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखवाई।

❋ भामाशाह के अनुज श्री ताराचन्द ने सादड़ी नगर बसाया। कहते हैं कि ताराचन्द भी अपने पिता भारमल्ल की तरह देश के लिए शहीद हो गए थे।

❋ त्याग और तलवार के धनी भामाशाह का अंतिम काल उदयपुर में व्यतीत हुआ। 52 वर्ष 7 माह की आयु में माघ शुक्ल 11, वि.सं.1656 (27 जनवरी 1600) को भामाशाह का निधन हो गया।

❋ भामाशाह का मेवाड़ में कितना सम्मान था, इस बात का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उनका अंतिम संस्कार उस स्थान पर हुआ, जहां मेवाड़ के महाराणाओं का ही अंतिम संस्कार किया जाता था। महाराणा अमरसिंह की छतरी के सामने भामाशाह की छतरी (समाधि) उदयपुर में आयड़ स्थित महासतियाँ में बनी हुई है।

❋ इतिहासकारों ने भामाशाह को ''मेवाड़ उद्धारक'' (Saviour of Mewar) कहा है।

❋ डॉ. कालिकारंजन कानूनगो ने लिखा- ''सम्पूर्ण राजपूताने में भामाशाह का नाम उतने ही प्रेम और सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है, जिस प्रकार महाराणा प्रताप का।''

❋ भारत सरकार द्वारा 31 दिसंबर 2000 को भामाशाह के सम्मान में तीन रुपये मूल्य का डाक टिकिट जारी किया गया। डाक टिकट में भामाशाह के लिए ''राजा'' लिखा गया।

❋ 21 अगस्त 2007 को भारतीय संसद भवन में महाराणा प्रताप की प्रतिमा स्थापित की गई। अश्वारुढ़ प्रताप के साथ उनके चार सहयोगियों की प्रतिमाएं भी स्थापित की गई। उन सहयोगियों में उनके परम सहयोगी दानवीर भामाशाह की प्रतिमा भी स्थापित की गई।

❋ भामाशाह उज्ज्वल चरित्रवान, आदर्श विचारवान धर्मानुरागी, सहिष्णु, सुवित्त प्रशासक, चतुर राजनीतिज्ञ, विश्वसनीय सलाहकार, सक्षम व दूरदर्शी व्यवस्थापक साहसी एवं कुशल योद्धा, बलिदानी, दानवीर, कर्त्तव्य परायण, नीति-निपुण एवं देशभक्त के रुप में पहचाने जाते हैं।

गुरु के जन्म से हुआ मेरा जन्म सार्थक

✽ डॉ. सुभाष जैन

नहीं चुका सकता गुरु का ऋण-

मैंने भगवान को तो देखा नहीं है लेकिन मुझे सदैव गुरु को देखकर भगवत्ता का प्रमाण मिलता है। जब मैं गुरु का स्मरण करता हूं तो प्रतीत होता है कि मैंने भगवान का स्मरण किया है और जब गुरु को देखता हूं तो लगता है कि भगवान को देख रहा हूं। मेरे जीवन पर इतना गुरु ऋण है कि एक जन्म तो क्या अनेक जन्मों में भी मैं गुरु के ऋण को नहीं चुका सकता। मुझे न जाने क्यों इस अनुभूति पर आश्चर्य होता है कि ज्यों-ज्यों जीवन बीतता जा रहा है, त्यों-त्यों मेरा गुरु प्रेम अनायास और अधिक प्रगाढ़ होता जा रहा है। आयु की परिवक्वता मुझे और अधिक तीव्र गति से गुरु के समीप और उनके सानिध्य की आवश्यकता आकर्षित कर रही है।

मेरे जीवन में जब भी कोई अवरोध आए, तो उस समय मुझे लगा कि मेरे जीवन का यह सबसे कठिन समय है लेकिन मेरे इस बुरे समय को सौभाग्य में बदलने वाला यदि कोई थे वह थे **मेरे गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा।** उन्होंने मेरे ही नहीं अनेकों के दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला है। हाथों की लकीरें भी बदली जा सकती है गर सिर पर मेरे गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का हाथ हो।

मैं कह सकता हूं कि जब-जब मेरा आत्मबल कमजोर हुआ तब-तब गुरुदेव मेरे लिये प्रकाश की एक उज्वल-स्वर्णिम रश्मि बनते दिखाई दिए। उन्होंने मुझे अपने चरणों में स्थान दिया और मुझे गले लगाकर जीवन के पथ पर आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया। जिस तरह एक छोटे बच्चे को अपनी माँ की याद आती है, वैसे ही मुझे भी अपने गुरु की याद आती है। मैं तो गुरु के निकट हूं और उनको आज भी अपने समीप पाता हूं। आपको एक राज की बात बताऊ मैं जब भी दिन की शुरुवात करता हूं, उसका प्रारंभ गुरु के स्मरण से ही करता हूं यदि आचार्यश्री मेरे जीवन को प्रकाश से आलोकित न करते तो मैं ज्ञानहीन, दीनहीन ही रह जाता।

सिर्फ में ही नहीं बल्कि हर व्यक्ति के जीवन में गुरु का वैसा ही महत्व होता है जैसे हमारे सौर मण्डल के नौ ग्रहों के लिये सूर्य का महत्व होता है। जिस तरह पृथ्वी से लेकर मंगल, बुध और शुक्र से लेकर सभी ग्रह अपने गुरुदेव सूर्य के चक्कर लगाते रहते हैं और उसी से प्रकाश उर्जा ग्रहण करते हैं और यदि सूर्य से प्रकाश प्राप्त न हो तो पृथ्वी सहित तमाम ग्रहों पर अंधकार व्याप्त हो जाए ठीक वही स्थिति हमारी है, हम जो कुछ है अपने गुरु की वजह से ही है, हम अपने गुरु से ही प्रकाश और शक्ति ग्रहण करते है। यदि आचार्यश्री मेरे जीवन को प्रकाश से आलोकित न करते तो शायद मैं ज्ञानहीन और दीन-हीन ही रह जाता। मैं तो सदैव मेरे गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के दिखाए पथ पर चलता हूं, उनकी हर सीख आदेश मानकर आत्मसात करता हूं।

गुरु के पथ को कभी न भुलाना-

आपसे भी यही आव्हान करुंगा कि आपने अपने जीवन में जिसे भी सच्चे मन से गुरु बनाया हो, उनके दिखाए पथ को कभी विस्मृत न करना क्योंकि यही एक पथ है जिस पर चलकर आपको आत्मिक सुख प्राप्त होगा, उन्हीं के आशीष को प्राप्त कर आप गुरु-ज्ञान के शीतल सागर में गोते लगा सकते हो। गुरु का हृदय इतना सरल, सहज और सौम्य होता है कि वे हमारी लाख त्रुटियों और जाने-अनजाने हुई गलतियों को तत्काल ही क्षमा कर देते हैं। लेकिन यह हमारा भी दायित्व बनता है कि गुरुपथ पर चलते हुए त्रुटियों का कोई मौका आने ही न दें।

आचार्यश्री ने मेरी कमियों और दुर्बलताओं को अनदेखा किया और मुझे अपना आत्मीय बना कर परम उपकार किया चैत्र वदी-3 को मेरे मेरे गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का अवतरण दिवस है। मैं कह सकता हूं कि मेरे गुरुदेव के जन्म ने मेरा जन्म सार्थक कर दिया। मेरा गुरु से ऐसा नाता जुड़ा कि मुझे हर क्षण, हर पल सदैव गुरु का ही ध्यान रहता है। मैं उनके बिना अपने जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकता।

अपने महान तेजस्वी मेरे गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के जन्म जयंति अवसर पर उनका पुण्य स्मरण कर उनके श्रीचरणों में नमन करता हूं तथा संकल्प लेता हूं कि उनके दिये संस्कारों तथा शिक्षाओं को आत्मसात कर सदैव उनके दिखाये पथ पर चलकर स्वयं के एवं जगत के सभी जीवों के कल्याण में जुटा रहूंगा।

मेरा अंनतों प्रणाम !

चौदह पूर्व का सार महामंत्र नमस्कार

जैन आगम ज्ञान का अथाह महासागर है। इतना विस्तृत एवं सुव्यवस्थित विशाल ज्ञान भण्डार अपने मौलिक रुप में अन्य किसी धर्म दर्शन के पास उपलब्ध होना,ऐसा प्रतीत होता नहीं है। जैनागमों में द्वादशांगी का सार सामायिक का होना उल्लेखित है। द्वादशांगी में जो अंतिम अंग दृष्ट्विाद है और जिसका विस्तार चौदह पूर्व है। इन चौदह पूर्व का सार नमस्कार महामंत्र है।

चौदह पूर्व इस प्रकार है-

1- श्री उसाद पूर्व, 2- श्री आग्रायणी पूर्व, 3- श्री वीर्यप्रवाद पूर्व, 4- श्री अस्तिप्रवाद पूर्व, 5- श्री ज्ञान प्रवाद पूर्व, 6- श्री सत्यप्रवाद पूर्व, 7- श्री आत्मप्रवाद पूर्व, 8- श्री कर्मप्रवाद पूर्व, 9- श्री प्रत्याख्यान पूर्व, 10- श्री विद्या प्रवाद पूर्व, 11- श्री कल्याण प्रवाद पूर्व, 12- श्री प्राणवायु पूर्व, 13- श्री क्रियाविशाल पूर्व और 14- श्री लोकबिन्दुसार पूर्व।

पूर्वो का ज्ञान लब्धिजन्य-आत्म शक्ति विशेष से उत्पन्न होता है किन्तु यदि पूरे चौदाह पूर्वो के ज्ञान को लिपिबद्ध किया जाये तो इतनी स्याही लगती है कि सामान्य व्यक्ति के लिये उसकी कल्पना भी अविश्वसनीय प्रतीत होगी। यथार्थ में पूरे विशाल सरोवर से भी अधिक स्याही उसे लिपिबद्ध करने को चाहिये।

प्रथम पूर्व के ज्ञान को लिपिबद्ध करने में अम्बावाड़ी सहित एक हाथी की पूरी ऊंचाई जितनी सुखी स्याही के ढेर को गीला कर रखा जावे तब उतनी स्याही की जरुरत होती है, लिखने में। इससे अगले दूसरे पूर्व को लिखने में दो हाथी, तीसरे में चार, चौथे में आठ, पाँचवें में सोलह, छठे में बत्तीस, सातवें में 64, आठवें में एक सौ अठाईस, नौवें में दो सौ छब्बीस, दसवें में पांच सौ बारह, ग्याहरवें में एक हजार चौबीस, बारहवें में दो हजार अड़तालीस, तेरहवें में चार हजार छन्नु और चौदहवें में आठ हजार एक सौ बानवें। इन सबका संयुक्ति किया जाए तो 1+2+4+8+16+31+64+128+256+512+1024+ 2048+4096+8192+16383 विशाल हाथियों के डूब जाने जितनी सुखी स्याही को गीली कर रखे जाने पर ही विशाल ज्ञान भंडार को लिखा जा सकता है, उतने विशाल ज्ञान भण्डार को चौदह पूर्वो का ज्ञान कहते है।

इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि यह संपूर्ण ज्ञान सर्वज्ञ-सर्वदृष्य तीर्थकर भगवंतों के प्रथम शिष्यों को मात्र तीन शब्द- 'उप्पन्ने इ वां, विगमें इ वा, ध्रुवे इ वा' के उच्चारण से हो जाता है। इससे भी महाआश्चर्य यह है कि इस पूरे ज्ञान का परावर्तन लब्धि सम्पन्न महामुनिराज अन्त मुर्हूत- अड़तालीस मिनिट में कर लेते थे।

भद्रबाहु ने बहुश्रुत का चतुर्दशपूर्वी किया है। बहुश्रुत के जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट ये तीन भेद किये हैं। जघन्य- निशीथ शास्त्र का ज्ञाता, मध्यम-निशीथ से लेकर चौदह पूर्व के पहले का ज्ञाता और उत्कृष्ट-चौदह पूर्वो का वेत्ता।

गणिवर्यश्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. के आयंबिल संकल्प की पूर्णाहुति श्री भोपावर महातीर्थ की प्रतिष्ठा के साथ हुई

भोपावर- पूज्य आचार्य भगवंत श्री मालवभूषण गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा. की श्री भोपावर महातीर्थ की प्रतिष्ठा सम्पन्न होने तक आयंबिल तप की आराधना के संकल्प की पूर्णाहुति महातीर्थ की प्रतिष्ठा होने की पूर्ण हो गई। दिनांक 27 फरवरी को आपश्री के आयंबिल तप का पारणा 100 से अधिक साधु- साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागरसूरीजी महाराजा एवं आचार्यश्री अशोकसागरसूरीजी म.सा. आदि अनेक आचार्य भगवंतों के द्वारा करवाया गया। आपश्री के संकल्प की पूर्णाहुति पर श्री रमणभाई मोंटेक्स ने हर्ष व्यक्त किया और आपको अपने जीवन में गुरु का स्थान दिया है।

सांगली में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव

सांगली- श्रमणी गणनायक आचार्य भगवंत श्री अभयशेखरसूरी म.सा.की निश्रा में श्री अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 4 मार्च को होने जा रहा है। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ आदि जिनबिम्ब के साथ दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरीजी की प्रतिमा प्रतिष्ठा होगी।

जैन कथा साहित्य में भगवान श्रीशांतिनाथ दादा का चरित्र

*आचार्य श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

जैन शास्त्रों में युगप्रधान आचार्यश्री आर्यरक्षित सूरीश्वरजी म.सा.के दशपुर नगर मंदसौर में आगमों को चार विभाग में विभाजित किया था।

उसमें द्रव्यानुयोग, गणितायोग, चरणकरणानुयोग एवं धर्मकथानुयोग के नाम से चार विभाग विख्यात हुए।

जीव-अजीव आदि पदार्थों का समावेश द्रव्यानुयोग में किया गया। जबकि सूर्य-चन्द्र आदि से संबंधित गणित वाले पदार्थों का समावेश गणितानुयोग कहलाया। मुनि जीवन के चरित्र से संबंधित बातों का कथन चरणकरणानुयोग में किया गया एवं जैन आगम साहित्य की कहानियों का संग्रह जिसमें किया गया वह धर्म कथानुयोग कहलाया।

जैन दर्शन के चार अनुयोगों में से कथानुयोग याने जैन इतिहास या कथासाहित्य खूब ही सरल एवं बोधपद होने से लोकप्रिय भी है। इसमें मानस स्वभाव के विविध चित्र, शिक्षणपाठ एवं अनुकरणीय गुणों की प्राप्ति भी सहज हो जाती है।

व्यवहार, धर्म, नीति तथा अन्य विषयों का रसप्रद वर्णन जैन कथा साहित्य में से सविशेष प्राप्त होता है, सर्वज्ञ भाषित शास्त्रों को पूर्वाचार्यो द्वारा सत्य एवं प्रमाणिकता से सावधानी पूर्वक किसी भी त्रुटि रहित विस्तार पूर्वक वर्णन करने के कारण आत्मिक आनंद की प्राप्ति होती है। जैन कथा साहित्य उपदेश के लिए प्रबल एवं सरल साधन है।

जो साहित्य मनुष्य को मानवता का पाठ पढ़ाता हो, आत्म कल्याण की प्रवृत्ति की तरफ आगे कुछ कराता हो तथा मैत्री-प्रमोद-कारुण्य माध्यस्थ भावनाएं प्रगटाकर परमात्मा बनने का मार्ग प्रशस्त करता हो वही वस्तुतः सच्चा साहित्य है। क्योंकि जैन साहित्य के रचयिता महापुरुष निस्वार्थी एवं भवभीरु थे। उन्होंने कहीं भी अतिश्योत्तियों को स्थान नहीं दिया है।

जैन पूर्वाचार्य साहित्यकार आचार्य मुनिभगवंत, समयज्ञ ज्ञानी, विद्वान होने के कारण उनके कथा साहित्य में उस समय की लोकरुचि, लोक भोग्य भाषा, वस्त्रों का परिधान एवं अन्य जानकारियां अच्छे प्रमाण में उपलब्ध होती है क्योंकि ज्यादातर कहानियाँ इतिहास ही हैं।

जैन कथा साहित्य में तीर्थकर भगवंतों के चरित्र उत्कृष्ट स्थान रखते हैं। इनका बार-बार मनन एवं पठन करने से धर्मभावनाएं जल्दी जागृत हो जाती है।

इतना ही नहीं बल्कि- उस समय के द्रव्य क्षेत्र-काल-भाव के यथारुप सुन्दर वर्णन, पवित्र संस्कार, उत्तमोत्तम प्रणालिका, राज्य व्यवहार नीति-नियम-रुढ़ियाँ आदि विविध जानने एवं प्रभुजी के कल्याणकों के वर्णन के साथ ही भूत-भविष्य की अनुपम कहानियां अद्भूत प्रेरक बल प्रदान करती है।

प्रभुजी के पंचकल्याणकों में देव-दानव-मानवों द्वारा की गई अपूर्व भक्ति एवं केवलज्ञान प्राप्ति के बाद समवसरण में विराजमान होकर दी गई उत्तमोत्तम देशना से मिलते बोधपाठों के कारण ही कथा साहित्य में तीर्थकरों के चरित्र श्रेष्ठ एवं ज्येष्ठ माने गए हैं।

इस अवसर्पिणी काल में हुए सोलहवें तीर्थकर श्री शांतिनाथ प्रभु का अद्भूत अलौकिक आश्चर्य उत्पन्न करें ऐसा चरित्र प्रस्तुत किया गया है।

भगवान शांतिनाथ जब माता के गर्भ में आए तभी कुरुदेश में व्याप्त मारी-मरकी के रोग की शांति होने की बात प्रभुजी की प्रभावकता बताते हैं। साथ ही प्रभुजी अद्भूत दया के सागर, अतुल एवं प्रबल पुण्य के भण्डार दृष्टिगोचर होते हैं।

रचनाकार आचार्य भगवंत ने इस चरित्र में प्रभुजी के बारह भवों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि उन तारक तीर्थकरों का पुण्य कैसा प्रबल होता है। मेघरथ राजा के भव में एक सामान्य कबूतर जैसे तिर्यच की रक्षा के लिए किया गया बलिदान अद्भूत एवं अनुपम होने के साथ-साथ मैत्री भाव की पराकाष्ठ बताई है रचनाकार महर्षि ने।

रचयिता महापुरुष ने भवों से संबंध रखने वाली अनुपम कहानियां प्रस्तुत कर चरित्रग्रंथ को रोचक बनाने का प्रयास किया है।

जैन शास्त्राकार भगवंत भव की गणना सम्यक्त्व प्राप्ति से करते हैं उस दृष्टि से रचनाकार ने श्रीषेण राजा के भव से

सम्यक्त्व पाने के कारण चरित्र का प्रारंभ वहां से किया है एवं बारहवें भव में मोक्ष की प्राप्ति बताई गई है।

बारह भवों में- 1- श्रीषेण राजा, 2- युगलिक, 3- सौधर्म देवलोक में देव, 4- वैताढ्य पर्वत पर अमिततेज राजा, 5-प्राणतदेवलोक में देव, 6- महाविदेह में अपराजित राजा, 7-अद्युतेन्द्र, 8-चक्रवर्ती वज्रायुध, 9- तीसरा ग्रैवेयक, 10- मेघरथ राजा, 11-सर्वार्थसिद्ध विमान में एकावतारी देव, 12-श्री शांतिनाथ प्रभु चक्रवर्ती एवं तीर्थंकर के भवों का समावेश किया गया है।

भगवान शांतिनाथ की आत्मा ने उत्तरोत्तर विकास किया एवं कभी भी अधोगति या तिर्यंच गति प्राप्त नहीं की बल्कि उत्कृष्ट पद्वियां प्राप्त कर एक कीर्तिमान (रेकार्ड) कायम किया है।

आश्चर्य हो ऐसे भगवान शांतिनाथ ने अपने बारह भवों में दो-दो बार तीर्थंकर प्रभु के पुत्र बनने का सौभाग्य पाया है। इतना ही नहीं दो-दो बार स्वयं चक्रवर्ती की महान पदवी के भक्ति बने हैं। आप बलदेव भी एक बार बने एवं तीर्थंकर की पदवी को आप पाए ही हैं। ऐसी उत्तमता, उच्चता, श्रेष्ठता अपूर्वता, पुण्यवान तीर्थंकर आत्मा को ही प्राप्त हो सकती है। अंतिमभव में आप एक भव में जिनेश्वर और चक्रवर्ती पदवी पाकर अमर हो गए हैं।

इन महान पुण्यवान तीर्थंकर प्रभु के चरित्र से एक बात और ध्यान में आती है कि आपने किसी भी प्रकार के उपसर्ग से रहित ही केवलज्ञान पाया है। इसका मतलब यह है कि आपने सम्पूर्ण भवचक्र में किसी भी जीवमात्र से बैर भाव नहीं किया है। यह सामान्य बात नहीं है। यही कारण है कि शांतिनाथ प्रभु के नाम से आज भी सभी उपद्रव एवं रोगों की शांति होती है।

भगवान शांतिनाथ जहां उत्पन्न हुए हस्तिनापुर नगरी भी बहुत ही प्राचीन एवं भगवान आदिनाथ के पौत्र द्वारा बसाई गई नगरी है।

भगवान ऋषभनाथ के सौ पुत्र थे। उनमें से इक्कीसवें पुत्र का नाम कुरु था। इसी कुरुराजा के नाम से देश का नाम कुरुदेश पड़ा एवं कुरुक्षेत्र की राजधानी हस्तिनापुर थी। कुरु के पुत्र हस्ति के नाम से राजधानी का नाम हस्तिनापुर या गजपुर रखा गया था।

इस हस्तिनापुर नाम का उल्लेख कई जैन आगमों में भी आया है। ठाणांग सूत्र में इस नगरी का उल्लेख किया गया है। यह नगर कुरु के पुत्र हस्ति ने बसाया ऐसा कई तीर्थकल्प आदि ऐतिहासिक ग्रंथों में भी आता है। इस नगर के अन्य नाम गयपुर, गयनगर, हत्थिणापुर आदि मिलते हैं।

वहां के राजा विश्वसेन श्री शांतिनाथ प्रभु के पिता थे ऐसा उल्लेख वसुदेव हिंडी ग्रंथ में भी बताया गया है। कुछ बौद्ध साहित्य में भी कुरुदेश का नाम आया है।

पाली साहित्य में आठ योजन विस्तारवाली हस्तिनापुर नगरी का उल्लेख मिलता है। वैसे वसुदेव हिंडी में इस नगरी को गंगा नदी के किनारे पर होना बताया गया है। किंतु आज हस्तिनापुर के निकट गंगा नदी नहीं है। इसका कारण यह है कि कुछ समय से गंगा नदी का प्रवाह बदल गया है। नदियों के प्रवाह भूकम्प आदि से बदलने का उल्लेख मिलते हैं। ओरिस्सा की गंदकी नदी 60 मील दूर चली गई का प्रत्यक्ष प्रमाण भी उपलब्ध है।

वर्तमान में हस्तिनापुर बूढ़ी गंगा नदी की वर्तमान धारा से सात मील दूर है एवं बूढ़ी गंगा गढ़मुक्तेश्वर गांव के पास गंगा में मिलती है। हस्तिनापुर बूढ़ी गंगा के उच्च किनारे पर वर्तमान में मवाना गांव से 6 मील और मेरठ से 22 मील उत्तर-पूर्व तरफ है। मवाना गांव तहसील का परगना है। उसके उत्तर तरफ की पट्टी पांडवों की कहलाती है। गढ़मुक्तेश्वर उस समय हस्तिनापुर का एक मोहल्ला था। हस्तिनापुर अभी तो मुक्त गंगा से भी बहुत दूर हो गया है।

महाभारत में भी हस्तिनापुर भारत वर्ष का एक अतिप्राचीन एवं ऐतिहासिक नगर माना गया है। यहां भगवान शांतिनाथ का च्यवन-जन्म-दीक्षा, केवल ज्ञान ये चार कल्याणक होने से इसे तीर्थ क्षेत्र का स्थान प्राप्त है। इतना ही नहीं यहां श्री कुंथुनाथ प्रभु एवं अरनाथ प्रभु के भी चार-चार कल्याणक हुए हैं।

इस हस्तिनापुर नगरी में सोलहवें-सत्तरहवें-अट्ठारहवें तीर्थंकरों के जन्म के साथ-साथ पांचवें-छठे एवं सातवें चक्रवर्तियों का जन्म भी यहीं हुआ है। क्योंकि ये तीन चक्री भी दीक्षा लेकर तीर्थंकर बने थे।

प्रभु आदिनाथ को इक्षुरस से श्रेयांसकुमार ने अक्षय तृतीया को वर्षीतप का पारणा कराकर दान प्रथा का प्रारंभ भी इसी नगरी से किया था। भगवान मल्लीनाथ इस नगरी में पधारे थे का उल्लेख भी मिलता है।

आठवां सुभुम चक्रवर्ती एवं सनतकुमार चक्रवर्ती भी इसी नगरी की पैदाईश है। अजैनों में विख्यात परशुराम भी यहीं

उत्पन्न हुए थे।

गंगा गृहपति, कार्तिक सेठ, विष्णुकुमार मुनि आदि भी इस नगरी के रईस थे।

भगवती सूत्र में हस्तिनापुर के बलराजा के पुत्र महाबलकुमार का उल्लेख आया है। निरयावली, अनुत्तरों ववाईदसाओं आदि आगमों में इस नगरी का उल्लेख है।

इस नगरी में तीर्थकरों, चक्रवर्तियों, सत्वशाली पुरुषों भव्यात्मा एवं पुण्यात्माओं का जन्म होने के कारण यह नगरी तीर्थभूमि कहलाती है एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अतिप्राचीन नगरी है।

इस चरित्र ग्रंथ के लेखक का नाम पूज्य अजीतप्रभाचार्य है। उन्होंने यह 4889 श्लोक प्रमाणमूल से इस शांतिनाथ चरित्र की रचना की है। संपूर्ण चरित्र संस्कृत भाषा में लिखा गया है।

इस चरित्र की प्रशस्ती से ज्ञात होता है कि यह तीर्थकर चरित्र अजीतप्रभाचार्यजी महाराज ने संवत् 1384 के आसो सुदी-13, सोमवार को लिखा है।

राजगृही की आन बान व शान

जहां श्रीमहावीर स्वामी ने नालंदा पाड़ा में चौदह चार्तुमास किये। जहां श्रेणिक राजा व उनका पौत्र उदायी राजा ने (एक घर में दो व्यक्तियों ने) तीर्थकर नाम कर्म उपार्जित किया। जहां बत्तीस दोष रहित सामायिक करनेवाला पुणीया श्रावक निवास करता था। पत्नी के चुनौती भरे शब्द सुनकर धन्नाजी संयमी बने। जीजाजी की आवाज सुनकर शालिभद्र संयमी बने। 99 करोड़सुवर्ण के स्वामी जंबुस्वामी 500 चोर एवं आठ पत्नी व उनके स्वयं के माता पिता के साथ संयमी बने (527 के साथ दीक्षा)। श्रेणिक राजा के सेचनक हाथी को नंदिषेण मुनि ने शांत किया। श्रीवीर प्रभु की वाणी सुनकर रोहिणीया चोर का पतन से उत्थान हुआ। श्रीमुनिसुव्रत स्वामी के चार कल्याणक हुए। नंदमणीयार का जीव मेंढक समवसरण तरफ जाते हुए श्रेणिक के घोड़े के नीचे मरकर दो गुंदुक देव बना। श्रीगौतम स्वामी आदि ग्यारह गणधर की निर्वाण यह (भूमि) धरा।

ग्यारहवें चक्रवर्ती की जन्म भूमि। जहां कि निवासिनी दृढ़सम्यक्त्व धारिणी सुलसा आने वाली चौविशी में निर्मम नाम के तीर्थकर बनेगी। ऐसी पुण्य भूमि है यह।

श्रावक के 21 गुण

1- अक्षुद्र- गंभीर सूक्ष्मदर्शी, परोपकारता, उदार।

2- रुपवान- सुन्दर, पांचों इन्द्रियों से परिपूर्ण देह।

3-प्रकृति से सौम्य- स्वभाव में सौम्यतावाला, अल्पकषायी।

4- लोकप्रिय- आलोक-परलोक विरुद्ध कार्य नहीं करनेवाला, दान, विनय, शील वगैरह गुणयुक्त, धर्म में बहुमान उत्पन्न करानेवाला होने से लोकप्रिय बनता है।

5-अक्रूर- अनिर्दयी, दयावान।

6- पापभीरु- इहलोक-परलोक के दुःख एवं कष्टों के कारण रुप पापों से डरनेवाला, अपयश से डरनेवाला।

7- अशठ- सरल स्वभावी, विश्वासपात्र, प्रशंसा के योग्य दूसरे को नहीं ठगनेवाला।

8- दाक्षिण्यतावान- दूसरों के शुभ कर्मों में अपने कार्य का भोग देकर भी खड़े रहनेवाला, आप्त पुरुषों के कहने से धर्म प्रवृत्ति करनेवाला।

9- लज्जालु- शर्म से अकार्य नहीं करनेवाला, सदाचार का सेवन करनेवाला।

10-दयालु- सभी दुःखी जीवों के प्रति दया भाव का धारक।

11- मध्यस्थ-सौम्यदृष्टि- योग्य दृष्टि से धर्म स्वरुप का विचार करनेवाला।

12-गुणानुरागी- सद्गुणों के प्रति अनुरागी, निर्गुणी के प्रति अद्वेषी, गुणों का संग्राहक और प्राप्त हुए गुणों को मलीन न करनेवाला।

13-सत्कथ- महापुरुषों की कथा करने में एवं सुनने में रसयुक्त एवं विकथाओं से, निंदा से दूर रहनेवाला।

14-सुपक्षयुक्त- धर्मशील, सदाचारी, धर्म में अंतराय न करनेवाला कुटुंब परिवार से युक्त। इससे धर्म अच्छी तरह कर सकता है।

15- सुदीर्घदर्शी- परिणाम में सुंदर कार्य करनेवाला, बहुलाभ और अल्प क्लेश युक्त कार्य करने से लोकों में भी सम्मान प्राप्त करता है।

16-विशेषज्ञ- पक्षपात रहित वस्तु के गुण और दोष को जाननेवाला।

17- वृद्धानुगामी- उत्तम प्रकार के ज्ञान-आचरण से परिपक्व बुद्धिवालों का अनुसरण करनेवाला।

18- विनयवान- पूज्यजनों का विनय एवं बहुमान भाव का धारक, सम्यग्दर्शन यह मोक्ष का मूल है और उसका मूल विनय है।

19- कृतज्ञ - तत्व बुद्धि से धर्म गुरु को परोपकारी माननेवाला एवं उपकारी माता-पिता आदि सभी का उपकार मानकर प्रत्युपकार करने में भी तत्पर।

20-परहितकारी- सम्यक् प्रकार से धर्म मार्ग को जानकर दूसरों को धर्म मार्ग में जोड़नेवाला, स्थिर करनेवाला एवं प्रतिफल की अपेक्षा रखे बिना परोपकार करनेवाला।

21-लब्धलक्ष्य- आदरणीय और करणीय रुप में धर्म को माननेवाला, लक्ष्य निश्चित होने से धर्म शिक्षण के और योग्य ध्येय को सिद्ध करनेवाला।

संकल्प-सुमेरु आचार्यश्री

✻ डॉ. सुभाष जैन

प्रातः स्मरणी, सांय वन्दनीय चारित्र-गौरव अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी **गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा** के पावन सानिध्य से निर्मित मेरा जीवन आज दिग्विजय मुद्रा में खड़ा है, श्रम, संकल्प, साधना और समर्पण का समन्वय रसायन अपने में समाये अपनी पावन उर्जस्विततता से गुरुदेव ने मेरे जीवन को धन्य कर दिया है। गुरुदेव के सपनों और संकल्प की साकारता से इस जीवन को आगे चला रहा हुं अपने गुरु के संकेत, आदेश और आर्शीवाद के साथ मैं अपनी से शक्ति से अपनी जीवन शैली को गुरुदेव की आशा के अनुरुप बनाने में लगा हुं।

सत्यतः पृथ्वी मिट्टी से डरने वालों से जीवित नहीं है, उसे 'सोना बनाने वालों से जीवित है वे जिधर दृष्टि देते हैं, इतिहास उधर ही झुक जाता है ऐसे ही प्रणम्य और चरेण्य लोह पुरुष तापित को स्निग्ध कर देते हैं, प्यासे को चैन देते हैं, सूखे हुए अधरों पर मुस्कान एवं मानवता को विजय कामना ऐसे ही जयवन्त हुतात्माओं की कीर्ति प्रेरणा पद एवं चिरस्थायी होती है कीर्ति वह प्रकाश है जो व्यक्ति के उज्ज्वल गुण कर्मों को स्वतः प्रकाशित करता है, पूर्व संचित कर्मों तथा कठिन संघर्षों से प्राप्त कीर्ति स्तंवन किसी पुण्यात्मा के लिये ही संभव है। यह स्थायी वस्तु के रुप में युग-युगांतर तक अक्षुण्ण रहती है।

गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का हमारे सब के प्रति अनुराग भाव उद्ग्रीव था। आचार्यश्री जैसे अक्षर पुरुष की अक्षरता को मैंने अनेक बार अपने आंकिचन अर्ध्य अर्पित किए हैं उनका संतुलित व्यक्तित्व एवं ऐतिहासिक जीवन एक चलता फिरता आख्यान, आगम या यूं कहिए सर्गबद्ध महाकाव्य रहा है। वे साहसिक कल्पनाओं के धनी है, क्षर-अम्ल, विगलनकारी दाहक पसीने के गुणधर्म से परिचित थे , श्वेतांबर थे एक धूल के कण-कण के भी महत्व और शक्ति को समझते थे।

नदी-नद, कछार, पर्वतीय उठान और ढलान की पगडंडियों को अपनी नंगी पगतलियों से छू छेकर आगे बढ़ते रहना जानते थे, इसलिये बंजर पहाड़ी प्रस्तर खण्डों और उबड़-खाबड़ कंटकाकीर्ण बीहड़ को वे सुरम्य उद्यान ही नहीं मानव भाग के बहुविध विकास का कल्याण केन्द्र और जन-जन की आस्था का तीर्थधाम बनाने में सफल हो गये हैं। उन्होंने अपने वातल्य के निर्झर से ऐसी स्त्रितस्विनी बहाई जो हर हताश के लिये नवजीवन की आश किरण लेकर आई **गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा** ने हर बदहाल के खुशहाल का संकल्प लिया है तथा अपने सहज करुणा द्रवित बादल-व्यक्तित्व से **भोपावर जैसी अद्वितीय संरचना कराई है।** लोक जीवन में संतप्तों को देखकर उनकी न केवल संवेदना स्त्रवित हो उठती है अपितु कुछ कर देने की भी विछुत भी संचालित रहती है यह संत -श्रावक निवास सभी कुछ तो है-श्रावक-श्रमण, शिशु, वृद्ध, सभी के लिये तारक तीर्थ है यह।

वर्तमान भौतिक युग में जब जीवन मूल्य और संस्कार धुंधला रहे है तब भोपावर एक ऐसा उज्ज्वल स्थल है जहां दिग्भ्रान्त किंकर्तव्य विमूढ़ अंधेरे में भटके जब यहां तीर्थाधिपति श्री शांतिनाथ दादा के १ दर्शन करेगें तो अपनी जिंदगी को संवार सकेंगे, सज्ञित कर सकेंगे।

सचमुच इस समत्त उपक्रम के परिप्रेक्ष्य में झलक रहा है और छलक रहा है आचार्यश्री का वात्सल्य यहां का आधार है, लोकमंगल का अनुष्ठान है अहं से मुक्ति एवं सुचा शांतिमय सफल जीवन की कुंजी है, यह एक तपस्या है जो त्याग एवं उत्सर्ग से उर्जस्वित है, मानवता के इस चमन में यह सार्वभौम गुण ही सामरष्य है और यही रस सम्पूर्ण वसुधा को अपना कुटुम्ब बना लेती है, अजंन - प्रतिष्ठा का यह आयोजन भी हम सबका था और है, वसुधा पर रहनेवाले हर प्राणी का है।

गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा हमारे लिये चिरकाल तक जीवन्त तीर्थ रुप के रुप हमें भी कृतार्थ करते रहेंगे।

✻ आज मानवता धन्य हुई है। देकर तुम्हें जनम है, हे गुरुवर तुम्हें इस युग का, मन भरा नमन है, तुमने वैभव छोड़ा सदा, संयम का साथ निभाया, तेजवंत तुम सरस्वती की करते नित्य रहे पूजा, निज वाणी से चरण पखारे तुमसा और नहीं दूजा। हे धर्म सूर्य तुमको नमन, नवरत्न मनस्वी तुम्हें नमन, चुम्बक सा आकर्षक चारित्र तेजोमय मुद्रा तुम्हें नमन।

पूर्वजन्म की यात्रा का सत्य....

* मुनिश्री किशनलाल

जन्म है, जीवन है, मृत्यु है। जन्म की प्रत्येक प्रक्रिया का बारीकी से अध्ययन और अनुसंधान किया गया है और किया जा रहा है। गर्भ धारण की प्रक्रिया, धर्म का विकास क्रम, शिशु का जन्म और उसके जीवन की स्थितियां आज बहुत स्पष्ट है, फिर भी उनके संबंध में अनेक जिज्ञासाएं हो सकती है। उनका समाधान दर्शन और विज्ञान कर रहा है। जन्म का कारण केवल माता-पिता का संयोग नहीं हैं। उसमें उत्पन्न होनेवाले प्राणी का अपना प्रारब्ध भी होता है। उसके व्यक्तित्व को विकसित करने में देश, काल और परिस्थितियां भी अपना प्रभाव डालती है। प्राणी के जैसे जींस होते है, उसके अनुसार उनका व्यक्तित्व निर्मित होता है। एक ही गर्भ में एक ही समय उत्पन्न होनेवाले युगल की रुचि और जीवन-व्यवहार सर्वथा भिन्न देखा जाता है। एक सुखी होता है तो दूसरा दुःखी।

एक बुदबुदा पानी में उत्पन्न हुआ और विलीन हो गया। यदि वैसा ही जीवन है- तो वह उत्पन्न हुआ और विलीन हो जाएगा। जो कुछ है, वह इस जीवन तक है, उसके पश्चात कुछ भी नहीं। जन्म और मृत्यु की श्रृंखलाबद्ध आवृत्तियां होती रहती है या जो जन्म के समय आया, वह मृत्यु में विलय हो गया। अस्तित्व नाम का कोई तथ्य है या नहीं ? अस्तित्व नहीं तो किसका पूर्ण जीवन और किसका पुनर्जन्म ?

एक स्वस्थ होता है तो दूसरा अस्वस्थ। एक निर्धन तो दूसरा समृद्ध। एक अल्पज्ञ तो दूसरा विशेषज्ञ। एक स्वभाव मृदु और विनम्र है तो दूसरे का स्वभाव क्रूर और उददंड। ये ऐसे प्रश्न है जो व्यक्ति को सोचने के लिये विवश करते है कि क्या पूर्व जीवन है ? यदि पूर्व जीवन है तो वह कैसा रहा होगा ? उस जीवन का प्रभाव इस जीवन पर कितना और किस तरह उतरता है, क्यों उतरता है ? ऐसे प्रश्नों की श्रृंखला मन में चलती है। इन प्रश्नों के समाधान के उपक्रम ने मुझे पूर्व जीवन के अस्तित्व की खोज एवं प्रयोग के लिये उत्प्रेरित किया। मैं जैन परिवार में जन्मा जिसमें पूर्व जन्म के अस्तित्व की आस्था थी, सत्संग संयोग से अकस्मात् संन्यासी होने की भावना उद्भूत हुई। यौवन की दहलीज पर चरण रखते ही गृहस्थ जीवन में प्रवेश कराने की पूर्व तैयारी हो गई थी कि अकस्मात् संपूर्ण निर्णय बदला। गृहस्थ जीवन में प्रवेश करनेवाला नवयुवक संन्यासी हो गया। उभरता यौवन, अंतर्मुखता की ओर झांकता अंतःकरण अध्यात्म की विभिन्न पहेलियों को हल करने की उत्कट आकांक्षा ने योग साधना के विविध प्रयोग के लिये प्रवृत्त किया। कौन प्रेरक था, कैसे-कैसे विचित्र प्रयोग स्वतः हो रहे थे ? तर्क और समझ से पार जो कुछ हो रहा था, उसे स्वीकार नहीं कर सकता था तो अस्वीकृति देते भी मानस आंदोलित होता था। उनके कारणों की खोज में जाता हूं तब एक ही प्रत्युत्तर प्रगट होता कि यह सब संस्कारों का संयोग है एवं निमित्त है।

पुनर्जन्म विज्ञान के लिए चुनौतीः- पूर्व जीवन और पुनर्जन्म का प्रश्न न केवल आध्यात्मविदों के लिए गवेषणीय है, अपितु विज्ञान के लिए भी चुनौती भरा प्रश्न है। जीवन जिसे सब जी रहे हैं, उसका आदि और अंत क्या है ? क्या जीवन जन्म से प्रारंभ होकर मृत्युपर्यत तक है ? फिर उसका कोई अस्तित्व नहीं ? एक बुदबुदा पानी में उत्पन्न हुआ और विलीन हो गया। यदि वैसा ही जीवन है तो वह उत्पन्न हुआ और विलीन हो जाएगा। जो कुछ है, वह इस जीवन तक है, उसके पश्चात कुछ भी नहीं। जन्म और मृत्यु की श्रृंखलाबद्ध आवृत्तियां होती रहती है या जो जन्म के समय आया, वह मृत्यु में विलय हो गया। अस्तित्व नाम का कोई तथ्य है या नहीं ? अस्तित्व नहीं तो किसका पूर्ण जीवन और किसका पुनर्जन्म ? आत्मा की स्वीकृति से अस्तित्व की स्वीकृति होगी।

अस्तित्व की स्वीकृति ही अतीत और भविष्य का निरुपण करती है। अतीत और भविष्य की स्वीकृति वर्तमान को उज्जीवित करती है। अतीत, वर्तमान और भविष्य की स्वीकृति ही आत्मा के अमरत्व की उद्घोषणा करती है। आत्मा है, उसकी स्वीकृति अनुभव के प्रबोधन से हो सकती है। अनुभव स्व संवेद्य है। उससे ही पूर्व जीवन और पुनर्जन्म का बोध किया जा सकता है।

प्रबोधन तर्क की बजाय साक्षात् अनुभव से अच्छी तरह जाना जा सकता है। इसकी संभावना का स्पष्टनिरुपण भगवान महावीर ने 'आचारांग सूत्र' में किया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने आचारंग' के भाष्य में शोध-पूर्ण चर्चा की है। पूर्व जीवन के स्मरण को जाति-स्मृति की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

जाति-स्मृति के तीन कारणः-

1- स्वस्मृति- बालक को सहज रुप से अपनी मति से जाति-स्मृति उत्पन्न हो जाती है।

2- पर व्याकरण- आप्त पुरुष, तीर्थंकर आदि के निरुपण से जाति स्मृति उत्पन्न हो जाती है।

3- दूसरों से सुनकर- ज्ञानी व्यक्ति अथवा दूसरे के द्वारा किसी विशेष स्थिति घटना सुनकर जाति-स्मृति उत्पन्न हो जाती है।

जाति -स्मृति : पूर्व जीवन का स्मरण है। यह स्मृति की एक स्थिति है। हमारे मस्तिष्क में लाखों घटनाएं स्मृति कोष में अंकित है, किंतु वे सभी स्मृति में प्रगट नहीं होती है। वे स्मृति कोष में संरक्षित है। प्रसंगवश वैसी अथवा उसके सदृश किसी घटना का उल्लेख किसी से सुना कि वह अंकित स्थिति प्रगट हो जाती है। उदाहरणार्थ कोई कीमती वस्तु (हीरे की अंगूठी) आपकी अलमारी के दराज में रखी हुई है। आपके ध्यान में नहीं है। जब दूसरे व्यक्ति ने अपनी अंगूठी की चर्चा की, आपको अपना भवन, कमरा, अलमारी, उसमें रखी अंगूठी की स्मृति सहज ही हो जाती है। ऐसे ही पूर्व जीवन की जब कोई परिचित घटना सामने आती है, व्यक्ति असमंजस में पड़ जाता है, पर जब एकाग्र होता है, उसे सहज की वह स्थिति स्मरण हो जाती है। पूर्व जीवन की घटना का स्मरण होने के अनेक कारण है। मूलतः स्मृति पटल पर अंकित स्थितियों का प्रकटीकरण होता है। यह मति ज्ञान की भी अभिव्यक्ति है। जाति-स्मृति के इस साक्षात में व्यक्ति पूर्व स्थितियों को टीवी के परदे पर आ रहे 'सीरियल' की तरह देखता है। जैसे कोई प्रौढ़ व्यक्ति अपने यौवन एवं बाल्य अवस्था को स्मृति पटल पर लाता है और उन घटनाओं को साक्षात होता है। मनमाने समनस्क प्राणी को ही यह साक्षात होता है। बिना मनवाले प्राणियों में जाति-स्मृति नहीं होती है, क्योंकि जाति-स्मृति के प्रगट होने में उन्नत मस्तिष्क की आवश्यकता रहती है। समनस्क अवस्थावाले प्राणी जाति-स्मृति से अपने पिछले नौ जन्मों को जान सकते हैं। ये जन्म मनुष्य के ही हों, यह जरुरी नहीं। बीच में दूसरे प्राणी का जीवन भी आ सकता है। उनमें भाषा आदि का विकास नहीं होता, अतः उनके जीवन की घटना अथवा अवस्था से ही परिचित हो सकते हैं, वार्तालाप नहीं किया जा सकता।

पूर्व जन्मों का संसर्गः-

भगवान महावीर के जीवन प्रसंगों में जाति-स्मृति की अनेक घटनाएं स्पष्ट है- गणधर गौतम ने भगवान महावीर ने प्रश्न किया ? मुझे केवल-ज्ञान उत्पन्न नहीं हो रहा है जबकि मेरे द्वारा दीक्षित मुनियों को केवल-ज्ञान उत्पन्न हो जाता है। भगवान ने कहा, गौतम ! तेरा मेरे प्रति अनुराग है। अनुराग मोहात्मक स्थिति में बदला हुआ है। भगवान ! यह कब से है ? गौतम ! तुम्हारा मेरे साथ पूर्व जन्मों से संसर्ग चला आ रहा है। अनुराग का विच्छेद हुए बिना ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता है। भगवान महावीर ने अंतिम रात्रि को गणधर गौतम को ब्राह्मण के यहां उपदेश गये। गौतम ने जब सुना, तब अनुराग से भरा चित्त नाना विकल्पों में डूब गया है। प्रभो ! आपने निर्वाण के इस क्षण में मुझे दूर क्यों भेज दिया ? वे चिंतन में डूबे किंतु तत्काल संभले, मैं किसमें अनुरक्त हो रहा हूं, वे वीतराग थे। उनका निर्वाण होना था। मुझे जागरुक बनना है, जागरुकता से उनकी मोह-मूर्छा का विलय हुआ। गणधर गौतम को 'केवल-ज्ञान' उत्पन्न हो गया।

लघुकथाः-

पहले ख़ुद सुधरे फिर....

✻ एस.सी.कटारिया, रतलाम

रवि बड़ी तेजी से अपने घर की तरफ अपनी कार को दौड़ाता हुआ आ रहा था पता नहीं उसके मोबाईल पर घर से क्या खबर आई और वह अचानक अपने आफिस से निकला और घर पहुंचने की जल्दी में कार को तेजी से दौड़ाया। घर पहुंचकर अपने पिता को अस्पताल की ओर ले जाने के लिए चल पड़ा। पूरे रास्ते अपनी माँ और पिता से वह लड़ता रहा। मम्मी मैं पापा को कितने समय से समझा रहा हूं कि वे सिगरेट व शराब छोड़ दे, लेकिन वह मानते ही नहीं, मेरा सारा काम धाम डिस्टर्ब हो जाता है। हॉस्पिटल पहुंचकर रवि के पिता के सारे टेस्ट हुए और इन टेस्टों के बाद यह पाया गया कि, उन्हें अब बायपास सर्जरी की जरुरत है। रवि इसे अपने उपर आई आफत मान कर वह बड़ा परेशान था। घर का इकलौता बेटा होने के कारण अब पिता की देखभाल के लिए हॉस्पिटल में ही उसे रोकना पड़ेगा। जिसकी वजह से उसके काम में काफ ी दिक्कत आएगी। पिता का बायपास कराने के बाद डॉक्टर उसे आई.सी.यु. में लेंगे। रवि के पिता अब ठीक है, तथा स्वास्थ्य सेवा उन्हें नियमित मिल रही है। रवि के सहकर्मियों को उसके पिता के इस तरह बीमार होने के समाचार मिले तो मित्रगण अस्पताल में उनके समाचार लेने पहुंचे। रवि तब उन्हें लेकर बाहर आया और बोला, यार बहुत ही परेशान महसूस कर रहा हूं आओ चलो कही चल कर ड्रिंक लेते हैं। रवि के ऑफिस के साथियों में से एक मित्र बोला यार तुम किस मुंह से अपने पिता को सिगरेट व शराब छोड़ने को कहते हो ? जिस काम के लिए तुम उन्हें मना करते हो, रोज शाम को उसी काम को खुद करने बैठ जाते हो। रवि अपने दोस्तों की बात सुनकर स्तब्ध रह गया और उसके पास उनको देने के लिये कोई जवाब नहीं था।

✲ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल मार्च -2020

मेष– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में प्रगति रहेगी, आशा अनुसार लाभ प्राप्ति से मन उत्साहित रहेगा, पारावारिक वातावरण बेहतर रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये शुभ समाचार संभवित है।

वृष–आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में पदोन्नति की प्रबल संभावना रहेगी, अधिकारी वर्ग का सहयोग शुभ फलदायक रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा, स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में मानसिक परिश्रम की अधिकता रहेगी, दूर स्थानों से शुभ समाचार मिल सकते हैं, महिला वर्ग का बेहतर सहयोग मिलेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

कर्क– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में तो आशा अनुसार वृद्धि रहेगी, साथ ही सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में भी रुचि रहेगी, दूर स्थानों की यात्रा शुभ फलदायक रहेगी, विद्यार्थी वर्ग को शुभ समाचार प्राप्त होगा।

सिंह- आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि हेतु परिश्रम की अधिकता रहेगी परन्तु आशा अनुसार लाभ ना होने से निराशा रह सकती है, जीवनसाथी में मनमुटाव की स्थिति रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

कन्या– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, कोई नए निवेश की योजना बन सकती है परन्तु इस समय सोच विचार कर आगे बढ़े, वाणी एवं क्रोध पर अवश्य नियंत्रण रखें, विद्यार्थी वर्ग में निराशा संभावित है।

तुला– आपके लिये यह मास सामान्यता शुभ फलदायक रहेगा, संचित धन में वृद्धि के अवसर प्राप्त होंगे इस समय विलासता संबंधी कार्यो पर व्यय रहेगा, परिवार में कोई उत्साह आदि संभावित है, विद्यार्थी वर्ग में उत्साह रहेगा।

वृश्चिक– आपके लिये यह मास सामान्यता मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में बनते हुए कार्य में बाधा आ सकती है, इस समय अनावश्यक वाद-विवाद से दूर रहें, पारिवारिक वातावरण बेहतर रहेगा।

धनु– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि रहेगी एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा यात्रा शुभ फलदायक रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

मकर– आपके लिये यह मास सामान्य रहेगा, व्यापार में किसी प्रकार का वाद विवाद संभावित है, शीघ्रतम से कोई भी निर्णय मत लें, दूर स्थानों से बेहतर लाभ की संभावना रहेगी, विद्यार्थी वर्ग में निराशा रह सकती है।

कुम्भ- आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में तो वृद्धि रहेगी ही साथ ही कोई रुका हुआ लाभ भी प्राप्त हो सकता है, जीवन साथी से मधुर संबंध रहेंगे, सामाजिक कार्यो में रुचि रहेगी।

मीन– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, आते हुए लाभ में बाधा संभावित है, नए निवेश के बेहतर योजनाएं कार्यरुप होगी, विरोध पक्ष हानि पहुंचाने का असफल प्रयास कर सकते हैं, मान-सम्मान में बढ़ोतरी रहेगी।

वर्ग पहेली क्रमांक-300

✽ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2		3		4		5
				6				
7						8	9	
		10	11		12			
13	14		15				16	17
	18	19			20	21		
22				23		24		
		25						
26				27				

बाएं से दाएं:-

1- जियागंज से भगीरथी नदी पार कर पार्श्व प्रभु के इस तीर्थ की यात्रा होती है (5)

4- महावीर जन्म कल्याणक के चल समारोह का एक नारा- वंदे..... (3)

6- भरुच (गुजरात) के वागरा तालुका में स्थित भगवान पार्श्वनाथ का तीर्थ (3)

7- पोखरन के निकट स्थित श्री जैन तीर्थ संस्थान.....वरा के मूलनायक है भ.शांतिनाथ (3)

8- फलना के निकट भ.शांतिनाथ के इस तीर्थ स्थल पर कई बावड़ियां है.... (3)

10-वह दस्तावेज जो किसी व्यक्ति को अन्य देश में प्रवेश की अनुमति देता है (2)

12-सोचना-विचारना यानि चिन्तन.... करना (3)

13-तेला की तपस्या यानि.... उपवास (2)

15-पंचासरा पार्श्वनाथ का मंदिर है यहां/एक सौ रुपये के नोट पर अंकित रानी की वाव का शहर (3)

16-कवि की कल्पना शक्ति के बारे में कहावत है कि- जहां न पहुंचे.... तहां पहुंचे कवि (2)

18-''काग के भाग बड़े सजनी, हरि हाथ सों ले गयो ....रोटी'' रसखान (3)

20-एक प्रसिद्ध बाईकः..... साकी (2)

22-दुःख में.... न सब करें, सुख में करे न कोय, जो सुख में सुमिरन करें, दुःख काहे को होय -कबीर (3)

24-अष्ट मंगल में से एक मंगल-मत्स्य.... (3)

25-भगवान को चढ़ाये जाने वाले फूलों मेंसे एक (3)

26-माता-त्रिशला का 11 वां स्वप्न-क्षीर.... (2)

27-पांचवें तीर्थंकर का नाम- (5)

ऊपर से नीचे:-

1- आंध्र में कृष्णा नदी के किनारे चिंतामणी पार्श्व प्रभु का तीर्थ (5)

2- नंदावर्त लांछन वाले तीर्थंकर की माता (4)

3- .... मुसाफिर खाना, लगा है आना-जाना, बालिका बधू का एक भजन (3)

4- सतरहवें विहरमानजी का नाम.... स्वामी (4)

5- घंटाकर्ण महावीर देव का तीर्थ (3)

9- चौथे तीर्थंकर भगवान का लांछन (3)

11-इसे सूर्योदय का देश भी कहते है (3)

12-माला फैरत जुग भया, फिरा न मन का फेरकर का.... डार के, मन का मनका फेर- कबीर (3)

14-संस्कृत शब्द.... का हिंदी में अर्थ है-नमस्कार करता हूं (3)

17-राजा कृतवर्मा और रानी श्यामा के तीर्थंकर पुत्र का नाम (5)

19-सैलाना वन्यजीव अभयारण्य में यह दुर्लभ सुन्दर पक्षी वर्षा ऋतु में पवास पर आते है (4)

21-भ.महावीर के एक गणधर.... गौतम (4)

22-सोलह सतियों मेंसे एक ....(3)

23-वीराः सर्व.... रेंद्र महितों, वीरं बुधा संश्रिताः वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः (2,1)

वर्ग पहेली क्रमांक-299 का परिणाम

✽ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

	अ	नं	त	वी	र्य	स्वा	मी	
वि		दा	पो					रा
क्र		व	व		सु	रा	दे	व
म		र्त	न		रा	मा	य	ण
सा				श्री				पा
रा	य	त	न		पं	च		र्श्व
भा	द्र	प	द		च	न्द		ना
ई					म	ना		थ
	मु	छा	ला	म	हा	वी	र	

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-300

*** आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.** निम्नलिखित स्तुति के रचना करनेवाले कौन है ?

1- प्रह उठी वंदु, ऋषभदेव गुणवंत....
2- सो क्रोड़ साधु, सो क्रोड़साधना जाण....
3- ऋषभ चंदावन वंदन कीजे....
4- शांति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारो....
5- शंखेश्वर पासजी पूजीए....
6- श्रावण सुरी दिन पंचमी ए....
7- मनोहर मूर्ति महावीर तणी....
8- भीलड़ीपुर मंडण, सोहिए पार्श्व जिणंद्....
9- राजुल वर नारी, रूप थी रति हारी....
10-गिरनारे ते नेमनाथ गाजे रे....

पू. जैनाचार्य श्री अपूर्वमंगलरत्नसागर सूरीजी गुरुकुल का का उदयपुर की ओर प्रस्थान

मुंबई- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्न सागरसूरीजी म.सा.के शिष्य परिवार मुनिश्री आगम रत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा. पू.आ.भगवंत वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य मुनिश्री वज्ररत्न सागरजी म. सा.आदि साधु-साध्वी ने अन्य स्थानों पर शासन प्रभावना करते हुए आपश्री भोपावर महातीर्थ की प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाकर आपश्री ने बोलियां होते हुए उदयपुर की ओर प्रस्थान किया है। यहां आपकी नववर्ष की महामांगलिक का आयोजन होगा। उदयपुर से आपका प्रस्थान शासन प्रभावना करते हुए पालीताना महातीर्थ की ओर होगा जहां आपका आगामी चार्तुमास और नव्वांणु यात्रा होने की भी पूर्ण संभावना है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

वर्गपहेली क्रमांक-299 के परिणाम

विजेता :-

1- इशिता भामावत, नीमच (म.प्र.) - प्रथम
2- सुरभि सराफ, बदनावर (म.प्र.) -द्वितीय
3- भारती जैन, देवास (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे :-

रेशमदेवी कोठारी, नीमच, श्रीमती प्रभा जैन, देवास, पारसजी डोशी, नीमच,शंकुतला कांकरीया, हैदराबाद, श्रीमती मीना जैन, देवास, सुधा लोढ़ा, उज्जैन।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-299 के परिणाम

विजेता :-

1- श्रीमती मनोरमा खाब्या, इन्दौर(म.प्र.) - प्रथम
2- रमणीकभाई मेहता, उज्जैन (म.प्र.) -द्वितीय
3- पारसमलजी डोशी, नीमच (म.प्र.) -तृतीय

सही उत्तर-

1- श्री नेमिनाथजी, 2- श्री महावीरस्वामीजी, 3-श्री शांतिनाथजी, 4- श्री पार्श्वनाथजी, 5-श्री धर्मनाथजी, 6- श्री अनंतनाथजी, 7-श्री वासुपूज्यजी, 8- श्री श्रेयांसनाथजी, 9- श्री सुविधिनाथजी, 10-श्री अजितनाथजी।

इनके भी उत्तर सही थे :-

श्रीमती सुधा लोढ़ा,जवाहरलाल जैन, श्रेयांसकुमार जैन, उज्जैन, हंसा-वैभव जैन, श्रीमती मीना जैन, भारती जैन, देवास, इशिता भामावत, सुनीता विराणी, नीमच, शोभना जैन, रतलाम, शांता बापना, इंदौर, श्रीमती प्रभा जैन, देवास, रेशमदेवी कोठारी नीमच , सुरभि सराफ, बदनावर, सौ.शकुन्तला कांकरीया, हैदराबाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-3-2020 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

आचार्यश्री नरदेवसागरसूरीजी उज्जैन में चैत्र नवपद ओली आराधना में निश्रा प्रदान करेंगे

धार- सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा.आदि ठाणा का लम्बे अंतराल के बाद मालवा में आगमन हुआ है। आपश्री की निश्रा में प्रतिष्ठाचार्य के रुप में श्री भोपावर महातीर्थ में प्रतिष्ठा महोत्सव हाल ही में सम्पन्न हुआ। आपश्री मालवा के विभिन्न धर्म क्षेत्रों में विहार कर उज्जैन पधारेंगे। यहां आपश्री की निश्रा में चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने जा रहा है। 30 मार्च को धारणा 31 मार्च से 8 अप्रेल तक ओली आराधना एवं 9 अप्रेल को पारणा के साथ महोत्सव सम्पन्न होगा। **आपका चार्तुमास उज्जैन में होगा प्रवेश 1 जुलाई को है।**

केराल में प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित होगा

केराल-श्री नमिनाथ जैन संघ में श्री नमिनाथ भगवान के जिनालय में श्री पार्श्वनाथ, श्री मुनि सुव्रतस्वामीजी आदि जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा का आयोजन 12-14 मार्च को आयोजित होगा। पूज्य आचार्यदेव श्री विजय सर्वशिखारसूरीजी की निश्रा में आयोजित होनेवाले महोत्सव श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ पूजन आयोजित होगी। दिनांक 13 मार्च को भव्य रथयात्रा का आयोजन होगा। प्रभु के18 अभिषेक भी होंगे। प्रतिष्ठा 14 मार्च को भव्य रुप से सम्पन्न होगी। श्री मणिभद्र वीर का हवन-पूजन भी होगा।

श्री मुक्तिदर्शनाश्रीजी का चार्तुमास नागदा में

भोपावर- यहां 24 फरवरी को युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. की महामांगलिक में नागदा श्री संघ की विनंती पर साध्वीवर्या श्री मुक्ति दर्शनाश्रीजी का आगामी चार्तुमास नागदा श्रीसंघ में करने की घोषणा की गई।

सरवाड़ में दादावाड़ी की प्रतिष्ठा हुई

सरवाड़-अजमेर जिले के सरवाड़ नगर में 470 वर्ष प्राचीन श्री जिनकुशल दादावाड़ी के जीर्णोद्धार के पश्चात भव्य प्रतिष्ठा पर पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। पंन्यास प्रवर श्री विनयकुशल मुनिश्री गणि म.सा. आदि ठाणा-2 की निश्रा में यह कार्यक्रम 12 से 16 जनवरी के मध्य सम्पन्न हुआ। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा से सम्पन्न आयोजन में रथयात्रा का भव्य आयोजन 14 जनवरी को, प्रतिष्ठा 15 जनवरी को हुई, द्वारोद्घाटन एवं दादा गुरुदेव पूजा का आयोजन 26 जनवरी को हुआ।

अनुयोगाचार्यश्री का चार्तुमास उज्जैन में

उज्जैन- 26 फरवरी को यहां आयोजित पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी के जन्मोत्सव पर श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ जैन श्री संघ अरविंदनगर उज्जैन की विनंती पर पूज्यश्री ने आगामी चार्तुमास उज्जैन में करने की घोषणा की।

श्री गौतम गुण विहार में भव्य प्रतिष्ठोत्सव

पाली- पाली रत्न दादा साहेब श्री गौतमसागरसूरि स्मृतिधाम राजस्थान के शंखेश्वर श्री गौतम गुण विहार पाली जैन तीर्थे त्रिदिवसीय भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव जिनशासन शिरोमणी, तपचक्र चक्रवर्ती, अचल गच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् गुणोदयसागर सूरीश्वरजी म.सा.के आज्ञानुवर्ति परम पूज्य मुनिराज श्री कमलप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंदों की पावनतम निश्रा में 5 मार्च 2020 को बड़े ही उत्साह एवं उल्लास के साथ सम्पन्न होगा।

महोत्सव का मांगलिक कार्यक्रम 2 मार्च को स्नात्र पूजा एवं महाकाली पूजा, 3 मार्च को स्नात्र पूजा, कुंभ-दीपक स्थापना, ज्वारारोपण, क्षेत्रपाल स्थापना, लघु नंदावर्त, नवग्रह दशादिक्पाल, अष्टमंगल पूजन, 4 मार्च को अठारह अभिषेक के बाद 5 मार्च को प्रातः शुभ मुहूर्त में ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रियंताम् प्रियंताम् के साथ प्रभु प्रतिमा, देव-देवी प्रतिमाओं की शुभ प्रतिष्ठा गादिनसीन विधि सम्पन्न होगी। दोपहर 12.39 बजे लघु शांति स्नात्र पूजा का आयोजन होगा। 6 मार्च को प्रातः 5.30 बजे द्वार उद्घाटन, अट्ठम तप पारणा, श्री पद्मावती माँ की अष्टप्रकारी पूजा एवं सत्तरभेदी पूजा के बाद महोत्सव का समापन होगा।

श्री गिरनार में नव्वांणु यात्रा अप्रेल में

गिरनार-पूज्य आचार्य श्री हेमवल्लभसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में गिरनार में नव्वांणु यात्रा का आयोजन श्री गिरनार भक्त मंडल के द्वारा 26 अप्रेल से किया जायेगा।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

गुरुकृपा पात्र युवार्जनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी ने भोपावर महातीर्थ की अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्ण कर श्रीनागेश्वर महातीर्थ के लिये प्रस्थान किया

- ✲साध्वीश्री पर्ववर्षा और ध्वनिरत्नाश्रीजी की बड़ी दीक्षा भोपावर में हुई।
- ✲ श्री नागेश्वर में दीपचंदजी के स्मृति समारोह में निश्रा रही।
- ✲ नवरत्नधाम का पालीताना में उद्‌घाटन 17-18 अप्रेल को संभव।
- ✲ 24 अप्रेल को पालीताना में महामांगलिक होगी।
- ✲ मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी के साथ अनेक साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका का वर्षीतप पारणा नवरत्नधाम पालीताना में होगा।
- ✲ वर्षीतप पारणा में निश्रा रहेगी।
- ✲ श्री नाकोड़ा महातीर्थ में 22 जून को चार्तुमास प्रवेश
- ✲ 1000 धर्मिष्ठों का चार्तुमास होगा।
- ✲ अनेक शासन प्रभावक महोत्सव होंगे।

भोपावर-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के द्वितीय शिष्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म. सा., उपाध्याय श्री वैराग्यरत्नसागरजी मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी, मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी,मुनिश्री उत्तम रत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा का विहार भी पालीताना की ओर हो गया है

पूज्यश्री का 18फरवरी को राजगढ़ के लिये प्रस्थान हुआ। जहां त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ दादा श्री आदिनाथ परमात्मा के जिनालय का खानन एवं भूमि पूजन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। वरघोड़ा भी आयोजित किया गया,नवरत्न आराधना भवन में मूर्ति स्थापित की गई। चार थुई जैन श्री संघ के तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ। यहां से आपका आगमन श्री भोपावर महातीर्थ में हुआ। भोपावर में 24 फरवरी को मुक्ताकाशी मंच पर जोरदार महामांगलिक का आयोजन भी हुआ जिसमें देश के लब्धि प्रतिष्ठित श्रेष्ठिवर्य की उपस्थिति रही। नाकोड़ा ट्रस्ट मंडल के साथ पूना के श्री ओमजी रांका भी उपस्थित थे। इस अवसर पर नाकोड़ा चार्तुमास की पत्रिका का विमोचन भी किया गया। नाकोड़ा में 1000 धर्मिष्ठों का दो माह का चार्तुमास करवाने के साथ उपधान तप भी आयोजित किया जायेगा। 26 फरवरी को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। श्री रमणभाई मुथा मोंटेक्स बालपेन ग्रुप के सर्वेसर्वा एवं भोपावर महातीर्थ के मैनेजिंग ट्रस्टी आदि अथक प्रयास ओर गुरु का आर्शीवाद प्रत्यक्ष दिखाई दिया।

आपश्री का विहार 27 फरवरी को श्री नागेश्वर महातीर्थ की ओर हुआ जहां श्री दीपचंदजी साहब की स्मृति में 5 से 7 मार्च तक महोत्सव का आयोजन किया गया था। यहां से मालवा के संघों में शासन प्रभावना करते हुए आपश्री का विहार पालीताना महातीर्थ की ओर होगा जहां नवरत्नधाम विशाल धर्मशाला का उद्‌घाटन प्रसंग **नवरत्नधाम का पालीताना में उद्‌घाटन 17-18 अप्रेल को होगा** और वर्षीतप पारणा महोत्सव 24 से 26 अप्रेल तक मनाया जायेगा।

आचार्यश्री जिनरत्नसागरसूरीजी का चार्तुमास नागपुर में होगा,मालवा के कार्यक्रम सम्पन्न कर विहार करेगें

※ उज्जैन- में वर्षीतप पारणा महोत्सव में निश्रा रहेगी।

भोपावर-ज्योतिर्विद आचार्य देव श्री जिनरत्न सागरसूरीजी म.सा. वाणी के जादूगर आचार्य देवेश श्री जितरत्न सागरसूरीजी एवं आयंबिल आराधक आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी म. सा आदि ठाणा की भोपावर महातीर्थ के अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा रही। भोपावर से विहार कर आपश्री अभ्युदय धाम धार पधारे यहां से आपका विहार आष्टा की ओर हुआ है। 3 से 5 मार्च तक महिदपुर में जिनालय की 25 वीं वर्षगांठ पर स्वर्ण जयंति महोत्सव आयोजित होगा। आपश्री की निश्रा में मोहन बड़ोदिया में 13 से 15 मार्च तक कुमारी राधिका का दीक्षा महोत्सव मनाया जायेगा। आप साध्वी अक्षय ज्योति श्रीजी की सुशिष्या बनेगी। आष्टा में 16 से 19 मार्च तक आपकी निश्रा में कुमारी चंचला सुराना का भगवती प्रवजा महोत्सव आयोजित होने जा रहा है। 28 फरवरी को कुमारी चंचला सुराना की दीक्षा पत्रिका का मुर्हूत महोत्सव श्री कमल सुरानाजी के निवास पर सम्पन्न हुआ। दीक्षा 19 मार्च को होगी। यहां दीक्षा सम्पन्न करवाने के बाद 12 अप्रेल को आपश्री की निश्रा में श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन हवन का आयोजन देपालपुर में होगा। संघवी, मंडोवरा,मोदी परिवार ने इसका लाभ लिया है। 25 मार्च को देवास में आपश्री की महामांगलिक होगी। डॉ.सुभाष जैन के 17 से 18 अप्रेल तक होनेवाले वर्षीतप पारणा महोत्सव आयोजन के अंतर्गत उज्जैन में आपश्री की उपस्थिति रहेगी।

जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी की निश्रा में अभ्युदयपुरम् में उपधान तपाराधना 16 अप्रेल से

बैंगलोर- मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी, पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागरजी, मुनिश्री पावन सागरजी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा का जयनगर बैंगलोर में सफल चार्तुमास होने के बाद मंगल विहार मालवा की ओर हो गया है। आपके द्वारा प्रस्थापित श्री अभ्युदयपुरम् में 16 अप्रेल से श्रावक से श्रमण बनने की तपाराधना उपधान का आयोजन होने जा रहा है।

उपधान तप का प्रथम मुर्हूत 16 अप्रेल को होगा। द्वितीय मुर्हूत 18 अप्रेल का है। उपधान तप के तपस्वियों की भव्य शोभायात्रा 2 जून को आयोजित की जायेगी। मालरोपण विधि 3 जून को सम्पन्न होगी। पूज्य आचार्यश्री का आगामी चार्तुमास उज्जैन में ही श्री हीरविजय सूरीश्वरजी बड़ा उपाश्रय में होने जा रहा है।

※ यदि सुयोजक कर्म का प्रारंभ करना ही है तो आज विलंब करने का दिन नहीं है, कारण, आज के जैसा मंगलकारी दिन और कोई नहीं है।

कुर्ला में वर्षीतप आराधना का शंखनाद

मुंबई- राष्ट्रसंत कुर्ला जिनालय के प्रतिष्ठाचार्य प.पू.आचार्यदेव श्री चन्द्राननसागर सूरीजी म.सा. के सानिध्य में कुर्ला (प.) के राजस्थान ओसवाल भवन में पूज्याचार्यश्री के मांगलिक प्रवचन के साथ वर्षीतप आराधना 16 मार्च 2020 से प्रारंभ हुई होकर 15 मई 2021 को सम्पन्न होगी। कुर्ला में सामूहिक वर्षीतप आराधना पहली बार हो रही है।

कैवल्यधाम में ध्वजारोहण हुआ

कुम्हारी- श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर तीर्थ कैवल्यधाम में 12 वीं ध्वजारोहण पर जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। ध्वजा 18 फरवरी को चढ़ाई गई। चैत्र वदी-8 पर प्रभु श्री आदिनाथ दादा के जन्म दीक्षा कल्याणक महोत्सव पर वर्षीतप आरंभ हुए। दिनांक 26 अप्रेल को अक्षय तृतीया पर वर्षीतप पारणा आयोजित होगा।

मुमुक्षु दर्शन बागरेचा बने मुनि शासनरत्नसागरजी

कुम्हारी- श्री कैवल्यधाम तीर्थ में श्री निपुणा अध्यात्म वाटिका में मुनिश्री महेन्द्रसागरजीम.सा.नेश्रीदर्शन बागरेचा को दीक्षा ग्रहण कराई। नूतन दीक्षित का नामकरण क मुनिश्री शासनरत्न सागरजी म.सा.किया। 42 साधु-साध्वीजी भगवंतों की निश्रा में मुनिराज श्री महेन्द्र सागरजी म.सा. ने आगामी चार्तुमास की घोषणा करते हुए नूतन दीक्षित मुनिश्री शासनरत्नसागरजी म.सा.की बड़ी दीक्षा 8 मार्च को धमतरी में होने की घोषणा की।

डॉ.सुभाष जैन (आगमोद्धारक) के वर्षीतप आराधना पर त्रिदिवसीय तपोत्सव का आयोजन 17 से 19 अपेल तक होगा

- **पूज्यपाद जैनाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी का 79 वां जन्मदिन भी मनाया जायेगा।**
- **रात्री भक्ति-भव्य रथयात्रा और श्रीसंघ का स्वामी वात्सल्य भी होगा।**
- **सभी कल्याण मित्रों से महोत्सव में पधारने की विनंती है।**

उज्जैन- डॉ.सुभाष जैन (आगमोद्धारक) के वर्षीतप आराधना निमित्त त्रिदिवसीय तपोत्सव का आयोजन दिनांक 17 से 19 अप्रेल तक उज्जैन में श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर किया जाना सुनिश्चित हुआ है। पूज्यपाद आचार्यदेवश श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराज, ज्योतिर्विद आचार्य देव श्री जिनरत्न सागरसूरीजी म.सा. वाणी के जादूगर आचार्य देवेश श्री जितरत्न सागरसूरीजी एवं आयंबिल आराधक आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी म. सा. आदि ठाणा के साथ आचार्यदेव श्री मुक्तिसागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा के साथ **प.पू. शिव-तिलक-हेम-तीर्थ-रंजन-मनोहर-फाल्गु-सुमन-इन्दुश्रीजी म.सा. का शिष्या-प्रशिष परिवार** के पूज्य साध्वीवर्या सूर्यकान्ताश्रीजी म.सा.आदि ठाणा, पू.साध्वी शशीप्रभा श्रीजी म.सा. पू.साध्वी दमिताश्रीजी म.सा.आदि ,पू.साध्वी पूर्णयशाश्रीजी म.सा. आदि, पू.साध्वी मुक्तिदर्शना श्रीजी म.सा. आदि, पू.साध्वी राजरत्ना श्रीजी म.सा. आदि, पू.साध्वी पू.साध्वी चारुधर्मा श्रीजी म.सा.आदि, पू.साध्वी कल्पद्रुमा श्रीजी म.सा. आदि, पू.साध्वी मुक्ति रेखा श्रीजी म.सा.आदि, आदि ठाणा पधारेगे प.पू.गणिवर्य श्री आदर्श रत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ अन्य साधु साध्वीजी से से भी विनंती की गई है आप अनुकुलता से पधारेगें दिनांक 17 से 18 अप्रेल तक होने वाले आयोजन के अंतर्गत 17 अप्रेल को श्री पार्श्व पंचकल्याणक पूजन 18 अप्रेल को श्री सिद्धचक्र महापूजन एवं 19 अप्रेल को भव्य रथयात्रा एवं श्री संघ का स्वामीवात्सल्य का आयोजन होगा। **पूज्य आचार्य भगवंत श्री नरदेवसागरसूरीजी महाराजा का 79 वां जन्म महोत्सव पर गुणानुवाद सभा का आयोजन भी होगा।** रात्री के कार्यक्रम तथा अन्य कार्यक्रम की भी रुपरेखा बन रही है। श्री भोपावर महातीर्थ में प्रतिष्ठा अवसर पर सभी साधु-साध्वी भगवंतों से विनंती कर उज्जैन पधारने का निवेदन किया गया है।

भूमि पूजन एवं खाद मुहूर्त सानंद सम्पन्न

मुंबई- श्री नाकोड़ा भैरव दर्शन धाम तीर्थ, ढेकाले-मुंबई की पावन भूमि पर नूतन भोजनशाला का भूमिपूजन एवं खाद मुहूर्त प.पू. जन-जन की आस्था के केन्द्र, राष्ट्रसंत, आचार्य गुरुदेव श्री चंद्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में 14 फरवरी को सानंद सम्पन्न हुआ।

ताणा में प्राचीन आदिनाथ जिनालय में प्रतिष्ठा हुई

ताणा- छीपों का अकोला करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ के समीप ताणा में श्री आदिनाथ दादा के प्राचीन जिनालय में श्री केशरियानाथ आदि जिनाबम्ब की प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया। पूज्य आचार्य श्री भगवंत श्री पद्मभूषण सूरीजी, आचार्य श्री निपुणरत्नसूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 20 से 22 फरवरी तक हुआ। 19 फरवरी को भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया। 22 फरवरी को भव्य प्रतिष्ठा शुभ लग्नांश वेला में सम्पन्न हुई। 23 फरवरी को द्वारोद्घाटन-सत्तरभेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

रातामहावीर तीर्थ में प्रतिष्ठा सम्पन्न

बीजापुर (राता महावीरतीर्थ हथुंडी) में श्री पुण्डरीक स्वामी-गौतम स्वामी नाकोड़ा भैरवदेव, अंबिकादेवी की प्रतिष्ठा 440 दीक्षा दानेश्वरी आचार्यदेव श्री गुणरत्नसूरीजी म.के शिष्य पू.सूरिमंत्र आराधक आचार्यदेव श्री रविरत्नसूरीजी म.सा.,पं.वैराग्य रत्न वि.म.आदि 17 साधु-साध्वीजी की पावनकारी निश्रा में प्रतिष्ठा भव्य गीत से हुई। इस निमित्त गुरुदेवश्री का भव्य सामैया, गुरुपूजन, कांबली, वधामंडप एवं रथयात्रा का भव्य वरघोड़ा, कुंभ स्थापना, पाटपूजन, देवीपूजन, नंदावर्त पूजन, 18 अभिषेक, श्री अष्टेत्तर शत महाशांति स्नात्र पूजन हुआ। पांचों दिन 27 से 31 जनवरी तक त्राणटंक की साधर्मिक भक्ति फले चुंनड़ी 36 कोम में प्रसाद एवं ब्लँकेट वितरण किया गया।

मोनिकाबेन बनी साध्वी मार्गदशिता श्रीजी

चालीसगाम- खानदेश की धन्य धरा पर मुमुक्षु सी.ए. मोनिकाबेन की भागवती प्रवज्या अचलगच्छीय आगम अभ्यासी प.पू. आचार्यदेव श्री महोदय सागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में 1 फरवरी को बड़े ही उत्साह व उमंग के साथ सानंद सम्पन्न हुई। मुमुक्षु का नामकरण साध्वी श्री मार्गदर्शिताश्रीजी म.सा. रखा गया। नूतन साध्वी परम पूज्या साध्वीवर्या श्री महाप्रज्ञाश्रीजी म.सा. की शिष्या घोषित की गई।

वर्षीतप पारणा जाजम हुई

सिंकदराबाद- सामुहिक वर्षीतप पारणा प्रसंग पर जाजम के चढ़ावे एवं 504 जोड़े के साथ भक्तामर एवं महालक्ष्मी पूजन पढ़ाई गई। दिनांक 2 फरवरी को हुए आयोजन महाशतवधानी मुनिश्री अभिनंदनचंदसागरजी, मुनि श्री सुविधिसागरजी आदि ठाणा की निश्रा में हुए आयोजन की प्रेरणा और मार्गदर्शन शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण की रही। जिनदत्तसूरी दादावाड़ी में कार्यक्रम हुआ। पारणा श्री कुलपाक तीर्थ में होगा।

जैनाचार्य श्री रविशेखर सूरीजी के आगामी कार्यक्रम

✲ श्री विजय हिमाचलसूरि कीर्ति स्तंभ (घाणेराव) में श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ त्रिशिखर जिनालय का खनन मुर्हूत दिनांक 29 फरवरी को शिलान्यास 1 मार्च 2020।

✲ श्री देसुरी नगर में श्री चन्द्रप्रभ स्वामी जिनालय का खनन मुर्हूत दिनांक 29 फरवरी, शिलान्यास 1 मार्च 2020।

✲ श्री शिवगंज नगर में मुमुक्षु खुश्बु कुमारी का दीक्षा महोत्सव 11 मार्च 2020।

✲ श्री केराल नगर में प्रतिष्ठा महोत्सव 14 मार्च 2020।

✲ श्री एलाना नगर (जि.जालोर) में भवन का उद्घाटन प्रसंगे चढ़ावा की जाजम 19 से 20 मार्च 2020।

✲ श्री नंदीश्वर द्वीप तीर्थ, जालोर में नवपद आली आराधना 30 मार्च से 9 अप्रेल 2020।

✲ श्री बालावाड़ा नगर में श्री गौतमस्वामी देव-देवी प्रतिष्ठा 14 से 16 अप्रेल 2020।

✲ श्री एलाना नगर (जि.जालोर) में जैन भवन का उद्घाटन 18 अप्रेल 2020।

✲ श्री सेवन्तरी नगर (मेवाड़) में श्री आदिनाथ भगवान जिनालय का खनन मुर्हूत 24 अप्रेल 2020, शिलान्यास 25 अप्रेल 2020।

✲ श्री गांवगुड़ा नगर (मेवाड़) में देव-देवी प्रतिष्ठा 28 अप्रेल से 2 मई 2020।

✲ श्री सलोढ़ा नगर (मेवाड़) में ध्वजदंड कलशादि प्रतिष्ठा एवं मेवाड़ दीपक प.पू. पंन्यास श्री रत्नाकर विजयजी म.सा. 75 वां दीक्षा हीरक महोत्सव एवं 102 वां जन्मदिन उत्सव 10 से 14 मई 2020।

✲ आगामी चार्तुमास श्री शत्रुंजय महातीर्थ (समढ़ड़ी भवन) पालीताना में चार्तुमास प्रवेश 3 जुलाई 2020।

***✲ पालीताना में उपधान तप** 26 **अक्टूबर** 2020।*

पूज्य जैनाचार्य श्री रत्नसुन्दर सूरी मुंबई में आगम वाचना देंगे

मुंबई- पूज्यपाद जैनाचार्य श्री ज्ञानसुन्दरसूरीजी म.सा. का मंगल विहार मालवा से मुंबई की ओर हुआ है। यहां आपश्री की आगम वाचना का आयोजन सेठ मोतीशाह आदेश्वर जैन टेम्पल परिसर में दिनांक 12 से 15 मार्च 2020 तक आयोजित की गई है। आगम वाचना प्रातः 9 से 12 बजे तक होगी। अनेक स्थानों से धर्मिष्ठों के पहुंचने की संभावना है।

आचार्य श्रीरत्नसुंदरसूरी जी का चार्तुमास सूरत में

इन्दौर- सरस्वती पुत्र आचार्य देवेश श्री रत्नसुन्दरसूरीजी म.सा. के चार्तुमास हेतु सूरत श्रीसंघ ने विनंती की। सूरत संघ की विनंती को स्वीकार कर पूज्यश्री ने 2020 के लिये श्रीसंघ को चार्तुमास की स्वीकृति प्रदान की है।

श्री वेपेरी संघ में चार्तुमास

चैन्नई- श्री वेपेरी श्वेतांबर मूर्ति पूजक जैन संघ में आगामी वर्ष 2020 के वर्षावास के लिये संघ हित चिंतक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय तीर्थभद्रसूरीश्वरजी म.सा.का चार्तुमास वेपेरी श्री संघ में होगा। श्री जैन श्वेतांबर नाकोड़ा पार्श्व नाथ तीर्थ मेवानगर के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाज गौरव, शासनरत्न संघवी श्री रमेश कुमार मुथा ने गुरु भगवंत से कहा कि- वेपेरी के जिन मंदिर की प्रतिष्ठा उनके गुरु आचार्यदेव श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीजी म.सा. द्वारा हुई और जिनालय का रजत जयंति महोत्सव आपश्री की निश्रा में ऐतिहासिक रुप से मनाने की हमारी हार्दिक भावना है।

पू.गच्छाधिपति आचार्य श्री विजय विज्ञानप्रभ सूरीजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

✻ दिनांक 13 मार्च फागण वदि-5 को पूज्य गच्छाधिपति गुरुदेवश्री का 46 वां जन्मदिन श्री गोकुलनगर नजराणा जैन श्वे.मू.पू.संघ भिवंडी में।

✻ दिनांक 16 मार्च फागण वदि-8 को श्री संघ में सामूहिक वर्षीतप श्री गोकुलनगर नजराणा जैन श्वे.मू.पू.संघ भिवंडी में।

✻ दिनांक 29 मार्च से 13 अप्रेल, चैत्र सुदि-पांचम से चैत्र वद-छठ सूरिमंत्र की पंचम पीठीका श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन श्वे.मू.पू.संघ निगड़ी।

✻ दिनांक 2 अप्रेल चैत्र सुदि-9 तथा दिनांक 18 अप्रेल चैत्र सुदि-11, को सूरिमंत्र की पंचम पीठिका, श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैन श्वे.मू.पू.संघ, निगड़ी पूना (महा.) में प्रारंभ होगी।

✻ दिनांक 26 अप्रेल वैशाख सुदि-3 को 76 वर्षीतप के तपस्वीओं का पारणा उत्सव श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन श्वे.मू.पू.संघ निगड़ी पूना (महा.) में एवं श्री आदिनाथ जिनालय का शताब्दी महोत्सव श्री आदिनाथ जैन मंदिर बार्शी जिला सोलापुर (महा.) में।

✻ दिनांक 3 से 18 मई वैशाख सुदि-दसम से वैशाख वदि-ग्यारस सूरिमंत्र की पंचम पीठीका दूसरी बार श्री जैन श्वेतांबर ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट, बार्शी जिला सोलापुर (महा.) में।

दीक्षा दानेश्वरी आचार्य श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की भव्य शासन प्रभावना

सूरत- सूरिप्रेम भुवनभानु जय घोष जितेन्द्र सूरीजी पट्टधर पूज्यपाद 431 दीक्षा दानेश्वरी सूरीप्रेम लब्ध प्रसाद श्रीजीरावलादितीर्थोधारक मार्गदर्शक प्रतिष्ठाचार्य श्रीमद् विजय गुणरत्न सूरीजी म.सा.आदि साधु साध्वी की निश्रा में नवसारी में 29 जनवरी को पाल 7 दीक्षा, (मु. विजय, संगीत आंगी-दृष्टि पूरे परिवार, कृणाल, संकेत स्वयं की दीक्षा 7 फरवरी को सूरत उमरा में मुनिश्री अर्हम रत्न-सोम्यांग रत्न विजयजी गणि पंन्यास पदवी, 12 फरवरी को सूरत-वेसू महाविदेहधाम की भूमि पर समुह 8 दीक्षा, मु.सचिन, कामेश, जिनेश, भव्या, वैरागी, आयुषी, रिशी और सिल्की की होगी। 26 फरवरी, उमरा-सूरत में दीक्षा दानेश्वरी गुणरत्नसूरिजी म.सा. 13 वर्षीय निधान को 450वां रजोहरण प्रदान करेंगे। चैत्रमास की शाश्वती ओली श्री मणिलक्ष्मी तीर्थ में होगी। अक्षय तृतीया को मुनिश्री भव्य रत्नविजयजी सहित 26 साधु-साध्वी भगवंतों के वर्षीतप पारणे उमरा में, सूरत-पाल में 9 मई से 28 मई तक बालक युवाओं के लिये राजहंस परिवार की ओर से अठारिया उपधान होगा। (प्रवेश पत्र हेतु संपर्क-94265 47084) फिर सूरत-कैलाश नगर में भव्य चार्तुमास होगा।

चार्तुमास

पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा.का आगामी चार्तुमास 2020 पोसाना (राज.) में होगा।

अजंन प्रतिष्ठा महोत्सव 21 मार्च को

श्री महावीर दि लाइट सोसायटी कॉठवा पूना में श्रीमती लीलाबाई शांतिनाथ टेकचंद मोटरेसा राठौर परिवार के द्वारा स्वद्रव्य में निर्मित श्री वासुपूज्य स्वामीजी के जिनालय का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव 21 मार्च को पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.की निश्रा में सम्पन्न होगा। चढ़ावे का जाजम 18 जनवरी को सम्पन्न हुई।

श्री गिरनार में चैत्र ओलीजी आराधना

अहमदाबाद- अरिहंतनगर नवयुवक मंडल रसही बाग के द्वारा गिरनार में चैत्र ओली का आयोजन 21 मार्च से 9 अप्रेल तक किया जा रहा है। आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीजी म.सा. पंन्यास धर्मविधि विजयजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में आयोजन होगा। **सम्पर्क- 9427634991**

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- केनरा बैंक, शाखा दौलतगंज, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 0296101008315

IFSC Code CNRB0000296

MICR Code : 456015002

मांडवगढ़ में नवपद चैत्र ओली का भव्य आयोजन आचार्य मृदुरत्नसागरसूरीजी की निश्रा में होगा

✻ सभी आराधकों को आने-जाने का किराया और भव्य बहुमान होगा।
✻ पूज्यश्री महामांगलिक आलोट में हुई।
✻ चार्तुमास अहमदाबाद में होगा।

आलोट- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण गुरुदेव भोपावर तीर्थोद्धारक श्री नवरत्न सागर सूरीजी म. सा. के शिष्य पूज्यपाद जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा भोपावर-इन्दौर से विहार करते हुए आलोट श्री संघ पधारे पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. के साथ संयुक्त महामांगलिक का आयोजन 25 जनवरी को किया गया। यहां से आपश्री का विहार ताल की ओर हुआ। यहां आपकी निश्रा में दीक्षा महोत्सव का आयोजन हुआ। आपश्री यहां से विहार कर भोपावर महातीर्थ पधारेंगे। यहां भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे।

पूज्यश्री की निश्रा में श्री सुपार्श्वनाथ जिनालय मांडवगढ़ महातीर्थ में चैत्र नवपद ओली का आयोजन होने जा रहा है। सभी आराधकों को आयोजक के द्वारा मांडवगढ़ आने जाने का किराया देने के साथ भव्य बहुमान किया जायेगा। धारणा 30 मार्च को होगा। ओली का शुभारंभ 31 मार्च को होगा। पारणा 9 अप्रेल को होगा। **पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास अहमदाबाद सुनिश्चित हुआ है।**

पूज्यपाद सागर गच्छाधिपति का जन्म शताब्दी महोत्सव पूना में मनेगा

पूना- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा वर्तमान में मुंबई में विराजित है, यहां विभिन्न श्री संघों में जिनशासन की प्रभावना करते हुए आपश्री की पूना की ओर विहार करने की भावना है। यहां आपश्री की आयु का शतक पूर्ण होने पर भव्य जन्म शताब्दी महोत्सव का आयोजन किये जाने की योजना बन रही है जिसमें देशभर के सागर समुदाय के भक्तों के साथ श्री संघों को आमंत्रित किया जाएगा। पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंदों के द्वारा महोत्सव के आयोजन हेतु प्रारंभिक तैयारियां आरंभ हो गई है। विस्तृत जानकारी शीघ्र प्राप्त होगी।

भारत नगर मुंबई में चार्तुमास

मुंबई- श्री सौधर्म त्रिस्तुतिक संघ के वर्तमान गच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य देवेश श्रीमद् विजय ऋषभचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.के आज्ञानुवर्ति मुनिश्री पीयूषचन्द्रविजयजी म.सा.का आगामी चातुर्मास ग्रांट रोड़ स्थित भारत नगर में होगा।

आचार्यश्री की आगामी व्यस्तताएं

✻ प.पू. श्री मोहनखेड़ा तीर्थ विकास प्रेरक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरिश्वरजीम.सा. मुनिमंडल के साथ महाराष्ट्र की ओर विहार किया। आचार्यश्री के आगामी कार्यक्रम इस प्रकार है:-

✻ 8 मार्च से 11 मार्च माजीवाड़ा ठाणा में प्रतिष्ठा समारोह श्री राजेन्द्र विहार धाम।

✻ 13 से 15 मार्च को बदलापुर में गुरु मंदिर व जिनेश्वर प्रतिमा समारोह।

✻ 29 मार्च से 8 अप्रेल को शुक्रवार पेठ पुणे में राज राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर, जैन मंदिर चौक पर नवपद ओली आराधना।

✻ 17 मार्च से 19 मार्च डोंबीवली पालवा सिटी में विमलनाथ जिन मंदिर प्रतिष्ठा समारोह।

70 वीं ध्वजारोहण हुई ॐकार तीर्थ में

बड़ौदा- श्री ॐकार तीर्थ में श्री आदेश्वर दादा की 70 वीं ध्वजारोहण 11 फरवरी को किया गया। पूज्य आचार्य श्री पुण्यानंदसूरीजी म.सा.के द्वारा प्रस्थावित ॐकार तीर्थ में 10 फरवरी को 18 अभिषेक हुवे। 7 मार्च को आचार्यश्री महासेनसूरीजी म.सा. एवं गणिवर्य श्री विक्रमसेनविजयजी म.सा.की निश्रा में फागण फेरी की भाव यात्रा का आयोजन किया जायेगा।

वृषभ जिनालय में ध्वजारोहण हुआ

दक्षिण भारत का शत्रुंजयावतार अतिप्राचीन श्री पेदमीरम तीर्थ में द्विखंडीय त्रिशिखरीय मेघानाद मण्डप सहित वृषभ मंदिर का पांचवां वर्षगांठ ध्वजारोहण 8 फरवरी को सैकड़ों जिन भक्तों की उपस्थिति में सानंद सम्पन्न हुआ।

संक्षिप्त -जिनशासन समाचार

✽ **अहमदाबाद-** योगनिष्ठ समुदायवर्ती आचार्य श्री अजयसागर सूरीश्वरजी म.सा.का आगामी वर्ष 2020 का चार्तुमास पुष्पदंत जैनसंघ सेटेलाईट, अहमदाबाद निश्चित हुआ है।

✽ **बैंगलुरु-** श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्य श्री हीरचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.का वर्ष 2020 का चार्तुमास अक्किपेठ जैनसंघ, बैंगलुरु निश्चित हुआ है।

✽ **गिरनार-** कच्छ-वागड़ समुदाय वर्ती आचार्य श्री कुमुदचंद्र सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा मे शाश्वत परिवार आयोजित ग्रीष्मकलीन नव्वाणु यात्रा 19 अप्रेल 2020 से प्रारंभ होगी।

✽**मुंबई-** कविकुलकिरिट समुदाय वर्ती आचार्य श्री यशोवर्म सूरीश्वरजी म.सा. का वर्ष 2020 का चार्तुमास श्री आदीश्वर जैन देरासर, शांतिनगर जैन संघ, मीरा रोड़ (ईस्ट) में होगा।

✽ **मुंबई-** श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्य श्री अभयशेखर सूरीश्वरजी म.सा.का वर्ष 2020 का चार्तुमास श्री मुलुंड श्वे.मू.जैन संघ वासुपूज्य जिनालय, झवेररोड़, मुलुंड की उद्घोषणा हुई है।

मुंबई- श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती मुनि श्री युगंधर विजयजी म.सा. आदि ठाणा का आगामी इस्वी सन् 2020 का चार्तुमास श्री नव जीवन जैन संघ मे होगा

✽ **पार्श्व प्रज्ञालय तीर्थ-** श्री प्रेम-भुवनभानु समुदाय वर्ती आ. श्री अभयशेखर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में त्रिदिवसीय पारिवारिक शासन श्रद्धा शिविर का आयोजन 15 से 17 मई 2020 तक आयोजित होगा।

✽ **इगतपुरी-** श्री प्रेम भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्य श्री हंसरत्न सूरीश्वरजी म.सा.एवं कच्छ वागड़ समुदायवर्ती आचार्य श्री तत्वदर्शन सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में उपधान तप की आराधना 18 अप्रेल से प्रारंभ होकर मालारोपण 7 जून 2020 को होगी।

✽ **ह्रींकार तीर्थ (आ.प्र.)-** श्री प्रेम -भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्य श्री जिनसुंदर सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में अढारिया उपधान तप की आराधना 30 अप्रेल से प्रारंभ होगी। 18 मई को पारणा होगा।

✽ **पानसर तीर्थ-** श्री प्रेम भुवनभानु समुदायवर्ती पन्यास श्री सत्यसुंदर विजयजी म.सा. की निश्रा में 17 से 24 मई तक अष्टदिवसीय शिविर का आयोजन होगा।

✽ **गिरनार तीर्थ-** गिरनार दर्शन धर्मशाला में श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में ग्रीष्म कालीन नव्वाणु यात्रा का आयोजन 26 अप्रेल से प्रारंभ होकर समापन 15 जून को होगा।

✽ **हैदराबाद-** कारवान दादावाड़ी मध्ये श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्तीय आचार्य श्री अभयचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में उपधान तप आराधना तप हेतु प्रथम प्रवेश 18 अप्रेल, द्वितीय 20 अप्रेल को होगा। मोक्षमाला 8 जून को होगी।

✽ **सूरत-** वेसू, ओंकार सूरि आराधना भवन में ओंकारसूरि समुदायवर्ती आचार्यश्री यशोविजय सूरिश्वरजी म.सा.की निश्रा में पंन्यास श्री पुंडरीकरत्नविजयजी म.सा.की आचार्य पदवी 26 फरवरी को हुई।

✽ **खेतासर-** खरतर गच्छीय आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी दादावाड़ी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 16 फरवरी को सम्पन्न हुई।

✽ **मैसूर-** श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्यश्री अजितशेखर सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा मे 11 से 17 अप्रेल तक 13 से 23 वर्ष के बालकों के लिए लिटिल चैम्पियन शिविर का आयोजन होगा।

✽ **दिल्ली-** श्री भक्तिसूरि समुदाय वर्ती आचार्यश्री कुलचंद्र सूरीश्वरजी म.सा.का चार्तुमास प्रवेश गुजरात अपार्टमेंट, प्रीतमपुरा, दिल्ली में 28 जून 2020 को होगा।

✽ **श्री गिरनार तीर्थ-** श्री गिरनार दर्शन धर्मशाला में श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्यश्री हेमवल्लभ सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में चैत्री नवपद ओली की आराधना 31 मार्च से 8 अप्रेल तक आयोजित होगी।

✽ **श्री धर्ममंगल तीर्थ-** भायली (वड़ोदरा-पादरा रोड़) में युगदिवाकर समुदायवर्ती आचार्य श्री पद्मरत्न-पद्मजयसूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में चैत्री नवपद ओली की आराधना 31 मार्च से 8 अप्रेल तक आयोजित होगी।

✽ **श्री नाकोड़ा धाम (पालघर)-** में श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्य श्री संयमबोधि सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में 10 से 17 मई तक लाईट ऑफ लाइफ समर वेकेशन शिविर का आयोजन होगा।

✽ **श्री आगासी तीर्थ-** युगदिवाकर समुदायवर्ती पंन्यास श्री आगमरत्न विजयजी म.सा.की निश्रा में चैत्री नवपद ओली की आराधना 31 मार्च से 8 अप्रेल तक आयोजित होगी।

✽ **सापूतारा-** श्री ॐकार सूरि समुदायवर्ती आचार्य श्री यशोविजय सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में 5 से 12 अप्रेल तक मौन साधना शिविर का आयोजन होगा।

✽ **चैन्नई-** कौंडितोप जैन संघ में आचार्यश्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. का आगामी चार्तुमास होगा।

✽ **हैदराबाद-** खरतर गच्छीय मुनिश्री ललितप्रभ-चन्द्रप्रभसागरजी म.सा. का आगामी चार्तुमास हैदराबाद में निश्चित हुआ है।

✽ **मुंबई-** गीतांजलि नगर श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्य श्री रत्नसुन्दर सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में चैत्री नवपद ओली की आराधना 31 मार्च से 8 अप्रेल तक आयोजित होगी।

✽ **बेंगलोर-** पार्श्व सुशील धाम में गिरिविहार समुदायवर्ती आचार्यश्री उदयप्रभसूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में उपधान तप आराधना हेतु प्रथम प्रवेश 11 अप्रेल, द्वितीय प्रवेश 13 अप्रेल को तथा मोक्षमाला 30 मई को होगी।

✽ **मुंबई-** ओंकारसूरि समुदायवर्ती आचार्य श्री यशोविजय सूरीश्वरजी म.सा. का आगामी वर्ष 2020 के चार्तुमास हेतु जवाहरनगर जैनसंघ, गोरेगांव (वेस्ट) में प्रवेशोत्सव 28 जून रविवार को होगा।

✽ **देपालपुर-** श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. की निश्रा में श्री वीरमणि मन-कमल पार्श्वनाथ जिनमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 7 फरवरी को सोल्लास सम्पन्न हुई। पूज्यश्री की निश्रा में ही 16 फरवरी को इंदौर के समीप राऊ में भी प्रतिष्ठा होगी।

✽ **श्री पार्श्व प्रज्ञालय तीर्थ-** श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्यश्री विश्वकल्याण सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में श्री तीर्थ तलेटी मंदिरजी एवं चौमुखीजी मंदिरजी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 14 फरवरी को होगी।

मुनि श्री मुनिरत्नसागरजी म.सा.को 100 वी ओली का पारणा श्रीभोपावर में शताधिक साधु-साध्वीजी की निश्रा में हुआ

मंदसौर-मालव भूषण आचार्य देवेश पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य मुनिवर श्री मुनिरत्नसागरजी म.सा. का 100 वर्धमान तप की ओलीजी का पारणा 100 से अधिक साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में भोपावर महातीर्थ में 27 फरवरी को हुआ। पूज्यपाद आचार्यदेवेश श्री नरदेवसागर सूरीजी, आचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी आदि आचार्य भगवंतों ने आपश्री का पारणा सम्पन्न करवाई। यहां से आपश्री का विहार पालीताना तीर्थ की ओर हुआ है। मुनिश्री पुनितरत्नसागरजी म.सा.के स्वास्थ्य ठीक नहीं होने से आपश्री पालीताना पधार रहे है। आपका आगामी चार्तुमास भी दादा के दरबार में होने की संभावना है।

मनोरा में भव्य प्रतिष्ठा सम्पन्न

सिरोही- मनोरा में 125 वर्ष प्राचीन जिन मंदिर जिर्णोद्धार करके नूतन जिनालय में श्री संप्रतिकालिन आदिश्वर भगवान आदि-7 एवं गौतम स्वामी देवदेवी ध्वजदंड की भव्य प्रतिष्ठा 7 फरवरी को पू.दीक्षा दानेश्वरी आचार्य श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा. के शिष्य सूरिमंत्र आराधक आचार्य श्री रविरत्न सूरीश्वरजी म.सा., पं.वैराग्यरत्न वि.म. पं.जयेशरत्न वि.म., मुनि श्री जिनेन्द्र रत्न वि.म.आदि 10 साधु-साध्वी पावनकारी निश्रा में भव्य नगर प्रवेश कुंभस्थापना, पाटलापूजन, देव-देवी पूजन एवं बद्धइ शांति स्नात्र पूजा, वरघोड़ा के साथ उल्लास पूर्वक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

श्री पार्श्व भैरवधाम में प्रतिष्ठा

पालीताना- यहां नवनिर्मित श्री पार्श्व भैरवधाम सुशील विहार में परमात्मा श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जिनालय एवं श्री नाकोड़ा भैरवजी के चौमुखी जिनालय की अंजन प्रतिष्ठा का महोत्सव 22 जनवरी से 1 फरवरी तक मनाया गया। परमात्मा के पंच कल्याणक की जोरदार प्रस्तुतियां 27 जनवरी से हुई। अंजन प्रतिष्ठा विधान 31 जनवरी को भव्य रुप से सम्पन्न हुई। पूज्यश्री के आगामी कार्यक्रम निम्न है:-

✽ श्री शंखेश्वर विहार, सुशील वाटिका, पाली में चैत्र मासीय शाश्वती श्री नवपद आयंबिल ओली आराधना चैत्र शुक्ला-7 दिनांक 31 मार्च 2020 मंगलवार को आरंभ होगी तथा ओली समापन चैत्र शुक्ला-15 दिनांक 8 अप्रेल 2020 बुधवार को समापन होगा।

✽ श्री समदड़ी नगर (जुनी वास) श्री कुंथुनाथ जैन मंदिर रजत जयंति महोत्सव 25 से 30 अप्रेल 2020 को होगा।

✽ श्री धनपरा नगर में श्री आदिनाथ मंदिर का अंजनशलाका प्रतिष्ठा 18 से 24 मई 2020 को होगी।

✽ श्री मांडोली नगर में चार्तुमास मंगल प्रवेश 28 जून 2020 को होगा।

दीक्षा-समाचार

✽ चौहटन- जि.बाड़मेर में खरतर गच्छीय आचार्य श्री जिनमणि प्रभसागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में मुमुक्षु नेहा बोथरा एवं मुमुक्षु रेखा सेठिया की भागवती दीक्षा 4 मार्च को होगी।

थाने- मुमुक्षु रित्राही सिद्धि महेन्द्र भाई कुरिया (13) की दीक्षा महोत्सव का आयोजन 4 मार्च को हुआ। दीक्षा आचार्य भगवंत श्री कलाप्रभसागर सूरीजी म.सा. की निश्रा में हुई।

विश्व के प्राचीनतम श्री भोपावर महातीर्थ में अंजन-प्रतिष्ठा वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेवसागरसूरी करवाई

✽बड़ीसंख्या में श्रमण-श्रमणी भगवंतों की निश्रा रही।✽श्री रमणभाई मोंटेक्स के मार्गदर्शन में महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ। ✽ भारत भर के श्री संघों काआगमन।

भोपावर- सागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागरसूरीजी म.सा.के साथ पूज्य श्री नंदीवर्धकसागरसूरीजी आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अत्यन्त व्यवस्था के कारण आपश्री का आगमन श्री भोपावर महातीर्थ की अजंन प्रतिष्ठा में नहीं हो पा रहा है। आपश्री ने प्रतिष्ठा का मुहूर्त प्रदान करते हुए सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीजी म.सा.को प्रतिष्ठा के लिये अधिकृत किया है। प्रतिष्ठा के लिये मुहूर्त 26 फरवरी का प्रदान किया गया था। **इसके साथ ही पूज्यपाद आचार्य देवश्रीअशोक सागरसूरीजी, आचार्य श्री जिनरत्न सागरसूरीजी, आचार्य श्री जितरत्न सागरसूरीजी, आचार्य श्री चन्द्ररत्न सागरसूरीजी, आचार्य श्री मुक्ति सागरजी, आचार्यश्री विश्वरत्न सागर सूरीजी, आचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी, आचार्य श्री सौम्य चंद्रसागरजी आचार्य श्री धैर्यचंद सागर सूरीजी, आचार्य श्री मतिचंद्र सागरसूरीजी म.सा. आदि विशाल शताधिक संख्या में साधु-साध्वी भगवंतोंकी गरिमाय उपस्थिति रहेगी** महोत्सव में प्रतिष्ठा 26 फरवरी को सम्पन्न हुआ। **विश्व के प्राचीनतम श्री भोपावर महातीर्थ में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभ संयोग बन गया है। सागर समुदाय के वर्तमान वयोवृद्ध गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा के द्वारा प्रदान किये गये मुहूर्त के अनुसार 26 फरवरी को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। श्री रमणभाई मुथा मोंटेक्स बालपेन ग्रुप के सर्वेसर्वा एवं भोपावर महातीर्थ के मैनेजिंग ट्रस्टी आदि अथक प्रयास ओर गुरु का आर्शीवाद प्रत्यक्ष दिखाई दिया।** स्मरण रहे भोपावर महातीर्थ की 87 हजार साल पुरानी सोलवें तीर्थंकर परमात्मा श्री शांतिनाथ दादा की प्रतिमा भव्य नूतन जिनप्रसाद में पूज्य मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के द्वारा प्रस्थापित हो गई थी। इसके उपरांत गुरुदेव के अन्य लोक में चले जाने से प्रतिष्ठा का कार्य रुका हुआ था। 27 गोखलों में प्रभु प्रतिमा देवी देवताओं की प्रतिमा भी प्रतिष्ठित की गई। साथ ही पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरी महाराजा के गुरु मंदिर की भी प्रतिष्ठा इस अवसर पर हुई। **रमणभाई अपने व्यापक प्रभाव क्षेत्र का उपयोग करते हुए निरंतर साधु-साध्वी भगवंतों एवं श्री संघों से सम्पर्क करते हुए प्रतिष्ठा महोत्सव को भव्य स्वरुप प्रदान करने के निरंतर प्रयास पूर्णरुप से यादगार रहेगे।** करीब 15 वर्ष में बनकर तैयार हुए इस जिनालय के जीर्णोद्धार का सपना आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी ने देखा था। इसे पूर्ण कराने से ट्रस्ट अध्यक्ष श्री रमणभाई मूथा के अनुसार प्रतिष्ठा महोत्सव के कार्यक्रम की तैयारियों को भव्यरुप दिया गया था। संपूर्ण भारत से जैन श्री संघों का प्रतिष्ठा महोत्सव में पर आगमन हुआ था। इसके मुख्य अतिथि आरएमडी ग्रुप के प्रमुख प्रकाशभाई धारीवाल के साथ सम्पूर्ण जीरावला ट्रस्ट भी रहा।

झाडोली में भव्य दीक्षा सम्पन्न

झाडोली- पू. दीक्षा दानेश्वरी आचार्य श्री गुणरत्न सूरीजी म.सा. के शिष्य पू.सूरिमंत्र आराधक आचार्य श्री रविरत्न सूरीजी म.सा., पं.वैराग्यरत्न वि.म. पं. जयेशरत्न वि.म. आदि की शुभ निश्रा में श्रीमती कमलाबेन सांकलचंदजी के जीवित महोत्सव एवं108 आयंबिल हुए शाहपुर भीवंडी सेवा में स्वर्गवास बने स्व. लकीशकुमार को जाप के साथ श्रद्धांजलि सकल संघ ने अर्पण की। मुमुक्षु जैनीकुमारी की दीक्षा निमित्ते गुरु भगवंतों का नगर प्रवेश सामैया शकस्तव अभिषेक-भव्य वरसीदान का वरघोड़ा प्रभु भक्ति आंगी हुई। गुरु भगवंतों ने रजोहरण अर्पण किया। सकल संघ ने जय नाद किया। साध्वीवेष धारण कर मुमुक्षु का नाम नूतन साध्वी श्री हितलक्षी रेखाश्रीजी बनकर साध्वी श्री विरलरेखा श्रीजी की शिष्या बनी।

मंडार में चार्तुमास

मंडप- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री अभयदेवसूरीजी एवं आचार्यश्री मोक्षरत्नसूरीजी म.सा.का आगामी चार्तुमास मंडार श्री संघ में होगा। चार्तुमास श्री महावीर स्वामी देरासर कंकुतारा आराधना भवन मंडार जिला सिरोही (राज.) में होगा।

श्री नागेश्वर महातीर्थ सरंक्षक श्री दीपचंदजी का अवसान हुआ

✲ जिनेन्द्र भक्ति स्मृति महोत्सव का आयोजन 5-7 मार्च तक हुआ।

श्री नागेश्वर- श्री नागेश्वर महातीर्थ को अपना संपूर्ण जीवन अर्पण करनेवाले श्री दीपचंदजी जैन साहब का 13 फरवरी को अवसान हो गया। आपकी देह का अंतिम संस्कार 14 फरवरी को श्री नागेश्वर तीर्थ में आपके कृषिफार्म पर किया गया। अंतिम संस्कार में हजारों लोगों ने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। अनेक आचार्य भगवंतों साधु-साध्वी भगवंतों ने आपका स्मरण करते हुए स्मरण पत्र प्रेषित किया। आपकी स्मृति में त्रिदिवसीय जिनेन्द्र भक्ति एवं स्मृति महोत्सव का आयोजन 5 से 7 मार्च तक किया गया। कार्यक्रम का पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी म.सा., पूज्य पंन्यास प्रवर श्री प्रसन्नचंद्रसागरजी एवं गणिवर्य श्री आनंदसागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंदों की पावन निश्रा रही। गुरु भगवंतों के साथ अनेक ईष्ट मित्रों और श्रीसंघ के वरिष्ठों ने आपके गुणों को बतलाते हुए स्मरण किया।

मुमुक्षु खुशबू की दीक्षा 11 मार्च को होगी

शिवगंज- पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजयरविशेखरसूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में कुमारी खुशबू की भगवती प्रवज्या 11 मार्च को होगी। 10 मार्च को वर्षीदान वरघोड़ा निकलेगा। दीक्षा निमित्त चैन्नई में भी वर्षीदान वरघोड़ा 11 मार्च को निकला।

सरवानिया में प्रतिष्ठा महोत्सव

सरवानिया महाराज- आचार्य श्री निपुणरत्नसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में यहां श्री केशरियानाथ जिनालय में गोमुख यक्ष और चक्रेश्वरीदेवी प्रतिमा की प्रतिष्ठा का आयोजन 27 एवं 28 फरवरी को किया गया। 27 फरवरी को भव्य रथयात्रा निकाली गई। 28 फरवरी को शुभ लग्नांश वेला में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

श्री चंचलेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ में धर्मशाला आदि उद्घाटन हुआ

चेनपुरा- श्री चंचलेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ में श्री नियकुशलमुनिश्री की निश्रा में विभिन्न भवनों का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। धर्मशाला पारस भवन, संघ भवन, पात्रिक भवन आदि के उद्घाटन का आयोजन 6 फरवरी को किया गया। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा में सम्पन्न आयोजन के साथ भोजनशाला एवं पेढ़ी आफीस के निर्माण के लिये भूमि पूजन खानन् मुर्हूत भी किया गया। 7 फरवरी को समीप ही कघोला में भगवान श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय की प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हुई।

मण्डोदा में जैन मेला लगा

मण्डोदा- सारंगपुर के निकट श्री मण्डोदा पार्श्वनाथ तीर्थ में प्रतिवर्षानुसार 29 फरवरी एवं 1 मार्च को विशाल जैन मेला आयोजित किया गया। रथयात्रा एवं सत्तरभेदी पूजन के साथ दादा गुरुपूजन भी पढ़ाई गई।

श्री गौतम गुण विहार पाली में भव्य प्रतिष्ठोत्सव हुआ

पाली- पाली रत्न दादा साहेब श्री गौतमसागरसूरि स्मृतिधाम के शंखेश्वर श्री गौतम गुण विहार पाली जैन तीर्थे त्रिदिवसीय भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव जिन शासन शिरोमणी, तप प्रभावक, तपचक्र चक्रवर्ती अचल गच्छाधिपति प.पू. आ.भगवंत श्रीमद् गुणोदयसागर सूरीजी म.सा.के आज्ञानुवर्ति मरुधर केसरी परम पूज्य मुनिराज श्री कमलप्रभ सागर जी म.सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणी वृंदों की पावनतम निश्रा में 5 मार्च को बड़े ही उत्साह एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। महोत्सव का मांगलिक कार्यक्रम 2 मार्च को स्नात्र पूजा महाकाली पूजा, उत्तर पारणा, 3 मार्च स्नात्र पूजा, कुंभ-दीपक स्थापना, ज्वारोपण, क्षेत्रपाल स्थापना, लघु नंदावर्त, नवग्रह, दशदिक्पाल, अष्टमंगल पूजन, 4 मार्च को श्री अठारह अभिषेक के साथ 5 मार्च को प्रातः शुभ मुहूर्त में ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रियताम् के साथ प्रभु प्रतिमा, देव-देवी प्रतिमाओं की शुभ प्रतिष्ठा गादिनसीन विधि सम्पन्न हुई।

विनित विहार संकुल का भूमिपूजन एवं शिलान्यास

शंखेश्वर- कविकुल किरीट समुरदायवर्ती प.पू.आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय यशोवर्म सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पावनतम निश्रा में श्री विनीत विहार संकुल का भूमिपूजन एवं शिलान्यास क्रमशः 1 मार्च व 2 मार्च को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक नगरों से सैकड़ों गुरुभक्त भाग लिया।

पंडित महाराज को गच्छाधिपति पद प्रदान किया गया

मुंबई - 30 जनवरी को प.पू.आ.श्री युगभूषण सूरीजी महाराज (पंडित महाराज) को मुनिप्रवर श्री मोहजितविजयजी महाराज के समुदाय के गच्छाधिपति पद से अलंकृत करने के लिये मुंबई में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। 25 जनवरी से 5 फरवरी तक चले इस उत्सव में दीक्षा प्रदान, पद प्रदान, अंजनशलाका, प्राणप्रतिष्ठा सहित अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

मणिलक्ष्मी तीर्थ के संस्थापक दिनेश ठलियावाला और नामी कार्डियोलोजिस्ट डॉ. भास्कर शाह ने दादर ज्ञान मंदिर जैन संघ में पदारोहण पर्व की अधिकारिक घोषणा की। 4 फरवरी को बोरीवली स्थित चीकुवाड़ी मैदान में हुए इस पद प्रदान समारोह में प.पू.आ.श्री अरिहंतसागरसूरीजी महाराज प.पू.आ.श्री कल्पभूषण सूरीजी महाराज, प्रवर्तिनी साध्वीजीश्री कलानिधिश्रीजी सहित मोहजित विजयजी महाराज केसमुदाय और सकल श्रीसंघ की ओर से आचार्य युगभूषणसूरीजी को गच्छाधिपति पद प्रदान किया गया। पदारोपण पर्व के विषय में आचार्यश्री अरिहंतसागर सूरीजी म.सा. ने कहाकि विभिन्न पद प्रदान द्वारा विभिन्न अधिकारों को सौंपने की प्रक्रिया तीर्थकरों के समय से चली आ रही है। महावीर स्वामी द्वारा गणधरों को दिये गये सत्ता एवं अधिकारों की परंपरा हम तक पहुंची है, जिस प्रकार राज्य प्रशासन को सुचारु रुप से चलाने के लिये सत्ता एवं अधिकारों की आवश्यकता है उसी तरह गच्छ एवं संघ के अनुशासन एवं संचालन हेतु भी यह प्रक्रिया अनिवार्य है। आचार्यश्री के तात्विक प्रवचनों के माध्यम से धर्म के सिद्धांतों को युतिपूर्वक समझने के बाद सच्चे सुख की खोज में डॉक्टर, इंजिनियर, सी.ए. आदि विभिन्न पेशों से जुड़े अनेक प्रतिभाशाली युवा समय समय पर दीक्षा मार्ग पर प्रस्थान कर रहे है, संयम स्वीकार का यह दौर इस वर्ष भी जारी है। 30 जनवरी, बसंत पंचमी के दिन बेंगलोर, अहमदाबाद, मुंबई के 8 मुमुक्षुओं ने पूज्यश्री के हाथों से दीक्षा ग्रहण की।

पंडित महाराज ने अपनी विशिष्ट प्रवचनशैली, जैनआगम शास्त्रों के तलस्पर्शी अभ्यास के साथ-साथ वर्तमान दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन, आधुनिक विज्ञान एवं सम-सामायिक विषयों के ज्ञान के कारण बुद्धिजीवी वर्ग के बीच भी एक अनूठी पहचान बनाई है, दीक्षा के पूर्व से ही अनेक जिज्ञासुओं को शास्त्राभ्यास कराते-कराते दीक्षा के बाद वे पंडित महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए, शास्त्र- संशोधन की दिशा में कार्यरत संस्था गीतार्थ गंगा और युवानों के लिए कार्यरत ज्योत संगठन को भी आचार्यश्री युगभूषणसूरीजी का मार्गदर्शन प्राप्त है।

करमदी तीर्थ जिनालय में प्रतिष्ठा

करमदी-परम पूज्य तीर्थोद्धारक शासन प्रभावक बंधुत्रिपुटी आ.भ.श्री अशोक सागरसूरीजी म.सा., प.पू.आ.श्री सौम्यचन्द्रसागरजी म.सा., प.पू.आ.श्री मतिचन्द्रसागरजी म.सा., प.पू.आ.श्री विवेकचंद्रसागरजी म.सा., पू.मुनिश्री धैर्यचन्द्रसागरजी म.सा., पू.सा.श्री गुणज्ञाश्रीजी म.सा., पू.सा.श्री पूर्णयशा श्रीजी म.सा., पू.सा.श्री रेखाश्रीजी म.सा., पू.सा.श्री मुक्तिदर्शनाश्रीजी म.सा., पू.सा.श्री शुचिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. आदि सुविशाल श्रमण-श्रमणीवृंद के सुसान्ध्यि में रत्नपुरी रतलाम करमदी में श्री शत्रुंजय तीर्थ धाम पर 40X100 के विराट रचना के शिखर पर मूलनायक श्री आदिनाथ दादा शिखरबद्ध जिनालय की प्रतिष्ठित हुए। साथ ही प्रथम गणधर श्री शांतिनाथ भगवान, श्री महावीर स्वामी भगवान, 73 इंच की श्री आदिनाथ दादा की कायोत्सर्ग मुद्रा में, नवदूंक, रायपगला,गणधर श्री गौतम स्वामीजी, समवसरण, जय तलेटी आदि जिनबिम्बों की प्राण-प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न हुई। साथ ही तलघर में भगवान आदिनाथ के 13 भव, भरत चक्रवर्ती देव की प्रतिष्ठा हुई। दिनांक 9 फरवरी, माघ सुद-पूनम की भव्य प्रभु एवं गुरु प्रवेश की भव्यतम रथयात्रा मोती पूज्यजी के मंदिर से नगर के विभिन्न मार्गो से होती हुई करमदी तीर्थ पहुंची। भगवान की मूर्तियों का प्रवेश एवं पू. आचार्य भगवंतों का प्रवेश रतलाम की धरा पर एक अमिट छाप छोड़ गया।

श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जिनालय का भव्य प्रतिष्ठोत्सव

बाड़मेर- श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छीय के तत्वावधान में श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जिनालय की भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव एवं मुमुक्षु कुमारी पूजा सखालेचा की भगवती दीक्षा प्रसंग मरुधर मणि खरतरगच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनमणि प्रभसूरीजी म.सा.ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक नूतन आचार्य भगवंत श्री जिनमनोज्ञ सूरीजी म.सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंदों की पावनतम निश्रा में बुधवार 26 फरवरी को बड़े ही उत्साह एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

हमारे तीज-त्यौहार

1- फाल्गुन सुदी-6	रविवार	1/3/2020	चौमासी अट्‌ठाई आरम्भ
2- फाल्गुन सुदी-8	मंगलवार	3/3/2020	रोहिणी
3- फाल्गुन सुदी-12 (13)	शनिवार	7/3/2020	श्री सिद्धाचलजी की छः गांव की यात्रा
4-फाल्गुन सुदी-14	रविवार	8/3/2020	चौमासी चवदस
5- फाल्गुन सुदी-15	सोमवार	9/3/2020	भोमियाजी होली महोत्सव शिखरजी
6- चैत्र वद-3	गुरुवार	12/3/2020	पूज्यपाद गुरुदेव मालवभूषण जैनाचार्य श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का 77 वां जन्मदिवस
7- चैत्र वद-6	शनिवार	14/3/2020	मालवोद्धारक जैनाचार्य पूज्य श्री चन्द्रसागरजी महाराजा का कालधर्म दिवस, मीनार्क मुर्हूत आरंभ
8- चैत्र वद-8	सोमवार	16/3/2020	श्री ऋषभदेव प्रभु का जन्म-दीक्षा कल्याणक वर्षीतप आरम्भ
9- चैत्र वद-9	मंगलवार	17/3/2020	श्री शंखेश्वर आगम मंदिर संस्थापक पूज्यपाद पंन्यास श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. का कालधर्म दिवस
10-चैत्र सुदी-1	बुधवार	25/3/2020	गुड़ी पड़वा विक्रम संवत् 2547 आरंभ
11-चैत्र सुदी-7	मंगलवार	31/3/2020	चैत्र नवपद ओली आराधना आरंभ

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भ- फाल्गुन सुद-11, शुक्रवार, दिनांक- 6/3/2020, समय-10.39 बजे

समाप्तः- फाल्गुन सुद-12,शनिवार, दिनांक- 7/3/2020, समय-09.06 बजे

पंचक :–

आरम्भ-चैत्र वदी-12, शनिवार,
दिनांक- 21/3/2020, समय-06.21 बजे

समाप्तः-चैत्र सुदी-2, गुरुवार,
दिनांक- 26/3/2020, समय-07.17 बजे

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

नूतन साध्वीश्री पर्ववर्षाश्रीजी एवं श्रीध्वनिवर्षाश्रीजी

वर्ष-25 फाल्गुन-चैत्र मार्च 2020 अंक-3 मासिक प्रकाशन

आर.एन.आई. नं. 0046670/29/30/992
पोस्टल मालवा डिवीजन पी.आर.एन. नं. एम.डी. 06/2018-2020

प्राप्त न होने पर कृपया लौटावें —

प्रति,
डॉ. सुभाष जैन (सम्पादक)
आगमोद्धारक
46, सखीपुरा, उज्जैन – 456 001 (म.प्र.)
फोन : 0734 – 2558353, मोबा. 09425091012

बुक-पोस्ट

प्रति,
श्रीमान

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन – संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स
285, एम.जी. रोड, इंदौर से मुद्रित। फोन : 0734 – 2412232, संपादक फोन : 0734 – 2558353, मोबा. 09425091012